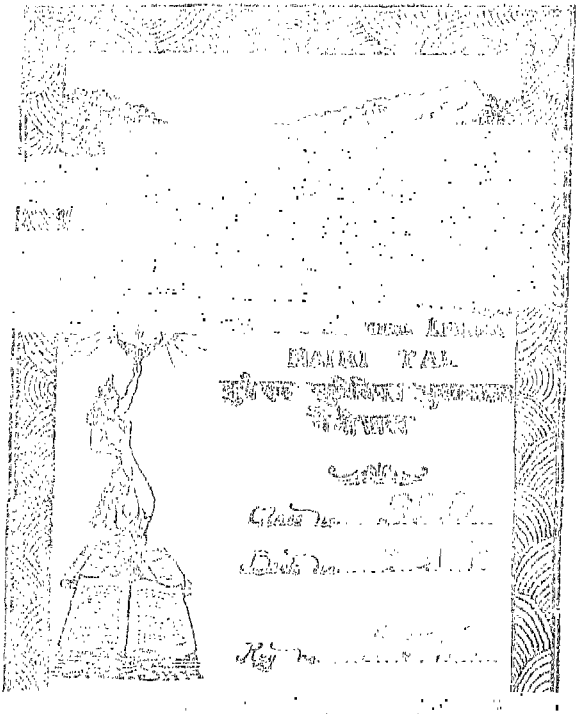

पश्चिमी जगत

के

साहसी बच्चे

मूल लेखक

श्री हरबर्ट ऐन० कैशन

सम्पादक—श्री के० मित्तल

(भूतपूर्व प्रधान सम्पादक 'फिल्म चित्र')

प्रकाशक

साहित्य प्रकाशक मण्डल

नई सड़क, देहली

१९५१ [मूल्य २)

प्रकाशक:—
श्रीमती फूलमती देवी
अध्यक्षा—साहित्य प्रकाशक मण्डल
नई सड़क देहली।

(सर्वाधिकार प्रकाशक के आधीन हैं।)

मुद्रक—
शर्मा प्रिंटिंग प्रेस,
चावड़ी बाज़ार,
दिल्ली।

विषय निर्देश

नवयुवकों के लिए निर्मित किये गये साहित्य का एक विशेष उद्देश्य होना चाहिये—वह ज्ञानवर्धक और सरस तो हे ही, साथ ही स्फूर्ति दायक और उच्चाकाँक्षा की ओर अग्रसर करने वाला होना चाहिये। युवक हृदय और मन कोमल होते हैं, उन पर प्रत्येक भाव का प्रभाव अतिशीघ्र पड़ता है। यदि उच्चाकाँक्षा की ओर अग्रसर करने के भाव की छाप उनके मन पर डाली जायगी तो यह स्वाभाविक है कि उनका जीवन उच्च लक्ष्य की ओर अग्रसर होगा।

युवकों को पढ़ाया जाने वाला साहित्य ज्ञानवर्धक तो होता रहा है, किन्तु अधिकांश साहित्य शुष्क और नीरस होने के कारण युवक हृदय को अपनी ओर आकर्षित नहीं कर पाता। उच्चाकांक्षा की ओर अग्रसर करने वाले स्फूर्तिदायक-साहित्य की कमी तो हमारे स्कूलों में पढ़ाई जाने वाली पाठ्य-पुस्तकों में और भी अधिक है।

अब भारतवर्ष स्वतन्त्र हो चुका है। यों तो हमारे शिक्षा-विशारदों पर यह उत्तरदायित्व सदैव ही रहा है कि ज्ञान उपार्जन कराने के साथ-साथ वह हमारे युवकों को उच्चादर्श की ओर ले जायं, किन्तु भारत के पराधीन रहने के कारण उन्हें "लोमड़ी और खरगोश," "तीतर और बटेर" और "घोड़ा और गधा" तथा ऐसी ही अन्य निरर्थक और व्यर्थ कहानियाँ हमारे युवकों को पढ़ानी पड़ी हैं। स्वतन्त्र भारत में हम उक्त उद्देश्य के अनुसार साहित्य निर्माण करके अपने नवयुवकों को दे सकते

हैं, क्योंकि अब हमारी इस सरल और आत्मिक इच्छा में विघ्न डालने वाला दैत्य चला गया।

उपरोक्त उद्देशों को सम्मुख रखते हुए मैं प्रस्तुत पुस्तक "पच्छिमी जगत के साहसी बच्चे" अपने पाठकों के सामने प्रस्तुत करता हूँ।

पाश्चात्य-जगत के युवकों में जीवन संचार करने के लिए श्री हरबर्ट एन० कैशन ने बहुत-सा साहित्य निर्माण किया है। इन्हीं की लिखी एक पुस्तक "थर्टी ग्रेट लाइन्ज" है। उसमें ३० ऐसे पुरुषों की जीवन गाथायें हैं, जिन्हों ने अत्यन्त साधारण अवस्था में जन्म लेकर, कठिनाइयों को पार करते हुए अपने अध्यवसाय, लग्न और पुरुषार्थ द्वारा महान सांसारिक उन्नति की। उन्हीं ३० में से यह १४ जीवन वृतान्त, जिन्हें मैंने भारतीय युवकों के लिए उपयोगी समझा है, लेकर इस पुस्तक में प्रस्तुत कर रहा हूँ।

यहां यह कहना अनुचित न होगा कि श्री हरबर्ट एन० कैशन केवल लेखक ही नहीं है, उन्होंने व्यापार द्वारा स्वयं अपार धन कमाया, और इसलिए उन्होंने जो कुछ लिखा है वह अपने अनुभवों का निचोड़ है।

मेरा विश्वास है कि हमारे शिक्षा विशारद न केवल अपने शिक्षालयों के पुस्तकालयों में ही इसे स्थान देकर सँतुष्ट हो जायेंगे बल्कि सहायक पुस्तक के रूप में भी इसे स्वीकार करेंगे, ताकि हमारे युवकों के नियमित पठन की यह एक पुस्तक बन जाय।

यदि इसे अपनाया गया तो अन्य ऐसा ही जीवनोपयोगी साहित्य सेवा में प्रस्तुत किया जा सकेगा।

बाजार सीताराम देहली,

श्रावण कृष्ण १, २००८ वि०

विनीत—

के० मित्तल

१

विलियम पिट

यह एक ऐसे राजनैतिक-नेता के जीवन की कथा है, जो सब प्रकार के विरोधों के होते हुये भी पूरे सत्रह वर्ष तक जनता का विश्वास-भाजन बना रहा, जो अपने ही प्रयत्नों से एक साधारण नागरिक की हैसियत से उठ कर एक युग से अधिक समय तक इंगलैंड का प्रधान-मन्त्री रहा। राजनीति के विद्यार्थियों को इसके जीवन से आत्मोन्नति करने की अच्छी शिक्षा मिलेगी।

विलियम पिट

अंग्रेज-जाति को विलियम पिट का सचमुच बहुत कृतज्ञ होना चाहिये। यह वह व्यक्ति था, जिसने अत्यन्त कठिन समय पर अंग्रेजी-राष्ट्र की नाव को सफलता-पूर्वक पार लगाया, जो यदि आज भी जीवित होता तो पूर्ण विश्वास के साथ अंग्रेज-जाति अपने राष्ट्र की बागडोर उसके हाथ में सम्भाल देती।

पिट की "शान्ति, मितव्ययिता और सुधार" की नीति तो अंग्रेजी राजनीति में बहुत ही ख्याति प्राप्त कर चुकी है।

जब अमेरिका और इंगलिस्तान का युद्ध समाप्त हुआ तो यह पिट की ही दूरदर्शिता-पूर्ण नीति का परिणाम था कि जिससे अंग्रेजी-राष्ट्र अपने उस कर्जे को तो चुका ही पाया, जो इस युद्ध के कारण उस पर हो गया था, साथ ही अपने राष्ट्रीय व्यापार-व्यवस्था को पुनर्स्थापित करने में भी सफल हो सका। यथार्थ में पिट बड़ा ही नीतिज्ञ पुरुष था।

विलियम पिट का जन्म सन् १७५६ ई० में हुआ था। वह उन गिने-चुने होनहार बालकों में से था, जिनको बचपन में भी आत्मोत्थान के प्रत्येक समुचित साधन प्राप्त हों। उसका पिता लार्ड चैथम तथा माता ग्रेनविली कुटुम्ब की थी। इसलिये प्रारम्भ

में ही उसका लालन-पालन राजनैतिक क्षमतावान और बुद्धि-विकसित लोगों के ही वातावरण में हुआ था।

कहना चाहिये कि उसे उन्नति करने के सब सांसारिक साधन प्राप्त थे—सिवाय एक साधन के। और वह यह कि उसका स्वास्थ अच्छा नहीं था। सारे जीवन एक प्रकार से वह अपाहिज सा ही रहा। सर-दर्द तो उसे लगभग सदैव ही होता रहता था।

केवल सत्रह साल की अवस्था में ही उसने केम्ब्रिज यूनीवर्सिटी से ग्रेजुऐट होने की पदवी प्राप्त की। वह एक प्रतिभाशाली विद्यार्थी था। उसमें ज्ञान-पिपासा और आलोचना-प्रत्यालोचना की उत्कृष्ठ भावना थी। वह अपने पिता के साथ सामयिक राजनीति पर प्रतिदिन वार्तालाप करता जिससे उसका मस्तिष्क अधिक विकसित तथा तीव्र-गतिशील बन चला। उसका पिता, सब बातों में, उसके सलाहकार की हैसियत से भी कार्य करता था।

आरम्भ से ही पिट को पुस्तकें पढ़ने का बड़ा शौक था। जब वह बीस वर्ष का हुआ तो उसके हाथ एक ऐसी पुस्तक लगी जिसने उसके धर्म और जीवन की सारी रूपरेखा निर्धारित कर दी। कहना चाहिये कि अन्त में यह पुस्तक ही उसका सारा जीवन बन गई। इस पुस्तक का नाम था "राष्ट्रों की सम्पत्ति" (wealth of nations) जो किसी आदम स्मिथ-नामक सज्जन की लिखी हुई थी।

यह पुस्तक वाणिज्य-व्यवसाय यानी अर्थशास्त्र सम्बन्धी थी।

अर्थ-शास्त्र को, सरस-साहित्य नहीं कह सकते। इसमें राष्ट्रों की व्यवसाय-सम्बन्धी नीति, तर्क और आंकड़े आदि होते हैं। उस समय के राजनैतिक नेताओं में भी ऐसा कोई न था जो इस पुस्तक को पढ़ने की क्षमता रखता हो अथवा जो इसे धैर्य के साथ पढ़ सकने का कष्ट सहन करना चाहता हो।

किन्तु पिट ने इसका नियमित-अध्ययन किया। इससे उसे पता लगा कि जनता के स्वतन्त्र-व्यवसाय पर राष्ट्र के नियन्त्रण से कभी-कभी राष्ट्र को कितनी हानि हो जाती है। वह सोचने लगा कि कितना अच्छा होता यदि पिछले सारे प्रधान-मन्त्री-गण उक्त पुस्तक को धैर्य के साथ पढ़ सकने की क्षमता रख पाते।

जैसे ही पिट इस पुस्तक का पूरी तरह अध्ययन कर चुका, उसने एक नीति इसके आधार पर बनाई। आगे चल कर इसी नीति का यह फल हुआ कि इंगलिस्तान दिवालिया-पन की स्थिति से तो बच ही गया, साथ ही संसार के अन्य राष्ट्रों के लिये, ब्रिटेन इस विषय का पथ-प्रदर्शक सा बन गया।

यह नीति क्या थी ?

"राष्ट्र की सम्पत्ति का मितव्ययिता के साथ खर्च किया जाना और जनता के व्यापार-व्यवसाय पर से सरकारी प्रतिबन्ध का उठा लिया जाना।"

एक बार श्री आदम स्मिथ को एक सार्वजनिक भोज दिया गया। किन्तु उन्हें आने में थोड़ी देर हो गई। जब अन्य सब लोग भोज पर बैठ चुके, तब वह आये। जैसे ही उन्होंने

भोज-गृह में प्रवेश किया, सारे उपस्थित लोग उठ खड़े हुये। किन्तु पिट बहुत ही प्रसन्न दिखाई देता था और उसी प्रसन्नता में वह चिल्ला उठा—"हे विद्वान पुरुष, हम सब उस समय तक खड़े ही रहेंगे, जबतक कि आप आसन ग्रहण नहीं कर लेंगे, क्योंकि हम सब तो आपके शिष्य-मात्र हैं।"

बीस वर्ष की अवस्था में ही पिट ने कानून पढ़ना आरम्भ किया। चूंकि उसके पिता की रियासत की आमदनी अधिक नहीं थी, इसलिये उसे अपने पैरों पर ही खड़ा होना पड़ा।

इक्कीस वर्ष की अवस्था में पिट पार्लियामेन्ट के चुनाव में खड़ा हो गया, किन्तु बुरी तरह असफल रहा। किन्तु बाईस वर्ष की अवस्था में लार्ड लान्सडेल की ओर से उसे पार्लियामेन्ट में एक निर्वाचित प्रतिनिधि का स्थान मिल गया।

पार्लियामेन्ट में जो उसका सबसे पहला भाषण हुआ, उसमें उसने मितव्ययिता पर काफी जोर दिया। दूसरे भाषण में उसने स्पष्ट कर दिया कि देश के उन विभागों पर विशेष प्रतिबन्ध रखना अत्यन्त आवश्यक है जिनके पास राष्ट्रीय-सम्पत्ति को खर्च करने का अधिकार है और जो देश के धन का अपव्यय कर रहे हैं।

सन् १७८१ ई० के दुष्काल में पिट ने पार्लियामेंट में प्रवेश किया था। यह वह समय था जब कि लार्ड कार्नवालिस अमरीका-निवासियों द्वारा परास्त किया जा चुका था। उस समय इंगलिस्तान का सितारा उतार पर था। दूसरी ओर जर्मनी का

बादशाह अंग्रेजी-साम्राज्य को छिन्न-भिन्न करने की चेष्टा कर रहा था।

तेईस वर्ष की अवस्था में उसे अर्थ-मन्त्री का पद मिल गया और चौबीस वर्ष की अवस्था में उससे प्रार्थना की गई कि वह एक सम्मिलित पार्टियों की सरकार का प्रधान-मन्त्रित्व ग्रहण करे। उसने इसे अस्वीकार कर दिया। कुछेक महिनों के बाद ही यह सम्मिलित-पार्टियों वाली सरकार टूट गई और बिना किसी प्रतिबन्ध के, प्रत्येक वैधानिक स्वतन्त्रता के साथ पिट प्रधान-मन्त्री बन गया।

शुरू-शुरू में तो पार्लियामेंट के लोग उसकी खिल्ली उड़ाने लगे। मैम्बरों ने उसकी हंसी करते हुए कहा था—इसका प्रधान-मन्त्रित्व एक दिन भी टिक जाय तो गनीमत है। किन्तु वह लगातार सत्रह वर्ष तक प्रधान-मन्त्री बना रहा।

उसने सबसे पहला बिल जो पेश किया वह 'राज्य के दफ्तरों में फैली बुराइयों के सुधार' सम्बन्धी था। उसने व्यय-विभाग की कड़ी आलोचना की। किन्तु पार्लियामेंट में मत लिये जाने पर वह बिल गिर गया। फिर भी उसने त्यागपत्र देना स्वीकार न किया। सिटी आफ लन्दन तथा ईस्ट इन्डिया कम्पनी ने उसका समर्थन किया। वह तबतक अड़ा रहा जबतक कि सारी बृटिश जनता उसका समर्थन करने को खड़ी न हो गई। तब आम-चुनाव हुआ और वह एक भारी बहुमत के साथ फिर चुन लिया गया।

पार्लियामेंट में आजकल की तरह उन दिनों भी एक अनुदार-

दल था। यह दल पिट का विरोधी था। इस दल ने कई बार उसे पदच्युत करने की चेष्टा की, किन्तु वह बराबर अड़ा रहा। उसने जनता से सीधी अपील की, और जनता ने उसे पूरे सत्रह साल तक प्रधान-मंत्री बनाये रक्खा।

जनता इस अनुदार-दल से तंग आ चुकी थी। वह किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश में थी जो राष्ट्र की सम्पति का अपव्यय करने वाले इन अनुदार-दल के व्यक्तियों को सरकार से निकाल-भगाने का साहस रखता हो। जनता को ऐसा व्यक्ति विलियम पिट के रूप में मिला और उसने इंगलिस्तान को बरबाद होने से बचा लिया।

पिट जब पहले-पहल प्रधान-मंत्री बना तब उसकी अवस्था २४ वर्ष की थी। शरीर उसका लम्बा तथा चहरा गम्भीर और सख्त था। किन्तु यह गंभीरता और सख्ती अपने मित्रों के साथ उसने कभी नहीं बरती। उसकी आंखों में सच्चाई की झलक थी किन्तु उसकी आँखें थीं बड़ी तेज और अन्तरतम तक चुभती हुईं! उसकी नाक बड़े ही अजीब-से ढंग से ऊपर को उभड़ी हुई थी और बादशाह तीसरे जार्ज के शब्दों में उसका चहरा "D डी" अक्षर की तरह लम्बा और हठी होने का चिन्ह था।

उसके विरोधी दल में फाक्स-नामक एक व्यक्ति था जो अपनी तर्क शक्ति के लिये पार्लियामेन्ट के इतिहास में प्रसिद्ध है; आइरलैन्ड के प्रसिद्ध वक्ता शैरीडन और बर्क, तथा विख्यात

राजनीतिज्ञ, ग्रेनविल, शैलबर्न तथा लार्ड नार्थ यह सब इसके विरोधी दल में सम्मिलित थे।

किन्तु पिट ने इन सब का मुकाबला किया। यहां तक कि समय-समय पर उसे बादशाह से भी झगड़ना पड़ा। उसने अपनी जो नीति निर्धारित की, उसे अन्त तक निभाया। उसने राष्ट्र का कर्जा चुकाने के लिये एक 'बचत-कोष' निर्मित किया और आमोद-प्रमोद की वस्तुओं, जैसे रेशम, घोड़े, सोना तथा चांदी आदि पर भारी-भारी कर लगा दिये।

व्यय-विभाग के लिये, एक प्रकार से, उसने खजाने पर ताला ही डाल दिया। उसका कथन था कि हमें सिर्फ उतना ही खर्च करना चाहिये, जितना कि हम आसानी से सहन कर सकें। हमारा सब से पहला कर्त्तव्य है कि हम राष्ट्र का सारा ऋण चुका कर अन्य देशों पर अपनी साख जमा दें ताकि हमारा व्यापार-व्यवसाय पुनर्जीवित हो सके।

किन्तु अपने घरेलू खर्चे का प्रबन्ध करने में पिट पूर्ण असफल रहा। जीवन भर वह कर्जे में डूबा रहा। उसकी मृत्यु के समय लगभग चालीस हजार पौंड का कर्जा था जिसे सरकारी खजाने से चुकाने के लिये पार्लियामेन्ट ने स्वीकृति दे दी।

उसे न रुपये-पैसे की लालसा थी और न किसी उपाधि की। जीवन भर वह "मिस्टर"* पिट ही बना रहा। एक बार लन्दन के सौदागरों का एक प्रतिनिधि-दल उससे मिला और उसे एक

* Sir या अन्य कोई उपाधि लेने की चेष्टा न की। सम्पादक।

लाख पौंड भेंट करने चाहे, किन्तु उसने लेने से इन्कार कर दिया।

उसका एक मात्र उद्देश अपने देश की सेवा करना था, अपनी सेवा करना नहीं। वह राष्ट्र-निर्माता था, राष्ट्र को बर्बाद करने वाला नहीं। वह जनता के धन की रक्षा कर के जनता का नेता बना, जनता के धन को खर्च कर के नहीं।

जहां तक उससे बन पड़ा, उसने फ्रांसीसी क्रान्ति के बवंडर से इंगलिस्तान को दूर रक्खा। उसने पार्लियामेंट का भी सुधार किया। उसने राजसत्तावादियों को पीछे ढकेल दिया और प्रजा सत्तावाद का बोलबाला रक्खा। उसने व्यवसाइयों को स्वतंत्र कर दिया। सन् १७९२ ई० में उसने अपना प्रसिद्ध ऐतिहासिक व्याख्यान गुलाम-प्रथा के विरोध में दिया और इस प्रथा को मिटाकर ही दम लिया।

उसने आइरलैन्ड और रूस की भी सहायता करने की कोशिश की, किन्तु अन्य लोगों की तरह उसे भी इसके लिये बुराई ही हाथ लगी। अन्त में उसे नैपोलियन से भी युद्ध करना पड़ा, हालांकि वह उस समय तक इस युद्ध से बचता रहा, जब तक कि इंगलिस्तान की आर्थिक स्थिति और साख उसने अच्छी न बना दी। उसने पहले से ही थके हुये और घायल इंगलिस्तान पर नई लड़ाइयों और नये-नये करों का बोझा नहीं डाला। उसकी इसी नीति का परिणाम था कि छः वर्षों में ही बृटेन का सामुद्रिक-व्यवसाय दो गुना हो गया।

आखिर कार उसे युद्ध में उतरना ही पड़ा। राज्य घराने के अयोग्य व्यक्तियों द्वारा संचालित होने के कारण उसकी सेनाएं

अधिकतर हारती ही रहीं। किन्तु उसका जहाजी बेड़ा जीतता ही रहा, क्योंकि इसका संचालन प्रसिद्ध कप्तान नैल्सन के हाथों में था। यह नैल्सन ही था, जिसकी कर्त्तव्य परायणता पिट को वर्षों तक सान्त्वना देती रही।

युद्ध-व्यय के लिए धन इकट्ठा करने को पिट ने धनाढ्य और दानी लोगों से चन्दा मांगा। चन्दा उसे मिल भी अच्छी तादाद में गया। उसने और उसके साथी मंत्रियों ने अपने वेतन का पाँचवा भाग युद्ध कोष में दान कर दिया। वे लोग आज कल के वेतन भोगी मंत्रियों की अपेक्षा अधिक आदर्श वादी थे।

नैपोलियन की विजय पर विजय ने पिट को अत्यन्त खिन्न कर दिया। उसका स्वास्थ गिरने लगा। आस्टरलिट की हार तथा नैल्सन की मृत्यु पिट की सहन-शक्ति से बाहर की चीज़ थी। सन् १८०६ ई० में आखिरकार वह इस लोक से चल बसा। उसके अन्तिम शब्द यह थे:—"आह मेरे प्यारे देश! मैं तुझे कैसे छोड़ूं।"

पिट जीवन-भर क्वारा रहा। एक बार उसने एक लड़की से प्रेम किया था, किन्तु वह प्रेम असफल रहा। जीवन-भर उसे एक ही धुन थी—अपने देश की उन्नति करना। वह ईमान्दार, चुस्त, योग्य और साहसी था। अपने देश-वासियों की दृष्टि में वह एक ऐसा मल्लाह था, जिसने तमाम आँधी तूफानों के होते हुए भी अपनी देश रूपी नाव को सफलता पूर्वक पार लगाया। बृटिश-जनताकी अब भी यह कामना है कि वह परमदयालु परमेश्वर उसे दस वर्ष के लिये एक बार फिर वापिस यहां भेज दे।

९

सर इज़ाक न्यूटन

यह एक ऐसे महान वैज्ञानिक की जीवन गाथा है जो एक अत्यन्त ही दरिद्र घराने में, पितृहीन अवस्था में पैदा हुआ। जिसने अपने ही पुरुषार्थ से अपनी प्रतिभा को ऐसा विकसित किया कि चिरकाल तक वैज्ञानिक-जगत उसका ऋणी रहेगा। आत्मोन्नति करने वाले युवकों को इसके जीवन से आशा और उत्साह दोनों ही प्राप्त होंगे।

इज़ाक न्यूटन

यदि भूत और वर्तमान की सारी अंग्रेज-जाति को एक लाइन में खड़ा कर दिया जाय तो बहुत संभव है कि सर इज़ाक न्यूटन को सरताज करार दिया जाय।

यों तो इंगलैंड में एक-से-एक बढ़ कर विचारवान व्यक्ति पैदा हुये हैं, किन्तु न्यूटन-जैसा कोई नहीं पैदा हुआ। सारी मनुष्य जाति में वह सबसे पहला व्यक्ति था जिसने आकाश में चमकने वाले सितारों के रहस्य का उद्घाटन किया। वही सब से पहिला व्यक्ति था, जिसने "पृथ्वी की आकर्षण शक्ति" के भेद का आविष्कार किया।

जब कि आप और हम दिन-रात उपयोग में आनेवाली तथा छोटी-छोटी वस्तुओं का विचार करते रहते हैं—यथा किराया देना, बर्तन लेना, लाभ प्राप्त करना तथा मूलधन का ठीक-ठीक वितरण करना आदि—उस समय न्यूटन सारे ब्रह्माण्ड का विचार करता रहता था। साधारणतया उसकी महान कृति 'मूल सिद्धान्त' (The principia) नामक मनुष्य बुद्धि द्वारा निर्मित ग्रन्थों में सबसे महान पुस्तक समझी जाती है।

ऐसा मालूम होता है कि अधिकांश महान आत्मायें अत्यन्त ही साधारण जगहों पर जन्म लेती हैं, न्यूटन भी इस बारे में अपवाद नहीं था। उसका जन्म लिन्कनशायर जिले के एक छोटे से खेड़े में सन् १६४२ ई० में हुआ। उसके पिता की मृत्यु विवाह के थोड़े ही दिन बाद हो गई थी, इसलिये न्यूटन पितृहीन अवस्था में ही संसार में आया। उस समय उसकी माता की आमदनी सिर्फ ८० पौंड वार्षिक थी।

लड़कपन के न्यूटन को प्रतिभाशाली विद्यार्थी नहीं कहा जा सकता। शिक्षक द्वारा सिखाये हुये विषय में न्यूटन का मन नहीं लगता था। उसका पूरा ध्यान मशीन-सम्बन्धी आविष्कारों में लगा रहता था। उसने बचपन में ही एक पवन-चक्की, एक जलघड़ी तथा एक ऐसी नये प्रकार की गाड़ी आविष्कृत कर डाली जो गाड़ी में बैठने वाले द्वारा ही चलाई जा सकती थी।

कागज की पतंग उड़ाने का न्यूटन को बड़ा शौक था। उसने कागज की कुछ लालटेंने भी बनाईं। इन लालटेनों को अपनी पतंगों के पुछल्ले में वह लटका देता था। रात में वह उन पतंगों को उड़ाता। वहां के देहाती लोग समझते कि यह कोई 'स्वर्गीय सितारें' हैं।

जब वह बारह वर्ष का लड़का ही था, तभी से उसे मशीन संबन्धी ज्ञान और भूगोल-विद्या सम्बन्धी बातों में आनन्द आने लगा था। उसने एक सूर्य घड़ी बनाई तथा तारागणों का अध्ययन किया। आकाश की कारीगरी पर विशेष रूप से उसका ध्यान जाने लगा।

जब वह पन्द्रह वर्ष का हुआ तो उसे खेत पर गाय-बकरी चराने के काम पर लगा दिया गया, किन्तु चरवाहे के रूप में न्यूटन बिल्कुल ही बेकार साबित हुआ । वह ज्योतिष-सम्बन्धी कोई पुस्तक लेकर किसी झाड़ी में जा बैठता और इसे पढ़ने में लीन हो जाता, जब कि भेड़ें इधर-उधर मारी-मारी फिरतीं और अन्य पशु धान के खेतों को खाने लगते ।

सौभाग्य से उसकी माता ने उसके अंदर दबी हुई प्रतिभा को पहिचान लिया । उसने उसे चरवाहे के कार्य से छुट्टी दी और फिर पढ़ने बिठला दिया ।

जब वह अठारह वर्ष का हुआ तो उसने केम्ब्रिज विश्वविद्यालय के ट्रिनिटी कालिज में प्रवेश किया । नौ वर्ष के बाद इसी केम्ब्रिज में वह गणित का प्रोफेसर हो गया । कहना चाहिये कि एक प्रकार से उसका सारा जीवन ही, बाद में कैम्ब्रिज से गुथा हुआ रहा ।

चौबीस वर्ष की अवस्था में उसने 'प्रकाश के रूपों' (Phenomena of Light) का अध्ययन आरम्भ कर दिया । उसे पता लगा कि प्रकाश अर्थात् रोशनी भिन्न-भिन्न प्रकार की कई किरणों के मिश्रण से बनी है । उसने यह भी देखा कि रोशनी का विश्लेषण करने पर लाल नारंगी, पीली तथा अन्य रंगों की किरणें एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न-भिन्न हैं ।

इसके बाद उसने दूरबीन का आविष्कार किया । यह दूरबीन अपने प्रकार की सबसे पहली दूरबीन थी । उसकी यह सबसे पहली दूरबीन इंगलैंड के प्रसिद्ध 'रौयल सोसाइटी' के

अजायब घर में रक्खी है, जिस पर लिखा है—"सर इज़ाक न्यूटन द्वारा आविष्कृत की हुई तथा उसके, अपने हाथों द्वारा बनाई हुई, १६७१ ई० ।"

उस समय खगोल-विद्या-सम्बन्धी ज्ञान लोगों को बहुत ही थोड़ा था। उससे पहिले की दूरबीनें छोटे-से खिलौना-मात्र थे। न्यूटन ने जो दूरबीन बनाई वह छः इंच लम्बी थी। न्यूटन के जमाने में आजकल के सौ-सौ टन भारी दूरबीनों की कोई शख्स कल्पना भी नहीं कर सकता था।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक गैलीलियो न्यूटन के जन्म लेने से एक वर्ष पहिले ही मर चुका था। न्यूटन के जन्म से ४२ वर्ष पूर्व रोम में ब्रूनो नामक वैज्ञानिक को सिर्फ इसी लिये जला कर मार डाला गया था, चूंकि वह इस सिद्धान्त का प्रतिपादन करता था कि 'पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती रहती है।' उस समय तक आम तौर से यही माना जाता था कि सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता है।

हां, तो न्यूटन के समय में खगोल-विद्या बिल्कुल बचपन की ही अवस्था में थी, जब कि ऐसी बातें सोचना तक खतरनाक समझा जाता था।

किन्तु न्यूटन इंगलिस्तान में रहता था, जहां कि किसी भी विज्ञान पर कोई रोक-थाम नहीं थी। यह ठीक है कि उसके निकाले सिद्धान्तों पर काफी टीका-टिप्पणी हुई, किन्तु उस पर शारीरिक हमला होनेका कोई भय न था।

चौबीस वर्ष की अवस्था में पहिले-पहिल उसके मस्तिष्क में पृथ्वी की आकर्षण-शक्ति का विचार आया। वह अपने जन्म-

स्थान के छोटे से गांव में अपनी माता की बगीची में अकेला बैठा हुआ था कि उसने एक सेव का फल वृक्ष से गिरता हुआ देखा।

"यह फल नीचे क्यों गिरा? हमारी पृथ्वी जितनी बड़ी है यदि उससे दुगुनी बड़ी होती तो इस फल का उस पर कितना वजन होता? यदि यही सेव पृथ्वी और सूर्य के ठीक बीचो-बीच होता तो उस अवस्था में इसकी क्या दशा होती?"—यह प्रश्न थे जो उसने अपने-आप से उस समय पूछे। इन प्रश्नों को हल करने में उसने अपने गणित-शास्त्र-सम्बंधी ज्ञान की पूरी शक्ति लगा दी।

उसने इस समस्या का बीस वर्ष तक अध्ययन किया। अंत में उसे पता लगा कि पृथ्वी की आकर्षण-शक्ति और केन्द्र से बहने वाली शक्ति एक दूसरे का सन्तुलन करती रहती हैं। आखिरकार उसे आकाश की व्यवस्था के भेद का पता लग गया।

सन् १६८७ ई० में, जब कि उसकी अवस्था ४५ वर्ष की थी, उसने अपना महान ग्रन्थ 'मूल सिद्धांत (The Principia) प्रकाशित कराया। इस ग्रंथ ने सर्वत्र-व्यापक आकर्षण शक्ति के सिद्धांत की घोषणा की।

वह सिद्धांत यह है कि "ब्रह्माण्ड में पदार्थ का प्रत्येक अणु दूसरे पदार्थ के प्रत्येक अणु को अपनी ओर खींचता रहता है, और उन पदार्थों में आपस में जितना अंतर बढ़ता जाता है उसी अनुपात से उनके आपसी खिंचाव की शक्ति भी कम होती जाती है।"

न्यूटन ने पता लगाया कि पत्थर पृथ्वी की ओर और पृथ्वी पत्थर की ओर सरकती है। सूर्य पृथ्वी को और पृथ्वी सूर्य को अपनी ओर खींचती है। प्रत्येक परमाणु एक-दूसरे को खींचता रहता है।

उसने यह भी अन्वेषित किया कि जिसे हम बोझा या वजन कहते हैं, वह यथार्थ में एक धोखा है। उदाहरणार्थ, एक व्यक्ति जिसका वज़न पृथ्वी पर १ मन है, यदि वही व्यक्ति सूर्य पर चला जाय तो उसका वज़न वहां पर १३ मन होगा।

न्यूटन ने कभी भी अपने आविष्कार अथवा निर्धारित सिद्धांत गुप्त नहीं रक्खे। वह बिना किसी भेद-भाव के उन्हें, अपने मित्रों को बतला देता था। इसका परिणाम यह हुआ कि कई मामलों में उसके किये हुये आविष्कारों को दूसरे व्यक्ति अपना आविष्कार कहने लगे।

सबसे अधिक कष्ट न्यूटन को तब हुआ जब कि वह 'आकाश की प्रकृति (Nature of Light) के विषय पर एक पुस्तक लिखना समाप्त कर चुका। यह उसके बीस वर्ष के परिश्रम से तैयार हुई थी। उन्हीं दिनों में एक दिन जब वह कहीं अपने कमरे से बाहर गया हुआ था, उसके कुत्ते ने एक जलती हुई मोमबत्ती उस हस्तलिखित पुस्तक पर गिरा दी, जिससे वह जल कर राख हो गई।

कहा जाता है कि जब न्यूटन ने कमरे में लौटकर देखा कि उसकी बीस वर्ष की महनत का खून हो गया, तो उसने सिर्फ इतना ही कहा—ना समझ कुत्ते, तू नहीं जानता कि तूने क्या कर दिया।

अपने जीवन-काल के अंतिम दिनों में न्यूटन ने जन-सेवा को अपनाया। वह पार्लियामेंट का एक सदस्य हो गया। वह टकसाल का अध्यक्ष भी बना। महारानी अने ने उसे 'सर' की उपाधि भी दी। सब से बड़ी बात यह कि वह रॉयल सोसायटी का प्रधान भी बन गया।

सन् १७२७ ई० में, ८५ वर्ष की अवस्था में, न्यूटन का देहांत हो गया। उसका मृत-शरीर वैस्ट मिन्स्टर अबे नामक स्थान में ले जाया गया और वह वहां गिरजाघर की गायनशाला के मुख्य द्वार के समीप बांये हाथ की ओर दफ़नाया हुआ है।

उसका सौभाग्य था कि मरते समय वह धन और सम्मान सभी प्रकार से सुखी था। उस समय उसकी निजी जायदाद की कीमत लगभग ३२००० पौंड थी, और पिछली शताब्दियों से उसका यश दिन-प्रतिदिन बढ़ता हो रहा है।

वह एक संकोची, ईर्ष्या-द्वेष रहित तथा मिलनसार व्यक्ति था। आडम्बर उसमें लेश-मात्र भी न था। वह मनुष्यों और सिद्धांतों—दोनों को ही प्रेम करता था।

अपनी मृत्यु से कुछ ही समय पूर्व उसने भावुकता से भरे हुये स्मरणीय यह शब्द कहे थे—"मुझे मालूम नहीं कि दुनिया वाले मुझे क्या समझेंगे, किन्तु मैं तो अपने आप को उस लड़के के समान समझता हूं जो समुद्र के किनारे पर खेल रहा हो, जिसके हाथ खेलते-खेलते संयोग से कभी कोई चिकना-सा पत्थर अथवा कोई सुंदर-सा लकड़ी का टुकड़ा लग जाता हो, जब कि अटल सत्य का एक महासागर अपने अमूल्य रत्नों को गर्भ में धारण किये हुये अभेद्य रूप से उसके सामने लहलहाता हुआ बह रहा हो।"

३

मिचल फराडे

"विद्युत विज्ञान के पिता" मिचल एक अत्यन्त निर्धन लुहार की कई सन्तानों में से एक थे। इस दर्जे की निर्धनता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि इनका पिता बड़ी कठिनाई से एक घुड़शाला के ऊपर के एक छोटे से कमरे को किराये पर ले सका था। ऐसी दशा में मिचल फराडे को अक्षर-ज्ञान सम्बन्धी शिक्षा लगभग नहीं के बराबर ही मिल पाई। किन्तु अपने पुरुषार्थ से आत्म-शिक्षा द्वारा यही बालक विद्युत-विज्ञान का महान ज्ञाता बना, जिसका लिखा हुआ इस विषय का ग्रन्थ वैज्ञानिक-जगत में अब भी मौलिक और अद्वितीय माना जाता है। निर्धन, किन्तु उत्साही, युवकों के लिये मिचल फराडे की जीवनगाथा अत्यन्त स्फूर्तिदायक सिद्ध होगी।

मिचल फराडे

सन् १७९६ ई० के लन्दन को शहर नहीं कहा जा सकता। नाहीं वार मौन्डसी को उस समय के लन्दन में कोई विख्यात मोहल्ला कह सकते हैं। वारमौन्डसी की जैकब स्ट्रीट भी कोई गली में गली नहीं थी! और जैकब-स्ट्रीट की वर्तमान घुड़शाला को तो उस समय बहुत से लोग जानते तक न थे।

इसी घुड़शाला के ऊपर थोड़े से कमरे किराये के लिये खाली थे, जिनको यार्कशायर के एक लुहार ने किराये पर लिया हुआ था।

इस लुहार के ४ छोटे-छोटे बच्चे थे। इनमें से एक छोटा सा ५ वर्ष का बालक था जिसका नाम कि मिचल था। उसके बाप का नाम फराडे था।

इस स्थिति को जीवन का सुन्दर आरम्भ नहीं कहा जा सकता। किन्तु वही छोटा सा मिचल आगे चल कर "विद्युत विज्ञान का पिता" कहलाने का अधिकारी हुआ।

वह संसार के अत्यन्त गम्भीर-विचारशील पुरुषों में से एक पुरुष बना—कहना होगा कि कई बातों में वह अपने समय का सब से बड़ा वैज्ञानिक था।

इतना ही नहीं, इस से भी बड़ी बात यह है कि इतना होने पर भी वह अत्यन्त ही सादा-स्वभाव का, बड़ा ही सज्जन और नम्र, तथा मनुष्य जाति में एक बहुत ही प्रिय शील स्वभाव का पुरुष था।

इसमें सन्देह नहीं कि स्वर्ग के किसी शान्त-से कोने में समान-प्रतिभा की आत्माओं का एक छोटा-सा समूह बैठा हुआ विश्व-नियमों की चर्चा कर रहा होगा। न्यूटन, फ्रांकलिन, डारविन, वालेस, तक्सले और पास्चवर—यह सब तो उस समूह में होंगे ही, किन्तु इन सब के केन्द्र में, हमारा विश्वास है कि फरोड अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व के साथ बैठा होगा, जो कह रहा होगा कि छोटे-छोटे बच्चों को वैज्ञानिक तथ्य किस प्रकार सिखलाये जाते हैं।

किन्तु उसके जीवन की आरम्भिक बातों की ओर आइये। मिचल फराडे का जन्म जैसी परिस्थितियों में हुआ उन्हें अत्यन्त निर्धनता की ही परिस्थितियां कहना पड़ेगा। कई बार, खाद्य-सामिग्री का मूल्य अधिक होने और लोहारों की मजदूरी कम होने के कारण उसे आधा-पेट भोजन पर ही सब्र करना पड़ता था। उसकी माता सप्ताह में एक बार थोड़ी सी मिठाई देती थी—ऐसी दयनीय उसकी परिस्थिति थी।

उसको पाठशाला की शिक्षा बिल्कुल नहीं के ही बराबर मिल सकी। चलने-फिरने योग्य होते ही उसे उदर-पोषण के लिये पैसे कमाने की चिन्ता पड़ गई!

यह एक ध्यान देने योग्य सच्चाई है कि फराडे ने, जो कि इंगलिस्तान के सर्वोत्तम सुसंस्कृतिक व्यक्तियों में से एक हुआ है, उस समय तक आक्सफार्ड की शकल तक नहीं देखी थी, जब तक कि वह इसके प्रोफेसर लोगों को शिक्षा देने के लिये वहां न गया !

तेरह वर्ष की अवस्था में बालक मिचल के भाग्य कुछ उदय हुये। बेकर स्ट्रीट के पास एक पुस्तक-विक्रेता की दुकान में उसे एक चपरासी का काम मिल गया। पहिले-पहल यहीं पर, एक तरह से, उसे अखबार और पुस्तकें देखने का अवसर मिला !

चौदह वर्ष की अवस्था में एक दिन उसके हाथ रसायन-शास्त्र सम्बन्धी एक छोटी सी पुस्तक लग गई। बस उसी क्षण से उसका भावी-जीवन आरम्भ हो गया।

शाम के समय, अपने काम से छुट्टी पाकर वह वैज्ञानिक प्रयोग करने लगा। उन दिनों वह उसी पुस्तक-विक्रेता के घर में एक छोटे-से शयनागार में रहता था। उस घर की रसोई-दारनी एक दयावान स्त्री थी, जो उसके इन प्रयोगों के लिये अपने भंडार से कुछ सामान दे देती थी।

इक्कीस वर्ष की अवस्था में उसे एक ऐसी सौगात मिली जो उसके लिये इंगलैन्ड की राष्ट्रीय बैंक की तमाम सम्पत्ति से भी अधिक मूल्यवान थी। यह सौगात एक टिकट थी, जो कि उसे उसके एक ग्राहक ने दी और जिसके द्वारा वह सर हैम्फरी डैवी के व्याख्यानों को सुन सकता था। सर हैम्फरी डैवी उस समय में सब से बड़ा रसायनिक माना जाता है।

अब से एक पीले चहरे वाला, लम्बा, किन्तु बड़ी बड़ी और तीव्र दृष्टि वाला व्यक्ति सर हैम्फरी डैवी के कारखानों में दिखाई पड़ने लगा। उपस्थित श्रोताओं में वह, अवस्था में सब से छोटा था। उसने उन व्याख्यानों का संक्षिप्त सार ग्रहण कर और उनका परिवर्द्धन करके एक सचित्र पुस्तक तैयार कर डाली।

वहाँ आकर उसने भाग्य के भरोसे बैठना उचित नहीं समझा। उसने सर हैम्फरी डैवी को अपनी उक्त पुस्तक भेज कर एक प्रार्थना पत्र लिखा कि वह उसे 'विज्ञान के विद्यार्थी' की हैसियत से अपने पास काम करने की अनुमति दें।

सर हैम्फरी डैवी ने उसे बुला भेजा, उसकी प्रतिभा को वह ताड़ गये और रायल इन्सटीट्यूट की विज्ञानशाला में एक सहायक का स्थान उसे दिला दिया। अतः उसे २५ शिलिंग प्रति सप्ताह का वेतन वहां से मिलने लगा।

ख्याति लाभ करने की, इस बार उसे सीढ़ी मिल गई और दृढ़ता के साथ इस सीढ़ी पर चढ़ता हुआ वह अंत में इसकी चोटी पर पहुंच गया।

अब उसने सब से पहला काम यह किया कि जब सर हैम्फरी दो वर्ष तक सारे यौरुप का भ्रमण करने गये तो उसने भी उनके साथ रहने का प्रबंध कर लिया। इस प्रकार उसे पैरिस, जिनोआ, तथा रोम आदि के बड़े-बड़े वैज्ञानिकों से मिलने का संयोग मिल गया। पच्चीस वर्ष की अवस्था में उसने विज्ञान का अपना सब से पहिला लेख प्रकाशित कराया। उसके पश्चात् २६

वर्ष की अवस्था में उसने एक महान अविष्कार किया "प्रत्येक चुम्बक पत्थर विद्युत धारा के चारों ओर लगातार चक्कर लगायेगा।" इस प्रकार बिजली की मोटर का जन्म हुआ जिसके द्वारा आज हमारी मोटरें, ट्रामगाड़ी तथा अन्य मशीनें चलती हैं। फैराडे का यह आविष्कार आज से ठीक डेढ़ सौ वर्ष पहिले हुआ था।

आगामी वर्ष वह एक लड़की के प्रेम पास में बंध गया और विवाह कर लिया। जिस लड़की से यह सम्बंध किया था बहुत सादा मिजाज थी और उसका परिचय फराडे से उस छोटे गिरजा में हुआ था जिस में कि वह प्रति रवि वार को प्रार्थना क जाता था। लड़की का नाम सारा-बरनार्ड था।

४६ वर्ष तक इनका जीवन आनन्द-पूर्वक बीता किन्तु संतान कोई न हुई।

३२ वर्ष की अवस्था में ही उसकी गणना संसार के अग्र-गन्य वैज्ञानिकों में होने लगी थी। वह रायल सोसाइटी का मेंम्बर था तथा रायल इंस्टीटयूशन का डाईरेक्टर—वही रायल इंस्टीटयूशन जहां कि वह एक दिन २५ शिलिंग सप्ताह का एक साधारण नौकर था।

अब उसे धनाड्य होने का एक अवसर मिला। रसायनिक की हैसियत से कई व्यवसायीयों ने उससे सहायता की याचना की और इसके बदले में बड़ी २ रकमें भेंट करनी चाहीं। किंतु उसने और उसकी गृहणी ने इस विषय पर बार्तालाप करके यही

निर्णय किया कि धनवान होने के लिये उसके जीवन में अब समय बाकी नहीं है।

अब इसने अपने जीवन में एक तेईस वर्षीय कार्य प्रारम्भ किया। यह कार्य उस महान ग्रंथ का निर्माण करना था जो आज विद्युत जगत में एक गर्व की चीज समझी जाती है। उसने बिजली के सम्बंध में खोज-पूर्ण प्रयोग करने आरंभ कर दिये और विद्युत विज्ञान को उसके उषा-काल से पूर्ण उजाले में ले आया। यह ग्रंथ आज से एक सौ वर्ष पहिले लिखा गया और कई दशाओं में आजतक विज्ञान इसमें कोई तबदीली या उन्नति नहीं कर पाया है ।

फैराडे वैज्ञानिक होने के साथ-साथ एक दार्शनिक भी था। उसके जीवन की एक कामना यह भी थी कि वह संसार को दिखला दे कि यह ब्रह्माण्ड एक और केवल एक ही शक्ति द्वारा निर्मित है, न कि ७० या ८० भिन्न-भिन्न अणुओं द्वारा।

उसका मस्तिष्क सच्चाई की पूरी परिधि तक पहुँच गया था। घटनाओं से सिद्धांत और सिद्धांतों से व्यावहारिक रूप देने का सीढ़ी तक चढ़ने का कार्य उसने कर डाला। उसे अनुभव हुआ कि यह सारा जगत मनुष्य, पशु, पक्षी, वनस्पति सब एक ही शरीर के भिन्न-भिन्न अंग हैं।

वह एक ऐसा सादा और सज्जन व्यक्ति था कि जहां भी कहीं वह जाता बच्चे तक उसके चारों ओर एकत्रित हो जाते। किंतु साथ ही ऐसे दृढ़ चरित्र का था कि उसने लार्ड मेलबर्न की

बाध्य कर दिया कि वह उससे (फराडे से) लिखित क्षमा याचना करे। यह लार्ड मेलबर्न इंगलिस्तान का एक मूर्ख प्रधान-मंत्री था।

फेराडे और उसकी पत्नी ने अपने जीवन के अंतिम दिन हेम्टन कोर्ट के पास एक साधारण-सी कुटिया में व्यतीत किये। यह कुटिया महारानी विक्टोरिया ने उसको भेंट कर दी थी। इस कुटिया में बैठ कर वह विज्ञान की कहानियां उन बच्चों को सुनाता जो उसके आस-पास खेला करते थे और साथ ही उन महा वैज्ञानिकों को भी सुनाता जो संसार के प्रत्येक भाग से उसका उपदेश ग्रहण करने आते थे।

उसका जीवन एक सुखी जीवन कहा जा सकता है। उसने वही किया जो वह करना चाहता था। जीवन के आरम्भ-काल में जो स्वप्न उसने अपने भविष्य के संबंध में देखे थे, उनसे भी वह आगे बढ़ गया। उसका जीवन दीर्घायु-पूर्ण और महान था। उसने जीवन में दुःख और पश्चाताप को जाना ही नहीं।

४

फ्रेडरिक विन्सलो टेलर

यह एक इंजिनियर और सफल कारखानेदारी के जन्मदाता की जीवन गाथा है जो, बाल्यावस्था में अपनी आंखें खराब होने के कारण, अशिक्षित रह गया। जिसमें न कोई विशेष प्रतिभा थी, न ज्ञान, न विशेष साधन सम्पन्नता और न कोई भी अन्य विशेष बात। किन्तु जो केवल अपने शुद्ध अध्यवसाय और लग्न द्वारा एक साधारण मजदूर से एक दक्ष इंजीनियर तक बन गया। इतना ही नहीं, उसने अपने अनुभव से कारखानेदारों और मजदूरों के सम्बन्ध के सिलसिले में ऐसे मौलिक नियम बनाये जिनके कारण वह "सफल कारखाने-दारी का पिता" कहलाता है। प्रत्येक युवक को उसके गुणों और अनुभवों से लाभ उठाना चाहिये।

फ्रेडरिक विनस्लो टेलर

सफल कारखाने-दारी के जन्मदाता फ्रेडरिक विंसलो टेलर का यह जीवन चरित्र है।

टेलर का जन्म सन् १८५६ में फिलाडेलफिया के समीप एक गांव में हुआ। गृहयुद्ध के दिनों में टेलर एक छोटा सा लड़का ही था।

उसके माता-पिता न तो बहुत धनाढ्य ही थे और न बहुत निर्धन। उन्होंने फ्रेड टेलर को एक छोटे से स्कूल में दाखिल करा दिया। उनका विचार उसे हारवर्ड युनिवर्सिटी में भेज कर वकील बनाने का था।

वह बड़ा परिश्रमी विद्यार्थी सिद्ध हुआ। विद्या-अध्ययन में उसने इतना अधिक परिश्रम किया कि उसकी आँखें खराब होनी आरम्भ हो गईं, जिसके कारण उसे पढ़ना-लिखना पूर्णतया बंद कर देना पड़ा। उन्नीस वर्ष की आयु में आँखें खराब हो जाने के कारण उसे स्कूल छोड़ देना पड़ा।

इस भयंकर आघात ने ही उसके जीवन को बना दिया। विवश होकर उसने अपने घर के पास ही एक छोटे से कार-

खाने में एक काम सीखने वाले विद्यार्थी के रूप में स्थान प्राप्त कर लिया। तीन साल तक वहां काम सीखने के पश्चात वह एक मशीनों की मरम्मत करने वाला तथा दिये हुए ढाचों के नमूने तैयार करने वाला बन गया।

जब वह बाइस वर्ष का हुआ तो उसने मिड वाले के प्रसिद्ध इस्पात के कारखाने में जाकर अपने लिये मजदूर के रूप में काम प्राप्त कर लिया। किंतु वहां उसे बहुत दिनों तक मजदूर नहीं रहना पड़ा।

पहले मेट फिर सहायक फोरमैन, फिर फोरमैन, तब मरम्मतों की देखभाल करनेवाला प्रमुख मैकेनिक (कारीगर), उसके बाद मुख्य शाफ्टसमैन और अंत में चीफ इंजिनियर।

इस प्रकार वह केवल छः वर्ष में एक साधारण मजदूर से चीफ इंजिनियर तक बन गया। इसी बीच में उसकी आँखों की रोशनी भी कुछ उन्नति कर गई, इसलिए उसने स्टीवैंस की प्रसिद्ध शाला में इंजिनियरिंग की नियमित शिक्षा लेना शुरू कर दिया, जहां वह रात के समय तथा रविवार के दिनों पढ़ा करता था। जिन दिनों वह फोरमैन था, तभी से उसने निर्माण कार्य में वैज्ञानिक नियमों का उपयोग करना आरम्भ कर दिया था।

धातुओं को काटने का उसने एक नया तरीका आविष्कृत किया, जिससे वह तीन गुना उतने ही समय में कटा सकता था।

उसने लाखों ही प्रयोग किये। वह बड़ा धैर्यवान पुरुष था।

अपने किये हुये आविष्कारों में से उसे अपने हिस्से का धन मिलता रहा और सन् उन्नीस सो एक में उसने रुपया कमाने से अपना हाथ खींच लिया। उस समय उसने कहा था, "मैं अब धन की खातिर काम करना सहन नहीं कर सकता।"

टेलर न कोई प्रतिभाशाली व्यक्ति था और न कोई विशेष बुद्धिमान। परिस्थिति के अनुकूल अपने आपको बनाने की क्षमता भी उसमें नहीं थी। शायद उसकी सफलता का रहस्य उसका आत्मविश्वास ही था। अपने काम को धून और उसके पीछे पड़ जाने का माद्दा उसमें हद दर्जे का था। काम शुरू कर देने के बाद जबतक वह समाप्त न हो जाता तबतक उसे कोई उस काम से हटा नहीं सकता था। एक बार उसने स्वयं भी स्वीकार किया था कि उसकी सफलता का कारण केवल उसकी "पक्की धुन" है।

एक बार जब वह चरित्र की परिभाषा के संबंध में अपने विचार प्रगट कर रहा था तो उसने कहा था, "ना-पसंद कामों को करने की योग्यता का नाम ही चरित्र है।" टेलर का यह विश्वास था कि यदि कोई आदमी केवल अपनी पसंदगी का कार्य कर पाता है तो वह बहुत ही साधारण पुरुष है। मुख्य चीज यह है कि जो कार्य किया जाना आवश्यक है वह किया जाय, भले ही तुम उस कार्य को पसन्द करो या न करो। उदाहरण स्वरूप एक बार टेलर ने अपने आप को "बही-खाता लिखना" सीखने को बाध्य किया, हांलाकि यह कार्य उसे बिल्कुल पसंद नहीं था,

कारण यही था कि उसने अनुभव किया कि सही २ किताब रखना एक कारखानेदार के लिये बहुत जरूरी चीज है।

टेलर सदैव अपने आप को काम का सेवक समझ कर काम किया करता था। वह बड़े उत्साह और अकथ धैर्य के साथ साधारण और प्रतिदिन के काम में जुट जाता। अधिकांश लोग प्रतिदिन के कार्य के प्रति ऐसा भाव नहीं रखते। संक्षेप में यही उसकी सफलता का रहस्य है।

टेलर एक कर्मयोगी पुरुष था। मौलिक विचारों की क्षमता उसमें नहीं थी। न उसमें कोई विशेष कल्पना शक्ति थी और न बहुत अधिक चतुराई। वह एक सीधा-सादा और स्पष्टवादी पुरुष था।

यदि उसके काम में उसे किसी कठिनाई का सामना करना पड़ता तो न वह उससे अपना पिंड छुड़ाने की चेष्टा करता और न उसके चारों ओर चक्कर ही काटता। वह इसका मुकाबिला करके उस पर विजय प्राप्त करने की चेष्टा करता। जानबूझ कर जीवन भर वह 'विरोध का सामना करने' के सिद्धांत पर अमल करता रहा।

टेलर ने सामाजिक जीवन की ओर कभी ध्यान नहीं दिया। बनावटी प्रसंशा का पात्र अथवा खुशामदी होनेकी उसने कभी भी चेष्टा नहीं की। उसे लोगों से ज्यादा काम की अधिक चिंता रहती थी। वह काम का भक्त था।

टेलर केवल जनता को प्रसन्न करने के लिये अपने निर्धारित

मार्ग से एक इंच भी न हटता था। वह किसी राजनीतिज्ञ के स्वभाव से बिलकुल उल्टे स्वभाव का आदमी था। उसे न लोगों की भावनाओं की कोई चिंता थी और न स्वतः की धारणा की ही। उसका एक मात्र उद्देश्य यह रहता था कि "क्या करना चाहिये, इसका उत्तर ढूढ़ निकालो।"

वह बड़ा ही नीरस वक्ता था। एक बार मैंने उसे न्यूयार्क में लगभग तीन हजार श्रोताओं के मध्य भाषण देते हुये सुना। भाषण की समाप्ति पर श्रोतागण बड़े प्रसन्नचित्त दिखाई पड़ते थे। किंतु एक दूसरे अवसर पर वह लगभग एक घंटे तक अमरीकन समाचार पत्रों के सम्वाददाताओं के सम्मुख बोला। उसके इस भाषण ने बजाय लाभ के हानि पहुंचाई क्योंकि गम्भीर मस्तिष्क वाले टेलर ने सम्वाददाताओं को चिढ़ा दिया। कुछेक सदस्य तो उठ कर बाहर चले गये और बहुत से लोग सो गये। यह लोग प्रतिभा-शाली, बुद्धिमान, भावुक तथा भाषा-शास्त्र-विशारद लोग थे। स्वाभाविकतया ही उन्होंने नीरस और कीचे-सादे टेलर की खिल्ली उड़ाई।

उसने अपने आप को धनाढ्य बना लिया। इससे भी बढ़िया यह कार्य किया कि उसने अपनी कम्पनी को धनाढ्य बना डाला और सबसे बढ़िया कार्य उसने यह किया कि संसार के तमाम कारखानों के पुनर्निर्माण का वह साधन बना।

टेलर सदैव इस कथन का जोरदार विरोध करता था कि उसमें कोई प्रतिभा है। वह सदैव यही कहता था कि उसमें

विशेष योग्यता कोई नहीं है—केवल लगन और साधारण बुद्धि है। उसकी अपनी राय में उसकी सफलता का रहस्य "प्रतिदिन का अध्यवसाय" ही था।

अपने जीवन के पिछले दिनों में टेलर मनुष्यों का शिक्षक बना, किन्तु अपने जीवन के उषाकाल में वह एक विद्यार्थी ही था। वह सदैव पुस्तकों, अधिक अवस्था वाले व्यक्तियों और अपने निजी प्रयोगों से शिक्षा ग्रहण करता रहा।

जवानी में उसे जल्दी-जल्दी तरक्की मिलती रही। इसके दो कारण थे, एक यह कि वह निर्धारित समय से अधिक समय कार्य करने को सदैव तैयार रहता और दूसरा यह कि वह अपनी मशीनों को ठीक दशा में रखने का सदैव ध्यान रखता। शीघ्र ही वह प्रबन्धकर्ताओं के निगाह में चढ़ गया और जगह २ उसकी मांग होने लगी।

एक वृद्ध कारखानेदार ने एक बार उसे कुछ परामर्श दिया। इस परामर्श का टेलर पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। उस वृद्धसज्जन ने इसको विद्यार्थी के रूप में काम करते हुए देख लिया था। उसने टेलर को बुला भेजा और उससे कहा—"यदि तुम जीवन में सफलता चाहते हो तो मैं तुम्हें बतलाता हूं कि यह किस प्रकार प्राप्त की जा सकती है। यदि तुम्हारा मालिक चाहता है कि तुम अपना काम प्रातःकाल सात बजे प्रारम्भ कर दो, तो सदैव सात बजे से दस मिनट पहले अपने काम पर पहुंच जाओ। यदि वह चाहता है कि तुम अपना काम छः बजे शाम तक करते

रहो, तो सदैव छः बजने के दस मिनट बाद तक अपना काम करते रहो। मैंने जो कुछ कहा है यदि इसे समझने की बुद्धि तुममें नहीं है तो जान लो कि सफलता प्राप्त करने की बुद्धि भी तुम में नहीं है।"

जिन दिनों टेलर फोरमैन था उन्हीं दिनों एक दिन किसी मशीन की एक ढ़िबरी टूट गई। इसकी वजह से कारखाने का एक पूरा खाता ही बन्द करना पड़ा। इसकी तलाश में टेलर तमाम फिला-डेलफिया में चक्कर काट आया। वह प्रत्येक दुकानदार के पास गया, किन्तु उसे ढ़िबरी न मिली।

वह कारखाने में वापिस लौट आया और सीधा जनरल मैनेजर के पास गया और उसे बताया कि उसने ढ़िबरी की तलाश में सारा शहर छान मारा है। मैनेजर ने उसे घूर कर देखा—

"क्या तुम्हारे कहने का तात्पर्य यह है कि तुम्हें वह ढ़िबरी कहीं मिली ही नहीं ?"

"जी हाँ।"

"निकल जाओ," मैनेजर ने चिंघाड़ते हुये कहा, "ढ़िबरी ला कर ही मुझे मुँह दिखलाना।"

टेलर न्यूयार्क जाकर वह ढ़िबरी ले आया। इस घटना ने उसे एक बहत महत्त्वपूर्ण सबक सिखाया। जैसा कि वह बाद में कहा करता था—कि इस घटना ने मुझे यह बतला दिया कि जहां परिणाम दिखलाने की आवश्यकता है वहां कभी भी कारण पेश

करके मत दिखलाओ।

एक दूसरे अवसर पर सन् १-७६ में एक पुराने अनुभवी कारखानेदार ने जो बात कही, टेलर पर उसका बड़ा प्रभाव पड़ा। उस वृद्ध सज्जन ने टेलर से पूछा—"सफलता के मानी तुम क्या समझते हो ?"

टेलर ने उत्तर दिया—"यदि मैं कारीगर की हैसियत से दस रुपये रोज कमाने लगूं तो मैं अपने आप को सफल व्यक्ति कहूँगा।"

"नहीं," उस वृद्ध कारखानेदार ने कहा—"केवल इतना लक्ष्य रखना पर्याप्त नहीं है। जब मैं तुम्हारी अवस्था का था तो मैंने यह निश्चय कर लिया था कि मैं दूसरे व्यक्ति के मुकाबिले में अधिक सही और अच्छा काम करना सीख जाऊँ तथा सदैव हर पिछले वर्ष के मुकाबिले में इस वर्ष अधिक अच्छा काम करूँ।"

कई वर्षों तक टेलर ने विलियम सेल्र्स नाम के प्रसिद्ध इंजिनियर के यहां नौकरी की थी। एक दिन वह सेल्र्स के यहां गया और उसने यह शिकायत की कि अमुक बदमिजाज मैनेजर मेरे साथ बुरा व्यवहार कर रहा है। उसने अपने कष्टों की गाथा सेल्र्स को कुछ विस्तार के साथ सुनाई। सेल्र्स ने धैर्य के साथ उसकी बात सुनी और कहा—

"क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे इस सारे कथन का प्रभाव मेरे ऊपर सिवाय इसके कुछ और नहीं पड़ा कि तुम अब भी

केवल एक छोकरे ही हो। मेरी उम्र का होने से बहुत पहले ही तुम्हें पता चल जायगा कि तुम्हें बहुत सी धूल फाँकनी है और सफलता प्राप्त करने के लिये इसे तब तब फांकते ही रहना पड़ेगा जब तक कि इस से तुम्हारा हाजमा न खराब हो जाय।

इस उत्तर को टेलर ने गांठ में बाँध लिया। उसने दृढ़ निश्चय कर लिया कि शिकायत करके और कुढ़कर मैं अपने चरित्र को निर्बल न होने दूँगा।

एक बार जब कि वह एक छोटे से महकमें का अध्यक्ष था, एक नाली रुक गई। यह नाली कारखाने के नीचे पच्चीस फीट गहरी चली गई थी। इसे साफ करने के लिये उसने कुछ आदमी भेजे। उन्होंने सलाखों से इसे साफ करना चाहा किन्तु सफलता न मिली। उन्होंने आकर टेलर से रिपोर्ट की कि नाली को खोले बिना उसकी रुकावट दूर न की जा सकेगी।

ऐसा करने से कारखाना कई दिन के लिये बन्द करना पड़ता। अतएव टेलर ने निश्चय किया कि मैं स्वयं ही इस नाली को साफ करूंगा। उसने अपने कपड़े उतार कर और मोमजामा लपेट कर नाली में प्रवेश किया। कई बार डूबने से बचने के लिये उसे अपनी नाक नाली को खाली जगह में ऊंची उठानी पड़ी। वह लगभग सौ गज तक अंधेरे में ही रेंगता चला गया। अन्त में उसे रुकावट डालने वाला रोड़ा मिल गया, जिसको निकाल कर उसने बाहर फेंक दिया और फिर स्वयं भी नाली से बाहर निकल आया।

उस समय वह कीचड़-मिट्टी से लथपथ था क्या उसके साथी

उसका यह हुलिया देख कर हंसने लगे। कम्पनी के चेयरमैन ने जब यह कहानी सुनी तो उसने अन्य डाईरेक्टरों को भी सुनाई। यह कार्य करके टेलर ने कम्पनी का हजारों रूपयों का नुकसान होने से बचा लिया था। इससे टेलर को एक तरक्की और मिली।

टेलर की इच्छा-शक्ति बड़ी ही प्रबल थी और वह एक स्वतंत्र स्वभाव का मनुष्य था। शरीर भी उसका बहुत मजबूत था। कोई भी आदमी उसे झुका नहीं सकता था।

उसमें कोमलता तनिक भी न थी। वह तो बिल्कुल मोटे ढांचे का पुरुष था। उत्तेजित होने पर उसकी भाषा में सूरदास अथवा अबीर की भाँति राजसी अथवा साहित्यिक भावों का समावेश नहीं होता था, बल्कि वह अत्यन्त गन्दी और न-लिखने योग्य होती थी।

एक बार जब कि पार्लियामेन्ट की एक कमेटी ने उसकी भाषा के कारण उसकी कड़ी आलोचना की, तो उसने क्षमा याचना करते हुये कहा था—

"श्रीमान सज्जनों से मैं क्षमा माँगता हूं और निवेदन करता हूं कि इसका कारण मुझको बाल्यावस्था में शिक्षा का न मिलना है।"

टेलर बिना प्रमाण के किसी बात का भी विश्वास नहीं करता था। मूर्ख आदमियों को वह तनिक भी सहन नहीं कर पाता था; और सबल इच्छा-शक्ति वाले मनुष्यों की भाँति व्यर्थ की बातों से उसे घृणा थी।

छोटी २ व्यर्थ की बातों की ओर उसने कभी भी ध्यान न

दिखा। यदि उसके कालर में स्याही लगी हुई है तो बहुत अच्छा यदि नहीं लगी हुई है तब भी कोई बात नहीं। वह ऐसी छोटी २ बातों पर समय खर्च नहीं करता था।

मजदूरों के नेताओं और कम्पनी के डाईक्टरों, दोनों को ही, वह बहुत कम पसन्द करता था। जीवन भर वह दोनों से ही लड़ता रहा। उसके विचार के अनुसार दोनों ही उन्नति के मार्ग में रुकावट डालने वाले थे।

मजदूरी के सम्बंध में उसका ख्याल था कि उनके साथ सज्जनता का व्यवहार होना चाहिये। टेलर खुद अपने आदमियों के साथ काम करता था। उनके साथ काम करने में उसे तनिक भी संकोच न होता था। जब मजदूर लोग कुछ ग़लती करते तो वह उन्हें इस ढंग से समझाता था कि वे लोग जिन्दगी भर न भूलते। मालिक के रूप में वह कोई आसान मालिक न था, किन्तु उनके साथ उसका व्यवहार मैत्री पूर्ण होता था। मनुष्यों के बीच में वह सदैव अपने आप को मनुष्य ही समझता था।

अपने जीवन के पिछले भाग में, जब कि वह धनाढ्य भी था और प्रसिद्ध भी, तब भी अपने आप को एक मजदूर ही समझता रहा। और जब वह अपने मैले कुचैले तथा तेल आदि से भरे हुये कपड़ों को पहने हुये अपने मजदूरों के बीच में बैठता, तब वह सब से अधिक प्रसन्नचित्त अपने आप को अनुभव करता था।

उसका विश्वास था कि मजदूरों का वेतन बहुत अच्छा

होना चाहिये किन्तु उसका यह विश्वास भी था कि मजदूर मजदूर बन कर ही कार्य करें, गुंडा बन कर नहीं। उसका कहना था कि कारखानेदार का यह कर्तव्य है कि वह अपने कर्मचारियों को अधिक से अधिक कमाने का अवसर दे। यदि तब भी कोई कर्मचारी ढील करे अथवा नमक हरामी करे तो उसे छुट्टी दे देनी चाहिये।

कोई भी कारखानेदार न अपने कर्मचारियों को लूटे और न कोई कर्मचारी अपने कारखानेदार को लूटने की चेष्टा करे। काम को खुल कर होने दो और फिर कोई कारण नहीं कि सब के लिये काफी रुपया प्राप्त न हो सके—यह उसका सिद्धान्त था।

आलस्य, चालाकी तथा दुष्टता से उसे सख्त घृणा थी। जिस जिस कारखाने में उसने काम किया, वहाँ वहाँ से इन चीजों को उसने निकाल फेंका।

काम को उसने आनन्द की चीज समझा, परेशानी की कमी नहीं। काम को वह विज्ञान धरातल तक उठा ले गया।

पैसे को उसने कभी भी प्रथम स्थान नहीं दिया। एक बार उसने अपने एक मित्र से कहा था, "मैं अब पैसे की खातिर काम नहीं कर सकता।" एक दूसरे अवसर पर उसने कहा था, "हमारे तमाम आविष्कार मनुष्य जाति की खुशी को बढ़ाने के लिये किये जाते हैं।"

उसके दाह संस्कार में जाने के लिये तमाम मजदूरों ने अपना काम छोड़ दिया था। उनके लिये वह सबसे बड़ा नेता

था। अपने मजदूरों में ही कई उसके निजी मित्र थे। एक बार उसके एक मजदूर मित्र ने कहा था —"टेलर में मैत्री पैदा करने की आश्चर्य-जनक क्षमता है--ऐसी क्षमता जो सातों समुद्रों को लाँघ जाय, जीवन पर्यन्त चलती रहे और निम्नतम व्यक्ति तक पहुंच जाय।" २

उसका हृदय और इच्छा-शक्ति दोनों ही बहुत बड़े थे। वस्तु स्थिति को वह प्रत्येक अन्य चीज से अधिक महत्व देता था, किन्तु साथ ही वह यह भी जानता था कि मनुष्य की भावनायें भी एक वस्तु स्थिति ही हैं। वह जानता था कि मनुष्य का स्वभाव भी बिल्कुल उतना ही महत्त्व पूर्ण है जितनी कि मशीनरी--आदि अन्य भौतिक वस्तुयें।

अपनी मृत्यु से केवल कुछेक सप्ताह पूर्व जो भाषण उसने दिया था, उसमें उसने कहा था—"हमें यह हमेशा याद रखना चाहिये कि प्रत्येक व्यापार में सब से अधिक महत्त्व पूर्ण चीज यह है कि कर्मचारियों और मालिकान के सम्बंध आपस में ठीक रहें।"

सफल कारखानेदारी का जन्मदाता फ्रेड टेलर इस प्रकार का व्यक्ति था, वह एक दक्ष इंजिनियर होने के साथ साथ एक महान पुरुष भी था।

५

एन्ड्रू कारनेगी

यह एक ऐसे पुरुष की जीवन गाथा है जो एक जुलाहे के अत्यन्त दरिद्र घराने में जन्म लेकर संसार का सबसे बड़ा धनी व्यक्ति बन गया। निर्धनता के कारण शिक्षा न पा सकने से उसने एक पुस्तकालय का सहारा टटोला और अपनी लग्न द्वारा वह व्यवहारिक शिक्षा ग्रहण की जिसने उसे संसार का सबसे बड़ा धनी व्यक्ति बना दिया। ऐन्ड्रू कारनेगी का जीवन चरित्र पढ़ने से हमारे युवकों में आत्मनिर्भरता, लग्न तथा उत्साह के भाव पैदा होंगे—यह निश्चित बात है। हमारे युवकों को कारनेगी के प्रत्येक अनुभव से लाभ उठाना चाहिये।

ऐन्ड्रू कारनेगी

यदि मुझसे कोई पूछे कि संसार में सबसे अधिक क्षमतावान, उदारचित्त, मौलिक तथा स्वतन्त्र स्वभाव का मनुष्य कौन हुआ है तो मैं केवल एक ही उत्तर देने के लिये बाध्य हूंगा—"ऐन्ड्रू कारनेगी।"

वह संसार का सबसे धनी व्यक्ति भी होता, यदि वह अपने धन में से एक अरब रुपया दूसरों को न दे डालता। कारनेगी का जन्म, सौ वर्ष से कुछ अधिक समय हुआ, स्काटलेण्ड में हुआ था। उसके जीवन का लगभग आधा समय अपने देश में और शेष आधा समय अमेरिका में बीता।

उसने ऐटलान्टिक महासागर को लगभग सत्तर बार पार किया। वह ५४ अंग्रेजी शहरों का स्वतंत्र नागरिक था। सन् १९०२ ई० में वह आंग्ल लोहा तथा इस्पात निर्माणकर्तृ महासभा का प्रधान भी चुना गया था। जीवन भर कारनेगी का एक ही सिद्धान्त रहा—और भी अधिक। उसने कमाया भी अधिक, दिया भी अधिक और किया भी अधिक। शायद रौब फैलर को छोड़ कर उससे अधिक सारे संसार में किसी ने उससे अधिक कुछ नहीं किया।

कारनेगी का जन्म सन् १८३५ ई० में एक छोटी सी कुटियामें हुआ था। उसका बाप जुलाहे का काम करता था, जो निर्धन होने के कारण अपने जीवन से बड़ा ही असंतुष्ट था। जब कारनेगी केवल दस वर्ष का छोटा सा लड़का ही था तो उसने लगभग साढे चार रूपये किसी प्रकार अपने पास इकट्ठे कर लिये। उन रुपयों के वह सन्तरे खरीद लाया और उन्हें बेचने के लिये द्वार-द्वार पर घूम कर उसने लगभग साढे सात रुपये का लाभ कमा लिया।

जब वह तेरह वर्ष का था तो काम की कमी के कारण सारे कुटम्ब को अपना देश छोड़ कर अमेरिका के लिये कूंच करना पड़ा। उन्होंने एक बहुत छोटे से जहाज पर यात्रा की और ४६ दिन में अमेरिका पहुंच सके। (आजकल की भांति हवाई जहाज द्वारा केवल सोलह घन्टे में नहीं।)

छोटे से ऐन्ड्रू को ताना पूरने का काम पांच रुपया प्रति सप्ताह के हिसाब से मिल गया। उसका बाप एक कपड़े की मील में काम करने जाने लगा। उसकी मां कपड़े धोने का काम करने लगी। एक अत्यन्त निर्धन मौहल्ले में यह लोग एक छोटा सा मकान लेकर रहने लगे। थोड़े ही दिनों के बाद सात रुपये प्रति सप्ताह पर ऐन्ड्रू को भट्टी झौंकने का काम मिल गया। अमेरिका पहुंचने के एक वर्ष बाद उसे तार बांटने वाले का काम मिल गया और वहां से उसे प्रति सप्ताह बारह रुपये मिलने लगे।

अभी तक उसको शिक्षा लगभग बिल्कुल ही नहीं हुई थी, किन्तु उसे पढ़ने का शौक बहुत था। पुस्तकों के प्रति उसके प्रेम को देख कर कर्नल एडसन नाम के एक दयावान पुरुष का ध्यान

इस छोकरे ऐन्ड्रू की ओर आकर्षित हुआ और उसने अपने पुस्तकालय का उपयोग इसको करने की आज्ञा दे दी। बस, उस पुस्तकालय ने कारनेगी के जीवन को बना दिया। उसने (पुस्तकालय ने) कारनेगी को एक संदेश-वाहक लड़के से उठा कर एक पूर्ण परिपक्व मनुष्यों के नेता की श्रेणी में जा रक्खा।

जब वह सत्रह वर्ष की आयु का हुआ तब वह तार का पूरा काम सीख चुका था और एक दिन जब कि तमाम तार बाबू लोग गैरहाजिर थे, एक आवश्यक सन्देश आया। उछल कर वह तार की डसी के पास गया और तार को ले लिया। यद्यपि ऐसा करना नियम के विरुद्ध था, किन्तु फौरन ही वह चौबीस रुपये प्रति सप्ताह पाने वाला तार बाबू बना दिया गया।

दो वर्ष बाद उसने फिर एक साहसिकता का कार्य किया और एक रेलवे दुर्घटना को होते-होते बचा लिया। यह भी नियम के विरुद्ध था किन्तु पुरस्कार स्वरूप एक रेलवे मैनेजरने उसे अपना सेक्रेटरी बना लिया।

वह थोड़ा २ करके रुपया बचाता रहा और भिन्न-भिन्न प्रकार की कम्पनियों के हिस्से खरीदता रहा। दस वर्ष तक वह एक रेलवे का बाबू रहा—अर्थात् रेलवे के अध्यक्ष का सहकारी।

सूझ तो उसमें कूट-कूट कर भरी थी। जब तक दूसरे लोग सोच-विचार में ही पड़े रहते थे, वह काम कर जाता था। उदाहरण स्वरूप जब प्रिंस ओफ वेल्स पिट्स बर्ग को गया तो युवक कारनेगी ने आगे बढ़ कर उससे कहा—"क्या आप इंजिन में बैठना चाहते हैं?" इस प्रकार इंगलिस्तान के भावी राजा और

इस्पात के भावी बादशाह दोनों ने, इंजिन ड्राईवर के साथ ऐंजिन में बैठ कर सैर सपाटा किया।

सत्ताइस वर्ष की आयु में एक तेल के सौदे में उसने पहले पहल तीन हजार रुपये कमाये। बाद में पुलमैन कम्पनी, जिसने कि रेलवे में सबसे पहले सोने वाले डब्बों की व्यवस्था की थी, की सहायता करके और भी अधिक धन कमाया।

तब, जब कि वह २६ वर्ष का था, उसने एक छोटी सी लोहे की कम्पनी में तीस हजार रूपया देकर उसका हिस्सा खरीद लिया। इस कम्पनी की दशा अच्छी नहीं थी। कई वर्षों से उसने अपने हिस्सेदारों को एक पैसा भी लाभ नहीं दिया था। थोड़े ही दिनों में इसके दिवालिया घोषित होने की स्थिति आई।

दूसरे हिस्सेदारों ने इसके पनपने की आशा छोड़ दी, इसलिये कारनेगी ने उनके हिस्से खरीद लिये। थोड़े दिनों में ही वह इस परिणाम पर पहुंच गया कि कम्पनी को लाभ न होने का मुख्य कारण यह है कि उसके बनाये हुये सामान की बिक्री बहुत कम होती है। बस, उसने अपनी रेलवे की नौकरी छोड़ दी और वह लोहे के सामान का विक्रेता बन गया।

उसे अधिक अच्छे मूल्य पर अधिक बड़ी संख्या में आर्डर मिले। उसने अच्छी मशीन भी लगा ली। वह एक दैत्य की भाँति काम करता था। शीघ्र ही वह वह होगया जिसे कि हम में से बहुत से लोग धनाढ्य कह सकें। किन्तु इस से कारनेगी को सन्तोष नहीं हुआ। वह और भी अधिक चाहता था।

जब वह ३१ वर्ष का हुआ तो वह इंगलिस्तान आया और

वहाँ उसने डरबीमें स्टील की रेल देखी। शफील्ड में उसने सबसे पहली बार डैमीमर का इस्पात ढालने वाली मशीन देखी। इसने उसे बड़ा प्रभावित किया। लौट कर जब वह अमेरिका पहुंचा तो वहाँ उसने डैसीसर की ढंग का स्पात ढालने का कारखाने खोला। जान पहचान के प्रत्येक आदमी से उसने कर्जा लिया। जो भी कुछ उसके पास था वह सब का सब उसने स्पात के कारखाने पर लगा दिया।

सन् १८८१ में वह संसार का सबसे बड़ा इस्पात-निर्माता बन गया। उस समय उसके यहाँ पैंतालीस हजार आदमी काम करते थे।

सन् १८९९ में उसने अपनी कम्पनी बेचनी चाही। अपने हिस्सेदारों को वह केवल पचास करोड़ रूपया लेकर बेचने को तैयार था। किन्तु उन लोगों ने खरीदने में जल्दी नहीं की, इसलिये कारनेगी ने रौक फैलर के ७५ करोड़ रूपये लेकर, जिसका कि आधा नकद लिया जाता और आधा बाद में लिया जाता, बेचने का प्रस्ताव रख दिया।

रौक फैलर ने कहा कि यह बहुत ज्यादा है। बस फिर क्या था, कारनेगी ने बेचने का ऊँचे धरातल से विज्ञापन करना आरम्भ कर दिया। इस बार भी उसका उद्देश्य यही था कि "और भी अधिक"

उसने अपने प्रतियोगियों को हानि पहुंचानी आरम्भ कर दी। परिणाम यह हुआ कि उन लोगों ने किसी भी मूल्य पर उसकी कम्पनी को खरीद लेना चाहा। उन्होंने हिस्सों तथा बौन्डों के रूप में उसे डेढ़ अरब रूपया दिया।

अब वह संसार का सबसे धनाढ्य व्यक्ति बन गया। अब उसे बिना कुछ करे धर साढ़े चार करोड़ रुपया वार्षिक मुनाफे के रूप में मिलता रहता। "और" उसने कहा। "मैं तो व्यापार में से ही निकल गया।"

व्यापारी के रूप में साधारणतया उसके सिद्धान्त यह थे:—

(१) बहुत अधिक उत्पादन

(२) नई से नई मशीनरी

(३) केन्द्रीय करण "अपने तमाम अन्डे एक ही टोकरी में रक्खो" वह कहा करता, "और उस टोकरी को ध्यान पूर्वक देखते रहो।"

(४) विवरण से परहेज। साधारणतया वह अपने व्यापार की व्यवस्था दूर से ही करता था।

(५) व्यापारिक यात्रायें। उसका विश्वास था कि बाहर के व्यापारियों से व्यक्तिगत सम्पर्क रखना आवश्यक है!

(६) तमाम मैनेजरों से दैनिक रिपोर्ट लेना।

(७) मैनीजरों को थोड़ी तनख्वाह किन्तु अधिक कमीशन देना। कमीशन सदैव स्टाक के रूप में दिया जाय।

(८) फायदे की रकम को पुनः व्यापार में लगा देना।

(९) रसायन शास्त्र तथा मशीनरी का योग पैदा करना।

(१०) अधिक मजदूरी देना, अधिक फायदा कमाना और कम लागत आने देना।

दान देने के सम्बन्ध में भी कारनेगी की एक निर्धारित नीति थी —उसी आदमी की सहायता करो जो अपनी सहायता खुद करने की चेष्टा कर रहा है। पेशेवर्ग भिखारी को उसने कभी

भी एक पैसा नहीं दिया। सच बात तो यह है कि जिन माना आजकल बखशीश समझी जाती है, उस शुद्ध बखशीश में उनको तनिक भी विश्वास न था।

उसने तीन हजार पुस्तकालयों का निर्माण किया, ताकि उसी की भाँति लोग किताबें पढ़ सकें और उन्नति कर सकें। इन पुस्तकालयों के ऊपर उसने बीस करोड़ रुपयों से भी अधिक रुपया खर्च किया।

इससे अधिक बुद्धिमत्ता पूर्ण अथवा पुन्य पूर्ण कार्य आज तक और कोई दूसरा नहीं हुआ—तमाम देशों में लाखों मनुष्यों के लिये ज्ञान प्राप्त करने के द्वार खोल देना।

वैज्ञानिक खोज-बीन के लिये उसने पन्द्रह करोड़ रुपये का दान दिया। दस्तकारी सिखाने वाले स्कूलों को उसने साढ़े सात करोड़ रुपया दान दिया तथा जन्म भूमि युनिवर्सिटियों को उसने तीन करोड़ रुपया दिया।

हेंग में उसने "शान्ति का मन्दिर" बनवाया। यह एक सफेद संगमरमर की इमारत है, किन्तु आज तक भी यह अशान्ति प्रिय संसार उसके योग्य नहीं हुआ है।

खुद अपने ऊपर उसने बहुत ही कम रुपया खर्च किया। उसकी एक मात्र फिजूल खर्ची उसकी यात्रायें थीं। किन्तु अपनी यात्राओं को वह सदैव "व्यापारिक—आवश्यकता" समझता था। उसका रहन सहन बड़ा ही सादा था। केवल पांच फीट चार इंच लम्बा तथा हल्के वजन का आदमी था।

आरम्भ से ही व्यापार को वह एक खेल समझता रहा। धन को उसने कभी भी अपना मालिक नहीं बनने दिया।

उसका हृदय एक लड़के के हृदय की भाँति था, जो सदैव

उत्सुक, उत्साही और कार्य करने के लिये तत्पर रहता है। मनुष्य जाति की उन्नति के लिये नये विचारों के साथ उसका मस्तिष्क सदैव उबलता रहता था।

एक साधारण बाबू से भी कम उस में शेखी का माद्दा था। मैंने उसको, उसके न्यूयार्क वाले घर में अपने पुस्तकालय के कमरे के फर्श पर बैठे हुये नक्शे, किताबें तथा कागजातों को ठीक करते हुये देखा है।

किसी की निगाहों की वह तनिक भी चिन्ता नहीं करता था। वह खेल खेलना और उसमें विजय प्राप्त करना--बस केवल इतना ही चाहता था।

उसके शौक की चीजें यह थीं.—
इस्पात; पुस्तकालय; विश्व शान्ति; प्रजा तन्त्र; और किसी हद तक विज्ञान और गायन। वह इंगलिस्तान के उदार दल का समर्थक था। पुस्तकों के प्रति उसे हद दर्जे का प्रेम था। एक बार उसने कहा था—"यदि मुझे एक बार फिर नये सिरे से जीवन आरम्भ करने का अवसर मिले तो मैं एक पुस्तकाध्यक्ष होना विशेष पसन्द करूंगा।"

चमक दमक वाले कपड़ों और फैशनेबिल सोसायटी के प्रति उसको उपेक्षा थी। अन्य विशेष धनी आदमियों की भाँति न उसकी कोई निजी नाव थी और न रेलवे का डिब्बा। धनी आदमियों की सोसाइटी से वह बचता रहता था। जब वह ५२ वर्ष की आयु का हो गया तब उसने अपना विवाह किया। उसकी पत्नी अपने आप घर के काम धन्धों में लगाये रखती थी। उनके एक लड़की पैदा हुई। उस कोमल स्वभाव की बाईस वर्षीय

युवती ने अभी थोड़ा ही समय हुआ एक रेलवे मैनेजर से विवाह किया है। यदि वह किसी रईस से विवाह कर लेती तो निश्चय था कि कारनेगी को महान दुख होता।

वह एक भला मालिक था। अपने कर्मचारियों का वेतन बढ़ाने में वह सब से आगे रहता था। होमिस्टेन के कारखाने में हुई हड़ताल का उत्तरदायित्व उसके ऊपर न था। अपने कर्मचारियों का वेतन घटा कर मितव्यता करने का विचार मस्तिष्क में कभी नहीं आया, बल्कि मशीनरी को उन्नततर करके वह मितव्ययिता पैदा करना चाहता था।

उसने सैकड़ों मन रूपया कमाया, किन्तु यह सब रूपया शुद्ध कमाई का रूपया था। उसकी कमाई से अन्य कोई भी निर्धन नहीं हुआ। उसने यह रुपया अपने नेतृत्व के पारिश्रमिक के रूप में कमाया। जब वह पैदा हुआ था उन दिनों स्पात का भाव दो रूपया सेर था। वह घटाते घटाते इसका मूल्य आठ आने सेर पर ले आया।

वह एक धनाढ्य वर्ग का अर्थवादी मनुष्य था, किन्तु उसका सारा जीवन साम्यवाद का मुँह तोड़ जवाब है। उसने किसी को भी लूटा नहीं। मजदूरों के वेतन उसने बढ़ाये। काम को उसने आसान से आसान बना दिया। बहुत से नये काम पैदा कर दिये। उसने चीजों की कीमतें बहुत घटा दीं उसने तमाम संसार के लाभ के लिये एक महान व्यापार स्थापित कर डाला।

उसके जीवन का सूत्रपात्र एक छोटी सी कुटिया में हुआ था और वह संसार का सबसे बड़ा कारखने दार तथा व्यापारी बन गया। ऐसा महान कारनेगी का जीवन चरित्र है।

६

हैनरी फोर्ड

यह उस हैनरी फोर्ड की जीवनगाथा है जिसके नाम पर प्रचलित फोर्ड मोटर-गाड़ियां सारे संसार में घूमती फिरती दृष्टिगोचर होती हैं। वह मोटर-व्यवसाय का बादशाह कहलाता है। बाल्यावस्था का बुद्धू हैनरी फोर्ड अब आगे चल कर इस प्रकार एक बहुत बड़े मनुष्य समाज का नेता बन गया—यही शिक्षा हैनरी फोर्ड के जीवन से हमें मिलती है। स्वतन्त्र भारत के उत्साही युवकों को उसके जीवन की एक एक घटना बड़ी शिक्षाप्रद सिद्ध होगी।

हैनरी फोर्ड

हैनरी फोर्ड की आश्चर्य-जनक जीवन कथा सुनो, जो कि अब लगभग सम्पूर्ण मनुष्य जाति के लिये मोटरें और खेत जोतने वाली मशीनें (ट्रैक्टर्स) बना रहा है।

परिणामों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि हैनरी फोर्ड संसार का सबसे अधिक सफल उत्पादक है।

वह अपने कर्मचारियों को सबसे अधिक वेतन देता है।

उसका कमाया हुआ लाभ सबसे अधिक है।

उसका सामान सबसे सस्ता होता है।

हैनरी फोर्ड मार्कस के इस सिद्धान्त का कि कोई भी अर्थ-वादी केवल अपने कर्मचारियों को अथवा जनता को लूट कर ही पैसा कमा सकता है, मुंहतोड़ जवाब है।

हैनरी फोर्ड किसी को भी नहीं लूटता। वह मजदूरों से अनुचित लाभ उठाने वाले व्यक्तियों में नहीं है।

वह एक करोड़पति व्यक्ति है और उसके धन का एक-एक पैसा पवित्र है।

उसके बड़े-बड़े लाभों का धन उस धन का एक छोटा-सा हिस्सा है जो कि वह जनता का बचा देता है। वह अपने कर्म-

चारियों को उससे बहुत अधिक दे देता है जितना कि वह लोग स्वतन्त्र-रूप से कमा सकते हैं।

हैनरी फोर्ड एक अर्थवादी धनाढ्य पुरुष है और वह दूसरे अर्थवादियों को धनी बनने का बढ़िया तरीका अपने खुद के उदाहरण द्वारा बतलाता है।

हैनरी फोर्ड ने अपनी सफलता खुद ही प्राप्त की है। उसके पास कोई उपाधि नहीं है। यदि उसे कोई उपाधि दी जाय तो उसे वह कदापि स्वीकार न करेगा।

वह एक वृद्ध पुरुष है। उसका जन्म डेटरोईट के समीप एक छोटे से गांव में हुआ था। उसका बाप आयरलैंड से आकर अमेरिका में बसा था।

स्कूल में पढ़ने-लिखने में हैनरी बिल्कुल ही बुद्धू था। शिक्षक लोग उसके बुद्धू-पन से परेशान थे।

पन्द्रह वर्ष की अवस्था होते-होते हैनरी स्कूल से भाग खड़ा हुआ और एक ऐंजिन के कारखाने में दस रुपया प्रति सप्ताह की नौकरी कर ली। आजकल उसकी आमदनी प्रति सैकेन्ड अट्ठाईस रुपया है। कई वर्षों बाद उसके पिता की मृत्यु हो गई और अपनी खेती की देख-भाल करने के लिए उसे घर जाना पड़ा। किन्तु कृषक के रूप में उसे सफलता नहीं मिली।

उन्हीं दिनों उसने अपने पड़ोसी की लड़की से विवाह कर लिया।

एक दिन शाम के समय वह खेती सम्बन्धी कोई समाचार

पत्र पढ़ रहा था। उसमें उसने एक बिना घोड़े वाली नई गाड़ी का चित्र देखा जिसको किसी फ्राँसीसी ने आविष्कृत किया था। उस चित्र से वह बड़ा प्रभावित हुआ। उस चित्र ने उसका ध्यान अपनी ओर इतना अधिक खींच लिया कि अन्त में वही उसके जीवन का पूरा ढाँचा ही बदल देने का कारण बना।

उसने खेती-बाड़ी से अपना ध्यान उठा कर बे घोड़ों की गाड़ी बनाना शुरू कर दिया। उसने एक पुरानी बग्घी में एक पुराना इंजिन जोड़ दिया, जिसे देखकर आस-पास की देहात के सब लोग हंसने लगे।

अमेरिका में अब भी कुछेक वृद्ध स्त्री-पुरुष जीवित हैं जिन्होंने हैनरी फोर्ड को उक्त गाड़ी को देख कर कहकहा लगाया था।

शीघ्र ही अन्य लोगों के परामर्श के विरुद्ध वह खेती-बाड़ी के काम को छोड़ कर डेटरोईट को चला गया। वहां उसने साढ़े चार सौ रुपया मासिक वेतन पर मरम्मत करने वाले कारीगर का काम तलाश कर लिया। रात के समय वह अपने बे घोड़े की गाड़ी के सम्बन्ध में नये-नये आविष्कार सोचता और किया करता था।

उसने एक ऐसी गाड़ी बनाई जिसमें एक सैलेन्डर लगा हुआ था—एक अद्भुत प्रकार की चीज़ थी। किन्तु यह चलती थी।

उसने अपनी इस वाहियात मोटर को लगातार आठ वर्ष तक

उन्नत करने की चेष्टा की। अन्त में वह एक अच्छी मोटर बनाने में सफल हुआ—इतनी अच्छी कि उसके द्वारा वह एक दौड़ जीतने में सफल हुआ।

पर तुरन्त ही वह और उसकी मोटर दोनों ही प्रसिद्धि पा गये। उसने अन्य दौड़ें भी जीतीं। उन दिनों के सर्वश्रेष्ठ दौड़ने वाले बारने ओल्ड फील्ड को भी उसने हरा दिया। ओल्ड फील्ड को उसने एक तीन मील वाली दौड़ में हराया था।

कई मित्रों ने उसको कुछ धन उधार दिया जिससे उसके पास लगभग पचास हजार रुपये इकट्ठे हो गये। इस धन से उसने एक छोटा सा मोटरों का कारखाना लगा लिया। उसने बढ़िया से बढ़िया मैनेजर अपने यहां नौकर रक्खे। उसने उनको बहुत अच्छा वेतन दिया और बदले में मैनेजरों ने उसके विस्तृत व्यापार को सुव्यवस्थित कर दिया।

वह एक पतला-दुबला, कसरती, धूप से चमड़ी लाल हुई और सादा स्वभाव का आदमी है। धन और शक्ति उसको अहंकारी नहीं बना सके हैं। आवश्यकता पड़ने पर उसे अपना कोई भी काम अपने हाथों से करने में तनिक भी संकोच नहीं होता। असल में उसे हम व्यापारी नहीं कह सकते। वह तो एक कारीगर है—एक आविष्कारक।

"बढ़िया से बढ़िया बनाये जाओ"—इस सिद्धान्त पर अमल करने के कारण ही उसे सफलता मिली। हैनरी फोर्ड अपने हर काम को करने का तरीका जानता है। उसने अपनी प्रत्येक व्यापारिक समस्या का हल निकाल लिया है। उसने मजदूरों से काम

लेनें, माल तैयार करने और बिना शत्रु पैदा किये लाभ कमाने का मार्ग हमें दिखलाया है।

हम सब के लिये यह अधिक अच्छा होगा कि फोर्ड का मजाक उड़ाने के बजाय उसके गुणों को परखें।

न वह मेरा मुवक्किल है और न मित्र। किन्तु मुझे स्वीकार करना पड़ता है कि जितना ही अधिक मुझे उसके बारे में ज्ञात होता जाता है उतनाही अधिक मैं उसकी योग्यता और समझदारी का भक्त बनता जाता हूं।

संसार को कितने ही हैनरी फोर्ड की आवश्यकता है। इस बात को हम पसन्द करें या न करें किन्तु सत्य बात यही है। यदि संसार में एक हजार हैनरी फोर्ड भी होते तो मजदूरों के वेतन और भी ऊंचे होते, लाभ भी अधिक होता, कीमतें कम होतीं और मालिक-मजदूरों के झगड़े भी न होते। संसार में शान्ति होती और सब लोग फूलते-फलते नजर आते।

उदाहरण के तौर पर फोर्ड के तरीके मालिक के रूप में देखो। इस मामले में वह बड़ा ही अद्भुत है। उसने एक बड़ा ही असाधारण मार्ग ग्रहण किया हुआ है और इस मार्ग द्वारा बहुत बड़ी सफलता प्राप्त की हुई है।

मालूम ऐसा होता है कि हैनरी फोर्ड अपने आपको मालिक के बजाय मजदूरों का नेता समझता है। वह अपने कर्मचारियों को उनकी मांग से बहुत अधिक दे देता है।

जिन सुविधाओं का उसके कर्मचारी विचार तक नहीं करते

काम करने की वे सुविधायें वह उन्हें पहले से ही दे देता है।

वह उनकी देखभाल भी करता है और रक्षा भी। उसके यहां काम करनेवाले पचपन हजार कर्मचारी संसार के अत्यन्त संतुष्ट और सर्वश्रेष्ट वेतन भोगी व्यक्ति हैं। मजदूरों के किसी नेता ने भी मजदूरों के लिये उतना नहीं किया जितना कि हैनरी फोर्ड ने उनके लिये किया है। उसने कभी भी उनको हड़ताल नहीं करने दी। कारखाने के ऊपर हुये ऋण को चुकाने के लिये उसने कभी भी अपने मजदूरों से नहीं कहा। वह उन्हें सफलता की ओर ले गया है, असफलता की ओर नहीं।

सन् १६१४ में उसके सब कर्मचारी पूर्ण संतुष्ट थे, किन्तु फिर भी एकाएक उसने उनका वेतन दूना कर दिया और परिणाम क्या हुआ! सन् १६१५ में, वेतन की मद में दूना खर्चा होते हुए भी, पिछले तमाम वर्षों से उसने अधिक लाभ कमाया।

वह अपने मजदूरों की प्रत्येक प्रकार के अन्याय से रक्षा करता है। उसके यहाँ दो हजार फोरमैन हैं, किन्तु अपनी मरजी उसे नमें से कोई भी एक मजदूर को निकाल नहीं सकता।

सन् १६१६ में ५००० मजदूरों में से केवल ११८ निकाले गये।

तीस व्यक्तियों का एक विशेष दस्ता है जो फोरमैनों और मजदूरों के बीच के झगड़ों की खोज बीन करता रहता है। यदि कोई फोरमैन अपने नीचे काम करने वाले मजदूरों के साथ अक्सर लड़ता-झगड़ता पाया जाय तो शीघ्र ही उसे मैनेजर के

कमरे में बुलाया जाता है और उसके तरीकों की गलती उसको समझाई जाती है।

मजदूरों की युनियन बनाने के प्रति फोर्ड को कोई शिकायत नहीं, बल्कि प्रत्येक मामले में युनियन से अधिक वह स्वयं ही अपने कर्मचारियों के लिये करता रहता है। युनियन को वह मूर्ख तथा अन्यायी मालिकों के विरुद्ध रक्षा करने वाली एक आवश्यक संस्था समझता है, किन्तु वह स्वयं न मूर्ख है और न अन्यायी।

उसके कारखाने में न निर्दयता होती है और न किसी प्रकार का अत्याचार। सच बात तो यह है कि उसके कारखाने में एक भली और दयनीय संस्थायें हैं। उसके कारखानों में कितने ही गिरजाघरों से अधिक सहानुभूति-पूर्ण तथा कोमल व्यवहार होता है।

उदाहरण के तौर पर फोर्ड के कारखानों में ४०० मजदूर ऐसे हैं जो जेल की सजा भुगते हुये हैं। जेल से निकाले जाने पर निसहाय अवस्था में यह लोग फोर्ड के पास पहुँचे और उसने उनको अवसर प्रदान किया। उसने उनके आत्म-सम्मान को जगाया और अब यह लोग सचचाई के साथ आनंद का जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

फोर्ड के कारखानों में २००० ऐसे व्यक्ति काम करते हैं जो निर्बल अथवा अपाहिज हैं। ऐसे लोग एक प्रकार की वर्दी धारण किये रहते हैं जो इस बात का चिन्ह है कि "उनसे केवल

हल्का काम लिया जाय ।"

फोर्ड ने अपना एक यह सिद्धान्त बना रक्खा है, जिस पर वह दृढ़ता से अमल करता है "कि अपने हिस्से के अपाहिज, अपराधी तथा अन्धे व्यक्तियों का उत्तर-दायित्व मुझे स्वीकार करना चाहिये ।" उसके सबसे अधिक प्रिय कर्मचारियोंमें से एक कर्मचारी अन्धा व्यक्ति है ।

अभी कुछ ही वर्षों की बात है कि फर्ड ने २०० व्यक्ति यह छान-बीन करने के लिये नियुक्त किये थे कि वह यह मालूम करें कि मेरे कर्मचारी किस प्रकार रहते हैं । "मैं चाहता हूं कि मेरे कर्मचारी शुद्ध और सात्विक जीवन व्यतीत करें," उसने कहा था । किन्तु अभी थोड़े दिन ही हुये उसने इस छान-बीन को बन्द कर दिया । "लोगों के व्यक्तिगत मामलों में बड़ी विभिन्नता चलती रहती है," उसने कहा—"हम इस विभाग को अब से शिक्षा विभाग में परिवर्तित कर देंगे ।"

काम करने के लिये मजदूरों को सुविधा पहुँचाने में चाहे कितना ही खर्च करना पड़े, वह खर्च करने से चूकता नहीं । उसके यहां सात सौ आदमी तो रंग-रोगन करने वाले, खिड़कियां साफ करने वाले तथा खाती आदि लगे हुये हैं जो हरेक चीज़ को साफ और चमकदार बनाये रखते हैं । उसके कारखाने का फर्श उतना ही साफ रहता है जितना कि किसी के रसोई-घर का ।

हर बारह मिनट बाद सारे कारखाने की हवा बदल दी जाती है । भट्टी के अन्दर पैदा हुआ सारा धुआँ और गैस उड़ जाता

है। कमरे न बहुत ठन्डे हैं और न बहुत गरम।

"अत्याधिक उतावलेपन" की फोर्ड के कारखाने में तनिक भी चेष्टा नहीं की जा सकती। सब काम आराम के साथ होते रहते हैं।

सारांश यह है कि फोर्ड और उसके कर्मचारियों के मध्य किसी प्रकार का भी कलह नहीं है। दोनों में से कोई भी एक दूसरे के प्रति संदिग्ध नहीं है। फोर्ड अपने कर्मचारियों का विश्वास करता है और कर्मचारी उसका विश्वास करते हैं।

उसने ८००० कर्मचारियों की एक यूनियन स्थापित कर रक्खी है, जिसका कि नेता कर्मचारियोंने उसीको चुन रक्खा है।

उसने अपना सम्पूर्ण व्यापार हड़तालों और "ताला डालने" के धरातल से बहुत ऊँचा उठाया हुआ है।

उसने कर्मचारियों और व्यवस्थापकों के बीच का युद्ध समाप्त किया हुआ है। शान्ति और सद्भावना की उसने स्थापना की हुई है।

वह विशेष ज्ञानवान व्यक्ति नहीं था, किंतु सत्य, न्याय और अच्छाई के सिद्धान्त को व्यवहारिक रूप देने का साहस उसमें है। उसने अमल किया। वह सब से आगे चला। उसने प्रत्येक अन्य मालिक को यह दिखला दिया कि मालिक-पन कहां तक किया जा सकता है।

७

जार्ज [illegible]

जार्ज वेस्टिंगहाउस का जीवन चरित्र हमारे युवकों को हर दृष्टि से लाभदायक सिद्ध होगा। इस कहानी का एक एक वाक्य मनन करने योग्य है।

जार्ज वेस्टिंगहाउस

तीन कारणों से मैं जार्ज वेस्टिंगहाउस की कहानी पढ़ने में पाँच मिनट खर्च करने का निमन्त्रण देता हूं:—

(१) यह कि वह एक ऐसा आविष्कारक था जिसने कि लगभग बीस करोड़ रूपये से अपनी कम्पनी की स्थापना की।

(२) यह कि वह एक ऐसा मालिक था जिसके यहाँ पचास हजार कर्मचारी काम करते थे, किन्तु जिन्होंने कभी भी हड़ताल नहीं की।

(३) यह कि वह एक ऐसा आदमी था जो धनी और विख्यात हो जाने पर भी अपने जीवन के अन्तिम दिन तक सादा, मैत्री-पूर्ण तथा उपयोगी बना रहा।

उसकी मृत्यु सन् १९१४ में हुई। उसका एक बड़ा ही मनोरंजक जीवन चरित्र श्री फ्राँसिस ल्यूप ने लिखा है। इंगलिस्तान में दर्जनों मनुष्य उसके व्यक्तिगत मित्र थे।

अधिकांश महान पुरुषों की भाँति वेस्टिंगहाउस का जन्म भी एक निर्धन घराने में हुआ था। अमेरिका के एक छोटे से गाँव में उसका बाप खाती और खेती दोनों का ही काम करता था। उसका जन्म सन १८४६ में हुआ था। यह बात उल्लेखनीय है कि

उसके जन्म से एक वर्ष पूर्व उसका पिता भूसे से अनाज अलग करने वाली मशीन के आविष्कार में लगा हुआ था। इस प्रकार पहले से ही ऐसे संस्कार बन गये थे जो इस ओर इशारा करते थे कि पैदा होने वाला लड़का एक महान आविष्कारक होगा।

स्कूल में जार्ज वेस्टिंगहाउस कभी मन से नहीं पढ़ा। उसके शिक्षक सदैव उसकी शिकायत करते रहते थे। वह एक घुंघले विचारों का लड़ाकू, तथा तेज स्वभाव का नियन्त्रण-हीन लड़का था।

अपनी कक्षा में वह सब से फिसड्डी विद्यार्थी था। उसके माता पिता और शिक्षक हैरान रहा करते थे कि आखिर उसका बनेगा क्या! डारविन, एडीसन, क्लाइव तथा अन्य महान आविष्कारकों की भाँति वह भी "एक भद्दी बत्तख" के रूप में पैदा हुआ और बड़ी अवस्था में पहुंच कर "हंस" बन गया।

जब कभी भी उसका दाँव लगता वह स्कूल से भाग खड़ा होता और अपने चाकू से लकड़ी काट २ कर ऐंजिन बनाता। पता लगाने पर उसका बाप उसे पकड़ लेता और उसके इंजिन को तोड़ डालता। साधारणतया सभी पिता इसी प्रकार के हुआ करते हैं।

अन्त में उसके पिता के साथ काम करने वाले एक कारीगर ने उस पर दया कर के एक छोटा-सा कारखाना एक घास के ढेर में उसके लिये लगा दिया, जहाँ से उसका पिता उसे ढूंढ नहीं सकता था।

चौदह वर्ष की अवस्था में उसने स्कूल छोड़ दिया और अपने बाप के यहाँ ही दो रुपये रोज पर कारीगर के रूप में काम करने लगा। उसका बाप कहा करता कि उसका यह वेतन भी बहुत अधिक है, क्योंकि वह लड़का एक मशीन का आविष्कार करने में प्रयत्न में अपना सारा समय निकाल देता था।

"उसकी एक मात्र इच्छा," उसका परेशान बाप कहा करता, "यह रहती है कि काम न करना पड़े।"

सत्रह वर्ष की आयु में, जब कि अमेरिकन गृहयुद्ध चल रहा था, वह सिपाही के रूप में सैना में भरती हो गया। वह घुड़-सवारों में भर्ती हुआ, क्योंकि उसने सोचा कि चलने से सवारी करने में अधिक सुविधा रहेगी। उसे बड़ी निराशा हुई जब कि उसे इस बात का पता लगा कि अपने घोड़े की देखभाल भी उसी को करनी पड़ेगी।

१६ वर्ष की अवस्था में वह कालेज में भरती होगया, किन्तु वहाँ का वातावरण तथा ढंग तनिक भी अनुकूल न बैठा। "उसे देख कर मुझे बड़ी निराशा होती थी," उसके एक प्रोफेसर ने कहा था। उ सका मस्तिष्क कोई ठोस तथा उत्पादक कार्य करना चाहता था, न कि मृतक भाषाओं और मृतक विचारों को याद करना।

अतएव कालेज के प्रिंसपल की राय से युवक वेस्टिंगहाऊस को वापिस घर भेज दिया गया, जहाँ पहुँच कर कि वह दस्तकार के रूप में काम करने लगा। आठ रुपये रोज पर वह अपने पिता के

यहाँ ही काम करने लगा ।

जब वह बीस वर्ष का था तो सौभाग्य से वह एक रेलवे दुर्घटना में फंस गया । दो डिब्बे उछल कर लाईन पर गिर गये और लाईन दो घन्टे तक रुकी रही ।

तुरन्त ही उसके मस्तिष्क में एक विचार आया जिसके द्वारा वह आध घन्टे में ही उन डिब्बों को उठा कर लाईन पर सीधा खड़ा कर सकता था । उसने अपने इस आविष्कार को पेटेन्ट करा लिया और तत्कालही उसे दो मनुष्य ऐसे मिल गये जिन्होंने उसके पेटेन्ट के पन्द्रह—पन्द्रह हजार रुपये के दो हिस्से खरीद लिये ।

यहाँ से उसके जीवन का यथार्थ आरम्भ हुआ । इसी क्षण से उसका तमाम जीवन रेलवे में उन्नति करने वाले आविष्कार करने में लग गया ।

उन्हीं दिनों मार गुराईट वाकर नामकी एक सुन्दर लड़की से यात्रा करते हुये एक रेल के डिब्बे में भेंट हो गई—उसे अपना सम्पूर्ण सौभाग्य ही रेल-विभाग से प्राप्त हुआ । उसने उस लड़की से प्रेम करके उसके साथ विवाह कर लिया । तब उसकी तमाम असफलताओं और सफलताओं की वह एक अभिन्न साथी बन गई ।

उसी की भाँति, अपने ढंग से, श्रीमती वाकर भी चतुर तथा मौलिक विचार रखने वाली युवती थी । सारे संसार से अधिक वह उसका ध्यान रखता था । जीवन भर वह उसके साथ मिल कर रही और मृत्यु होने पर तुरन्त ही उसके पीछे चल पड़ी ।

विवाह के थोड़े दिनों बाद ही वेस्टिंगहाऊस को एक और रेलवे दुर्घटना देखनी पड़ी । दो गाड़ियाँ आमने-सामने से एक-

दूसरे से टकरा गईं थीं। लाइन बिल्कुल एक सी और सीधी थी। उसने टक्कर का कारण पूछा।

"दोनों ऐंजिनों ने एक दूसरे को देख लिया था, किन्तु फिर भी वे रोके न जा सके," स्टेशन मास्टर ने कहा। "रोकने लायक समय ही नहीं था। गाड़ी कोई एक क्षण में तो रोकी नहीं जा सकती।"

वैस्टिंग हाऊस फिर भी पूछता रहा कि 'क्यों'। उसने पुराने ढङ्ग के हाथब्रेक की प्रणाली का अध्ययन किया और अनुभव किया कि वह प्रणाली बड़ी ही अविश्वसनिय है।

ज्यादा अच्छा ढंग निकाला जाना चाहिये ताकि ड्राईवर अपनी गाड़ी को तुरन्त ठहरा सके। उसने इस समस्या का महिनों तक अध्ययन किया। उसने लम्बी जंजीर का प्रयोग किया तथा भाप का परित्राण किया, किन्तु दोनों ही निरर्थक सिद्ध हुये।

तब एक दिन एक शुभ दुर्घटनाहो गई। एक दिन एक युवती उसके दफ्तर में आई और "जीवित युग" नाम की अपनी मासिक पत्रिका के लिये चन्दा मांगने लगी।

उसने वेस्टिंग हाऊस से भी चन्दा मांगा, किन्तु वेस्टिंग-हाऊस ने कड़वे शब्दों में उससे इनकार कर दिया और वह दुखी होकर लौट चली। वेस्टिंग हाऊस ने देखा कि वह युवती डरपोक सी तथा सज्जन स्वभाव की लड़की है, कड़वे शब्द प्रयोग में लाने के कारण वैस्टिंग हाऊस को पश्चाताप हुआ। उसने उसे वापिस बुला भेजा और आठ शिलिंग चन्दे के दे दिये।

"तुम अपनी पत्रिका केवल कुछेक महिने तक मेरे पास भेजती रहना," उसने कहा।

कुछ दिनों के बाद उस मासिक पत्रिका का पहला अङ्क आया और वेस्टिंग हाऊस, जो कि पहले कभी भी पढ़नेवाला जीव नहीं रहा था, पत्रिकामें एक ऐसे लेख को देख कर आश्चर्य-चकित रह गया जिससे कि उसकी ब्रेक की समस्या ही हल हो गई।

लेख का शीर्षक था "पहाड़ को तोड़ डाला।" यह एक अंग-रेज इंजिनियर द्वारा लिखा गया था और इस लेख में यह बताया गया था कि किस प्रकार 'दबाई हुई हवा' द्वारा पहाड़ तोड़ कर रास्ता बनाया जाता है। इस अंगरेज इंजिनियर ने यह भी लिखा था कि किस प्रकार दबाई हुई हवा एक नाली द्वारा तीन हजार फीट गहरी ले जाई गई और वह अमुक पहाड़ को तोड़ कर बाहर निकल गई।

वेस्टिंग हाऊस प्रसन्नता से चिल्ला उठा ऐसे ही किसी इशारे की तलाश में तो वह था। यदि दबाई हुई हवा पहाड़ तोड़ कर बाहर निकल सकती है तो इसका उपयोग इंजिन के ब्रेकों को लगाने में क्यों नहीं हो सकता है?

उसने अपने और सब कामों को उठा छोड़ा और पहला हवाई ब्रेक बनाने के काम में जुट गया। कुछे-क सप्ताहों में ही उसने एक ब्रेक बना डाला। यह ब्रेक ठीक-ठीक काम देने लगा। एक छोटी सी लहर ने ही उसको संसार के महानतम आवि-ष्कारकों की श्रेणी में बिठा दिया।

यह सच है कि उसे उन तमाम कठिनाइयों का सामना करना पड़ा जिनका कि सामना प्रत्येक अगुआ को करना पड़ता है। रेलवे के अधिकारियों ने सोचा कि वह एक अर्धविक्षिप्त व्यक्ति है। उसके खुद के पिता ने भी किसी भी प्रकार आर्थिक सहायता देने से इनकार कर दिया। उसका बाप हवाई-ब्रेक को बच्चों की खिलवाड़ समझता था।

वेस्टिंग हाऊस एक रेलवे के दफ्तर से दूसरे दफ्तर का चक्कर काटने लगा और अधिकांश मैनेजरों ने उसे एक पागल आदमी समझा। "हवा द्वारा रेलगाड़ी को ठहराना! क्या कलको आसमान से तारे तोड़े जायेंगे।"

अन्त में उसे रेलवे का एक ऐसा अधिकारी मिल गया जिसमें कुछ साहस भी था और बुद्धि भी। इस अधिकारी का नाम मिस्टर कार्ड था।

मिस्टर कार्ड इस बात के लिये राजी हो गया कि वेस्टिंग-हाउस अपने ब्रेक की परीक्षा कार्ड के एक इंजिन पर करले किन्तु शर्त यह थी कि इस परीक्षण का तमाम व्यय वेस्टिंग-हाउस को ही देना पड़ेगा।

इस समय वेस्टिंग हाउस के पास एक पैसा भी न था, किंतु फिर भी उसने शर्त स्वीकार कर ली। तब उसने अपने मित्रों में दौड़ लगाई और जिस-जिस से जो-जो मिल सका उसने ऋणके रूप में ले लिया। इस बार बागले नाम के उसके एक मित्र ने उसकी सबसे अधिक सहायता की।

परिक्षण दौड़ शुरू हुई। इंजन के ड्राईवर का नाम टाटे था। इंजिन की दौड़ शुरू होने से पहले वेस्टिंग हाउस ने टाटे को एक

दस पौंड का नोट भेंट करते हुये कहा—"भई टाटे, "ब्रेक को अपना काम करने का मौका देना।" उस समय वेस्टिंग हाउस के पास कुल यही रुपया था और वह भी उसने किसी से उधार लिया था।

अब यहां पर शुद्ध-भाग्य का मामला पैदा हुआ। परीक्षण गाड़ी को लिये हुये इंजिन तीस मील की रफ्तार से दौड़ रहा था कि अचानक एक टमटम इंजिन के सामने थोड़े ही फासले पर रेलवे लाईन के ऊपर दिखलाई पड़ी। टमटम के कोचवान ने ट्रेन को देख कर अपने घोड़ों में चाबुक मारी किन्तु आगे बढ़ने के बजाय घोड़े एकदम पीछे की ओर हुए और उन्होंने कोचवान को रेलवे पटरियों के बीचो-बीच फेंक दिया।

टाटे ने यह देखते ही हवाई ब्रेक पर हाथ मारा। इंजिन एक-दम रूक गया—पटरियों के बीच चित्त पड़े हुये कोचवान से केवल चार फीट के अंतर पर। अब क्या था, हवाई ब्रेक की ख्याति एक-दम सब ओर फैल गई। उसके बाद लाखों ही आर्डर और लाखों ही दस पौंड वाले नोट वेस्टिंग हाउस को मिले।

सन् १८८१ तक हवाई ब्रेक सर्वत्र मान्य हो गया। पिट्सबर्ग में इसके निर्माण के लिए वेस्टिंग हाउस ने एक बहुत बड़ा कारखाना खोल दिया। ३५ वर्ष की अवस्था होते-होते वह धनी भी हो गया और विख्यात भी।

इसके बाद वह तैंतीस वर्ष और जीवित रहा और प्रतिवर्ष ही उसके मस्तिष्क में नये विचार तथा नये आविष्कार पैदा होते रहे। उसने बिजली का काम तथा गैस ऐंजिन बनाने का काम भी अपने हाथ में ले लिया। जिस प्रकार किसान अनाज पैदा करता है, ठीक उसी तरह वेस्टिंग हाउस नये-नये कारखाने स्थापित करता रहा।

उसके कर्मचारी कहा करते थे, "उस बूढ़े आदमी के संबंध

में कोई भी यह ठीक-ठीक अनुमान नहीं कर सकता कि कल वह कहां फट पड़े।"

सबसे बढ़िया बात उसके संबंध में यह है कि सफलता ने उसे अंधा नहीं बनाया। वह एक सबल इच्छाशक्ति वाला और प्रभावशाली व्यक्ति था, जैसा कि प्रत्येक सबल मनुष्य को होना चाहिये। किन्तु यह सब कुछ होते हुये भी उसने अपना सम्पर्क अपने कर्मचारियों से सदैव कायम रक्खा।

उसके कर्मचारी सदैव उसके प्रति वफादार रहे। जितनी वफादारी उसके कर्मचारियों ने उसके प्रति दिखलाई उससे आधी वफादारी भी यदि उसके साहूकार लोग दिखाते तो यह निश्चित था कि वह अपने व्यापार का आर्थिक नियन्त्रण कभी भी न खोता।

एक बार उसके कर्मचारियों ने केवल आधा वेतन लेने का प्रस्ताव उसके सामने रख दिया, क्योंकि उन्हें पता लगा कि उसे रुपये की आवश्यकता है। एक दूसरे अवसर पर उसके कर्मचारियों ने उसकी सहायता करने के लिये बीस लाख रुपये का चन्दा किया। यह उस समय की बात है जब कि उसके साहूकार लोग उसे बहुत दबाये जा रहे थे।

अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़ और सच्चा, न्यायशील, उत्साही, आशावादी, शक्तिवान और साहसी ऐसा था जार्ज वेस्टिंग हाउस। उसे अपने कर्मचारियों पर गर्व था।

उसने उनको काम भी सिखाया था और उनके साथ काम भी किया था। काम और काम करने वाले आदमी दोनों से ही उसे प्रेम था और जब सन् १९१४ में उसकी मृत्यु हुई तो उसकी अर्थी को उठाने वाले वे आठ साधारण कारीगर लोग थे जिन्होंने उसके साथ चालीस वर्ष से भी ऊपर काम किया था।

८

रावर्ट क्लाइव

एक अपढ़, लफंगा और नीतिहीन व्यक्ति किस प्रकार केवल अपने आत्म-विश्वास, दृढ़ता और परिवेक्षण शक्ति द्वारा संसार की जनसंख्या को गुलाम बनाने में सफल हुआ। इसकी ज्वलन्त कहानी इन पृष्ठों में पढ़िये। भारत आज स्वतन्त्र होने के पश्चात् इस कहानी से विशेष लाभ उठा सकता है। भविष्य के नेता (हमारे युवकों को) इस कहानी का एक-एक वाक्य मनोयोग-पूर्वक पढ़ कर उससे शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये।

राबर्ट क्लाइव

"अंग्रेजी साम्राज्य का निर्माता कौन है?" प्रश्न का उत्तर यह है—"कितने ही मनुष्य, किन्तु क्लाइव सबसे अधिक।"

विशाल भारतीय साम्राज्य, जिसकी जनसंख्या लगभग तैंतीस करोड़ थी—जो कि तमाम अंग्रेजी साम्राज्य की जन-संख्या का तीन चौथाई है—विना अंग्रेजी-सरकार की सहायता के एक आदमी द्वारा प्राप्त किया गया।

यह एक आदमी राबर्ट क्लाइव था—एक निर्धन, उपाधिहीन अशिक्षित देहाती छोकरा। उसने सबसे बड़े साम्राज्य का निर्माण किया और किया भी बिना किसी सहायता के, धन के प्रभाव के अथवा सैनिक शिक्षा के।

उसने कुछे-क मजदूरों और सिपाहियों को अपने पास भरती कर लिया और उन्हें संसार ने ¼ भाग का विजेता बना डाला।

किन्तु जब उसने विजय प्राप्त किया हुआ संसार का यह ¼ भाग इंगिलिस्तान की सरकार को भेंट किया तो उस पर वहां की

संसद ने अनुचित लाभ उठाने का दोषारोपण कर डाला।

यह सत्य है। पूरी कहानी इस प्रकार है:—

क्लाइव का जन्म सन् १७२५ ई० में इंगिलिस्तान के श्रौप-शायर नाम के एक छोटे से गांव में हुआ था। उसका पिता एक असफल व्यक्ति था—आधा वकील और आधा किसान।

लड़कपन में क्लाइव बड़ा ही शरारती था। गांव के तमाम बदमाश लड़कों का नेता। गांव का प्रत्येक व्यक्ति यही कहता था कि उसकी मृत्यु जेलखाने में या फांसी पाकर होगी।

भयंकर शिकारी कुत्ते की तरह वह क्रूर था उसका स्वभाव बड़ा ही भयंकर था। सदैव लड़ता रहता। गांव के छोटे-छोटे लड़कों को संगठित करके और उन्हें अपने साथ लेकर वह गांव के दुकानदारों से इस बात का पारिश्रमिक वसूल करता कि दूसरे लड़कों से वह उनकी रक्षा करेगा।

एक बार वह एक गिरजाघर के ऊपर चढ़ कर उसके नुकीले सिरे पर जाकर बैठ गया। वह एक मोटे ढांचे का लड़का था और जन्म से ही भयंकर साहसी था। पढ़ने-लिखने में तो ऐसे लड़कों का काम ही क्या—महाबुद्धू। शिक्षा प्राप्त करने के लिये उसे कई स्कूलों में भेजा गया, किन्तु कहीं भी उसका चित्त न लगा। अपने सारे कुटम्ब में वह निराला था।

जब वह १८ वर्ष का हो गया तो दुखी और निराश होकर उसके पिता ने क्लर्की की नौकरी करने के लिये हिन्दुस्तान भेज दिया। उसका सारा कुटम्ब और सारा गांव उसे ना पसन्द करता

था और उससे घृणा करता था।

साल भर की लम्बी-यात्रा करने के पश्चात् वह हिन्दुस्तान में पहुंचा। हिन्दुस्तान पहुंचते-पहुंचते उसका तमाम रुपया खर्च हो गया। ऊपर से उस पर ऋण भी लद गया। उसका वेतन आजकल के बाबू से भी कम था।

सब से पहली चीज उसने यह की कि किसी लफंगे के साथ द्वन्द-युद्ध करके विजय प्राप्त की। इससे उसको शान में चार-चाँद लग गये।

दूसरी चीज उसने यह की कि अपनी कम्पनी के गवर्नर को, जिसके पास कि एक अच्छा पुस्तकालय था, अपना मित्र बना लिया। अब आकर क्लाइव ने शिक्षा की आवश्यकता को अनुभव किया और तब से वह अपना सम्पूर्ण अवकाश का समय इसी पुस्तकालय में व्यतीत करने लगा। तमाम महान पुरुषों की भाँन्ति उसने भी आत्म-शिक्षण किया।

उस समय हिन्दुस्तान में फ्रांसीसियों का बोलबाला था। उन लोग भी शक्तिशाली थे, किन्तु अंग्रेजों का विशेष प्रभाव न था। उनको फेरी लगाने वाले मात्र समझा जाता था।

फ्रांसीसियों ने उस छोटे से किले पर धावा बोल दिया जहां पर कि क्लाइव बाबूगीरी कर रहा था और वहां रहनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को पकड़ लिया। किन्तु अकेला क्लाइव दीवार फांद कर बच निकला।

इस घटना ने उसके जीवन को बना दिया। तुरन्त ही वह

सिपाही बन कर सैनिक ज्ञान प्राप्त करने लगा। चार वर्ष पश्चात् वह कप्तान हो गया। उस समय उसने एक बड़ा अद्भुत और वीरता का कार्य किया—कम्पनी के कप्तान की हैसियत से नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप से। उसने दो सौ गोरे सिपाही और तीन सौ भारतीय सिपाहियों को साथ लेकर फ्रांसीसियों को निकाल बाहर कर डालने का निश्चय कर डाला।

उसे सफलता मिली। उसने एक फ्रांसीसी किले पर आक्रमण किया और उसे जीत लिया। तीन हजार आदमियों की एक दूसरी सेना उसके विरुद्ध लड़ने को भेजी गई, किन्तु उसने रात्रि के अन्धकार में इस सैना पर धावा बोल दिया और उसे तितर-बितर कर डाला।

तब दस हजार आदमियों की एक और सैना उसके विरुद्ध लड़ने को भेजी गई, किन्तु खाइयों में बैठ कर वह और उसके सिपाही पचास दिन तक लड़ते रहे और अन्त में एक अचानक धावा बोल कर विजय प्राप्त की।

उसने नौ सौ आदमियों की सैना और तैयार कर ली और फ्रांसीसियों को हिन्दुस्तान से निकाल दिया। हांलाकि वह सिर्फ एक पच्चीस-वर्षीय साधारण सा बाबू ही था, किन्तु अब वह एक योग्यतम अंग्रेज सेनापति बन गया था।

२७ वर्ष की अवस्था में वह वापिस इंगिलिस्तान को लौटा और वहाँ उसने मिस मासक लाइन एक सुन्दरी लड़की से, जो कि उसकी प्रेमिका भी थी, विवाह कर लिया।

उसकी शान देख कर उसके कुटम्ब के तमाम सदस्य हैरान थे। "आखिरकार," उसके बाप ने बड़बड़ाते हुए कहा—"इस बदमाश छोकरे में भी कुछ चीज निकली।"

अब क्लाइव एक धनाढ्य पुरुष बन चुका था। उसने अपने पिता के सम्पूर्ण ऋण को चुका कर कुटम्ब की जायदाद को बचा लिया।

दो वर्ष तक वह बड़ी शान का जीवन व्यतीत करता रहा और स्वछन्द रूप से अपने पैसे को खर्च किया। संसद के लिये भी उसका चुनाव हो गया, किन्तु शीघ्र ही उसकी पार्टी के उसके विरुद्ध हो जाने से वह संसद की सदस्यता से अलग कर दिया गया।

अब उसकी समझ में यह आने लगा कि इंगिलिस्तान साधारणतया उन लोगों के लिये जो, उसकी शान और बड़प्पन को पैदा करते हैं, क्या किया करता है।

थोड़े दिनों में ही उसका सब धन खर्च हो गया और तीस वर्ष की आयु होते-होते वह हिन्दुस्तान को फिर लौटा। इस समय वह ईस्टइंडिया कम्पनी का एक गवर्नर था।

कलकत्ता पहुंचने पर उसे "कालकोठरी" की दुर्घटना का समाचार मिला। एक बंगाली नवाब ने १४६ गोरों को कुल बीस फीट क्षेत्रफल वाली एक छोटी सी कोठरी में बन्द कर दिया। रात भर बन्द रहने के बाद जब सुबह वह कोठरी खोली गई तो कुल २३ मनुष्य जीवित बचे।

क्लाइव ने हुक्म आने की प्रतीक्षा न की। उसने तुरन्त काम किया। उसने तीन हजार आदमियों की एक छोटी सी सेना इकट्ठी करके नवाबके ऊपर आक्रमण बोल दिया। नवाब की सेना में ५८ हजार सैनिक थे। इस १६ और १ के अद्भुत अनुपात का घमासान युद्ध हुआ।

क्लाइव पीछे नहीं हटा। इस युद्ध का उसने अपनी एक पुस्तक में साहित्यक तथा आकर्षक भाषा में सजीव वर्णन किया है। अन्त में उसने नवाब की सेना को नष्टभ्रष्ट करके विजय प्राप्त की। नवाब की सेना में मोर्चे पर हाथी रहते थे। क्लाइव ने उनको मुंह मोड़ कर भागने और अपने ही आदमियों को कुचल डालने का मार्ग ढूढ़ निकाला।

इतिहास में यह युद्ध प्लासी के युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है।

नवाब को पकड़ लिया गया और तुरन्त ही फाँसी पर लटका दिया गया। उसी क्षण से हिन्दुस्तान अंग्रेजों का गुलाम बना दिया गया।

क्लाइव यदि चाहता तो भारत का सम्राट बन बैठता। अपनी विजय का लाभ स्वयं ही उठाता। वह अपना राजवंश स्थापित करता और अपना अलग झन्डा फहराता। किन्तु उसने ऐसा नहीं किया। शायद यह विचार ही कभी उसके मस्तिष्क में पैदा नहीं हुआ।

प्लासी के युद्ध में विजय होने से वह बंगाल के खजाने का मालिक बन गया। उसमें से पचास लाख रुपये उसने अपनी जेब में डाले।

४००० आदमियों की एक दूसरी सैना उसके विरुद्ध युद्ध करने को आई। उसने अपने तीन हजार आदमी भिड़ा कर उस सैना पर भी विजय प्राप्त कर ली। इस युद्ध से भी उसे बड़ा भारी आर्थिक लाभ हुआ।

डच लोगों ने एक तीसरी सैना इससे लड़ने के लिये भेजी किन्तु अपने भारतीय तथा गोरे सैनिकों की सहायता से कलाइव ने उस पर भी विजय प्राप्त की। इस युद्ध के बाद वह हिन्दुस्तान का मालिक बन गया।

वह फिर इंगलिस्तान को लौटा और वहां उसका बड़ा शानदार स्वागत हुआ। उसे लार्ड बना दिया गया। इंगलिस्तान का उस समय का प्रधान मन्त्री पिट उसे "जन्म जात सैनापति" कह कर पुकारता था। वह शान के साथ बर्कलेस्क्वायर में रहता रहा और देहात में भी उसने दो शानदार महल बना लिये। यह सब कुछ वह केवल चौतीस वर्ष की आयु में करने में सफल हुआ।

उसकी वार्षिक आमदनी अब लगभग साढ़े ६ लाख रुपया थी। किन्तु उसने धन की कभी चिन्ता नहीं की। वह बड़ा ही उदार था। उसने सबसे पहला काम यह किया कि अपने माता-पिता और सम्बन्धियों को ८००००० रुपये दे डाले। इंगलिस्तान में जितने भी उसके गोत्र के आदमी बसते थे, ढूढ़-ढूढ़ कर उन सब को उसने कुछ न कुछ जरूर दिया।

कई वर्षों तक वह एक महाराजा की भांति रहता रहा। वह पार्लयामेंट का मेम्बर भी हो गया। वह शान से रहता था और

सदैव अपने मित्रों की सहायता करता रहता था। यह दिन उसके जीवन के सबसे अधिक आनन्द-दायक दिन थे।

किन्तु कुछ दिनों बाद ही हिंदुस्तान में नया बखेड़ा उठ खड़ा हुआ। उससे फिर हिन्दुस्तान जाने की प्रार्थना की गई, जो उसने स्वीकार कर ली। वहाँ पहुँच कर उसने अनुभव किया कि भारतीय लोगों पर अत्याचार किये जा रहे हैं। लूट-खसोट और रिशवत खोरी का बाजार उसने खूब गर्म देखा।

इस बार उसने यह सिद्ध कर दिखाया कि योग्य सेनापति होने के साथ वह एक योग्य राजनैतिज्ञ भी था। सबसे पहला काम उसने यह किया कि रिशवतखोरी का मटियामेट कर दिया। कितने ही कमीने स्वभाव के आदमियों को दफ्तरों से बर्खास्त कर दिया। उसने सच्ची सरकार की स्थापना की और सब काम न्याय-पूर्वक होने लगे।

एक नवाब ने उसको १००००० रुपये की थैली भेंट की, और उसने यह सब रुपया ईस्टइंडिया कम्पनी के कम वेतन पाने वाले लोगों के कोष में दान दे दिया।

अब की बार जब वह इंगिलिस्तान को लौटा तो उस पर चारों ओर से आक्रमण होने लगे। जिन रिशवतखोर कमीने लोगों को उसने दफ्तरों से बर्खास्त कर दिया था, उन्होंने इंगिलिस्तान लौट कर उसके विरुद्ध असत्य दोषारोपण करके विज्ञापन द्वारा लोगों को भड़का रक्खा था।

अखबार वाले उसको गालियां देते थे। राजनैतिक नेता लोग उसको बुरा-भला कहते थे। सब से भयंकर बात यह हुई कि पार्लयामेन्ट के सामने उसे पेश हो कर बाकायदा सफाई देनी पड़ी।

"यह लोग तो मेरे साथ अपराधी जैसा व्यवहार कर रहे हैं मानों मैं कोई चलता-फिरता उठाईगीरा हूँ," उसने अपने कुछेक मित्रों से कहा। यह मुकदमा बहुत दिनों तक चलता रहा जिसमें उसे बहुत अपमानित भी होना पड़ा, किन्तु अन्त में पार्लियामेंट ने उसे बरी कर दिया। आगे के लिये उसे चेतावनी दे दी कि वह ऐसे कुकर्म न करे। खुले आम उसकी भर्त्सना की गई—उसकी जो हिंदुस्तान—जैसी सोने की चिड़िया को अंग्रेजी साम्राज्य के अन्दर खींच लाया था।

इस मुकदमे ने उसका दिल तोड़ दिया। वह बड़ा दब्बू बन गया। उसका स्वास्थ्य गिर गया। उसे एक भयंकर बीमारीने पकड़ लिया। इससे छुटकारा पाने के लिए उसने अफीम खानी आरंभ कर दी, किन्तु इस मादक द्रव्य ने धीरे-धीरे उसकी मानसिक शक्ति को नष्ट करना शुरू कर दिया। एक दिन मन्त्रिमण्डल का एक अफसर बड़ी ही जल्दी में उससे मिलने आया। यह सन् १७७४ की बात है।

"अमेरिका में एक विद्रोह खड़ा हो गया है," उस अफसर ने क्लाइव से कहा। "हमें आपकी सहायता की आवश्यकता है। अंग्रेजी साम्राज्य खतरे में है। आप तुरन्त अमेरिका चले जाँय।"

क्लाइव हंसा और इनकार कर दिया। "बहुत देर से आये," उसने कहा "मैं तो अब कहीं दूसरी जगह जाने वाला हूँ।" इस वार्तालाप के थोड़े दिनों बाद ही उसने अपने आपको गोली मार कर आत्म-हत्या कर ली।

क्लाइव में कितने ही दोष थे—हां, कितने ही शानदार दोष। किन्तु उसी ने तथा उसी की तरह के दूसरे देशवासियों ने अङ्गरेजों को हिन्दुस्तान जैसी "सोने की चिड़िया" तथा अन्य विभूतियां दिलवाईं।

९

जेम्स वॉट

यह उस व्यक्ति की कहानी है जिसने भाप से चलने वाले इंजिन का आविष्कार किया । कोमल स्वभाव का और लगभग अशिक्षित होते हुए भी यह लड़का अपने शुद्ध अध्यवसाय और लग्न द्वारा संसार को ऐसी महान देन दे सका। बाद के जीवन में, अन्य महान पुरुषों की भाँति, इसे भी आत्म-शिक्षण करना पड़ा। जीवन में कितने ही उतार-चढ़ाव आये, कई बार भूखों मरने और ऋणी बन जाने की नौबत पहुँच गई । किन्तु दृढ़ता पूर्वक सब का सामना करते हुये वह अंत में सफल हुआ। जेम्स वॉट का जीवन-चरित्र नवयुवकों में जीवन का संचार करेगा ।

जेम्सवॉट

यह वह कहानी है जिसे कि प्रत्येक पिता अपने बच्चे को सुनाये और प्रत्येक कारखानेदार अपने कारीगरों को सुनाये।

जेम्सवाट ने भाप के इञ्जिन का आविष्कार किया था। उस ने भाप के युग का प्रादुर्भाव किया। उसका जीवन-वृतान्त रोमांचकारी भी है और शिक्षाप्रद भी। संक्षेप में वह इस प्रकार है:—

जेम्स वाट का जन्म सन १७३६ ई० में ग्रीनोक में हुआ। उन दिनों न कारखाने बने थे, न रेलें, न भाप से चलने वाले जहाज, न मशीनें, न निशुल्क विद्यालय, न डाक घर और न स्वतंत्र व्यवसाय की सुविधा।

वह एक कोमल स्वभाव का लड़का था। उसे बहुत ही कम शिक्षा मिल पाई। अधिकांश शिक्षा उसकी मां ने ही उसे दी।

अच्छी पुस्तकों का वह बड़ा उत्साही पाठक था। केवल १५ वर्ष की अवस्था में ही उसने "वेदान्त के मूल सिद्धांत" का अध्ययन कर डाला था।

उसके पिता और पितामह दोनों ही चतुर मैकेनिक (मशीनों की मरम्मत आदि करने वाले) थे। जैमी ने भी अपने बाल्य काल का अधिकांश समय तीन कामों में ही खर्च किया।

(१) खिलौना। मशीनरी बनाना।

(२) गंभीर पुस्तकों का अध्ययन करना।

(३) जंगलों में घूमना।

उसे प्रयोग करने में आनन्द आता था। एक बार उसने चाय की केतली का अध्ययन करने में एक घंटा खर्च कर दिया। उस ने भाप की उठाने की शक्ति का परीक्षण करने के लिये केतली के मुंह को पूरा-पूरा ढक दिया। उसकी चाची ने, जिसने उसको यह प्रयोग करते हुये देख लिया था, उससे कह ही दिया कि वह भाप के साथ खिलवाड़ करके व्यर्थ ही अपना समय नष्ट कर रहा है।

१७ वर्ष की आयु में उसकी माता का देहान्त हो गया और एकाएक ही उसका बाप भी निर्धन हो गया। तब जेम्सने ग्लासगो जाकर चश्मों की मरम्मत करने का एक छोटा सा रोजगार कर लिया।

१६ वर्ष की आयु में वह घोड़े पर सवार होकर लन्दन गया। यह उसके जीवन की सब से पहली महत्व पूर्ण घटना थी।

यह बात सन १७५५ की है। इस यात्रा में १२ दिन लगे। घोड़े की पीठ पर की गई यह यात्रा बड़ी खतरनाक और कष्टप्रद यात्रा थी।

आज वाट की कृपा से हम लन्दन से ग्लासगो तक केवल आध घन्टे में जा सकते हैं। वाट लन्दन में कुछ दिन तक ठहरा और विज्ञान सम्बन्धी औजार बनाने का काम एक छोटे से कारखाने में करता रहा। फिर वह ग्लासगो को लौट गया।

ग्लासगो विश्व विद्यालय के वैज्ञानिक औजारों की मरम्मत

करने के लिये उसे बुलावा पहुंचा। यह उसके जीवन की दूसरी महा घटना है। कई प्रोफेसरों ने उसके काम की सराहना की। विश्व विद्यालय में ही उन्होंने उसको काम करने का एक कमरा दे दिया। यहां पर वाट विद्यालय के औजारों को भी ठीक करता रहा और बाहर के ग्राहकों के लिये मछली पकड़ने वाले कांटे भी बनाता रहा।

जब वाट की अवस्था २३ वर्ष की हुई तो उसके जीवन की तीसरी महान घटना उपस्थित होने का अवसर पैदा हुआ। वह यह कि उसे विश्व विद्यालय की विज्ञान शाला में भाप के ऐंजिन का ऐक पुराना ढांचा मिल गया। हालांकि यह भाप का इंजन चालू हालत में नहीं था, और चालू किये जाने पर भी यह काम न देता। किन्तु इसने वाट को आकर्षित कर लिया और उसने तभी से भाप का अध्ययन आरम्भ कर दिया।

आरम्भ में ही उसे बड़ी भयंकर कठिनाई का आमना करना पड़ा। वह यह कि उन दिनों भाप के सम्बन्ध के अधिकांश लेख फ्रांसीसी और इटेलियन भाषाओं में ही निकला करते थे। अंग्रेजी में इस विषय पर बहुत ही कम लिखा जाता था। वाट ने क्या किया? उसने तुरन्त फ्रांसीसी और इटालियन भाषाओं का अध्ययन आरम्भ कर दिया और जब तक लेखों के पढ़ने योग्य उसका ज्ञान न हो गया तब तक वह धैर्य रक्खे रहा।

सन १७६४ ईस्वी में उसने एक सहायता करने वाली पत्नी से विवाह कर लिया। उसका व्यापार अच्छी तरह चल रहा था। उसके नीचे १६ कर्मचारी काम करने लगे थे और उसे प्रति

वर्ष १०००० रुपये का लाभ होने लगा था। अब उसका ध्यान रात दिन भाप में ही लगा रहता। सन १७६५ ईस्वी में उसने अपने एक मित्र को लिखा था, "मेरा सम्पूर्ण ध्यान आजकल भाप का इंजिन बनाने में लगा हुआ है। उसने एक भद्दा सा ऐंजिन बना भी डाला किन्तु उसने काम न दिया। उसने दूसरा इंजिन बनाया और वह भी निकम्मा रहा। यही परिणाम तीसरे और चौथे इंजिन का भी निकला।

उस समय तक संसार में ऐसा कोई कारखाना न बन पाया था जिसमें बिलकुल सही सिलेण्डर ढाला जा सके। इससे वाट को और भी अधिक कष्ट हुआ। इसकी चेष्टा में रत रहने के कारण उसका ध्यान अपने व्यापार की ओर से हट गया। उस पर ऋण हो गया और तब उसके जीवन की चौथी महान घटना हुई— उसकी भेंट कैरनलोह-कार्यालय के संस्थापक डाक्टर रौबर्ट से हो गई।

डाक्टर रौबर्ट पहला आदमी था जिसने भाप में रुपया लगाने का साहस किया। उसने वाट को २०००० रुपये देकर उसे ऋण से मुक्त कराया। बदले में वाट ने डाक्टर रौबर्ट को भाप के इंजिन के लाभ में दो तिहाई का हिस्सा दिया।

वाट के स्वभाव में व्यापारीपन तनिक भी न था। उसे खरीदने और बेचने के काम से घृणा थी। वह तो एक सीधा-सादा आविष्कारक था—बस।

इस बीच में वह अस्वस्थ भी रहा। निराशा की बौखलाहट ने उसके सर में दर्द पैदा कर दिया। किन्तु फिर भी वह धैर्य रक्खे रहा और सन १७६६ ईस्वी में उसके पहले आविष्कार की रजिस्ट्री हुई।

५ जनवरी सन १७६६ ईस्वी को वाट और आर्कराइट ने भाप का प्रथम इंजिन और कातने वाली पहली मशीन बनाने

के लिये सरकारी पेटेन्ट कार्यालय से कागजात प्राप्त किये। लंकाशायर का जन्म होने की यही तिथि है।

अब वाट के मस्तिष्क में ठीक प्रकार का भाप का इञ्जिन बनाने का विचार भी जागृत हो गया, किन्तु वह इसे किसी भी कारखाने में न बनवा सका। ढांचे के बाद ढांचा बिगड़ता रहा। वैकिंग का ठीक इन्तजाम न होने की वजह से उसे पुराने हैट तथा कार्क इस्तेमाल करने पड़े। परिणाम स्वरूप उसके सब नमूने रिसते थे। उसे कोई भी ऐसा कारीगर न मिल सका जिसमें भाप का इञ्जिन बनाने लायक पर्याप्त बुद्धि हो।

उसके ऊपर और भी अधिक ऋण हो गया। उसके मित्र डाक्टर रौबर्ट का भी दिवाला निकल गया। और सबसे अधिक भयंकर बात यह हुई कि बच्चा जनने के दौरान में उसकी पत्नी का देहान्त हो गया। तब उसके जीवन की पांचवीं महान घटना हुई—उस का परिचय मैथ्यू बोल्टन से हो गया। यह सन १७७३ ईस्वी की बात है।

मैथ्यू बोल्टन का अपना कारखाना बरमिंघम में लगा हुआ था। उस कारखाने में दीवार घड़ियां बना करती थीं। मैथ्यू अपने समय का योग्यतम व्यापारी और विचारशील पुरुष था। वह फ्रांकलिन, वैजवुड तथा प्रीस्टले—जैसे विख्यात व्यक्तियों का मित्र भी था। उसमें उच्चकोटि की व्यवस्थात्मक योग्यता थी। व्यापारिक क्षमता रखने वाला एक प्रतिभा शाली व्यक्ति था वह। वह एक सज्जन और सर्वगुण सम्पन्न था।

डाक्टर रौबर्ट की तरफ बोल्टन के तीन हजार रुपये निकलते थे। उनकी अदायगी में बोल्टन ने वाट के पेटेन्ट का १३ हिस्सा खरीद लिया। इस प्रकार सन १७७४ ईस्वी में वाट और उसका भाप का इंजिन ग्लासगो से बरमिंगघम तक दौड़ा। रास्ते में

देखने वाले हरेक व्यक्ति ने इस इंजिन की खिल्ली उड़ाई।

इस वर्ष वाट को ३०००० रु० देखभाल करने के काम के सम्बन्ध में प्राप्त हुए। इस रकम का कुछ हिस्सा उसने डाक्टर रौबर्ट को दे दिया। उसका अपना निजी खर्च कुल ३० रुपया साप्ताहिक ही था। रूसी सरकार की ओर से १५००० रुपया वार्षिक वेतन का प्रस्ताव उसके पास आया। आराम का सरकारी काम था। किन्तु उसने अस्वीकार कर दिया। वह बोल्टन और अपने ऐंजिन से ही चिपका रहा।

इसी समय उसके एक कर्मचारी ने उसके ऐंजिन का नक्शा चुरा कर किसी दूसरी फर्म को बेच दिया। परिणाम स्वरूप प्रतियोगिता आरम्भ हो गई। आत्म रक्षा के हेतु वाट को अपने पेटेन्ट की रजिस्ट्री की मियाद सात वर्ष और बढ़ानी पड़ी। इस मियाद की बढ़ोत्तरी के विरुद्ध विख्यात वक्ता बरके ने इंगलिस्तान की पार्लियामेंट में एक जोरदार भाषण दिया, किन्तु इसका प्रभाव कुछ भी न हुआ।

तब वाट के जीवन की छटी महान् घटना हुई। वाट की भेंट विलकिनसैन से हो गई। विलकनसन अच्छे सिलेन्डर बनाना जानता था। परिणाम स्वरूप शीघ्र ही वाट के भाप के इंजिनों ने व्यवहारिक और उपयोगी मशीन का रूप ग्रहण कर लिया।

पम्पिंग इंजिन बनाने के लिए कोयलो की खानों से आर्डर आने आरम्भ हो गये। प्रथम वर्ष में बोल्टन ने ६५ इंजिन बनाने का हुक्म दिया। अब भाप का इंजिन एक सफल आविष्कार बन गया।

सन १८०२ ईस्वी में वाट के एक मित्र ने उसको लिखा, "घोड़ों से दौड़ने वाली गाड़ी के बजाय इंजिन से दौड़ने वाली गाड़ी द्वारा डाक क्योंन ले जाई जाय? क्यों न लोहे की पटरियाँ बिछा कर रेल की सड़क तैयार की जाय?" भाप से चलने वाले

इंजिन की दौड़ के लिए रेल की सड़क के सम्बन्ध में यह सबसे पहला सुझाव था।

अगले वर्ष पल्टन ने एक इंजिन बनाने का आर्डर दिया, और उसके द्वारा सन १८०७ ईस्वी में हडसन नदी में सब से पहला भाप से चलाने वला जहाज दौड़ने लगा। अब तक कितने ही अन्य कारखानेदार मैदान में उतर आये थे और उनके साथ प्रतियोगिता कर रहे थे। जोर शोर की मुकदमें बाजी शुरू हो गई अन्त में वाट और वोल्टन इन मुकदमों को तो जीत गये किन्तु इन मुकदमों में खर्चा बहुत बैठा। लन्दन के एक वकील को ही १००००० रुपये फीस के देने पड़े।

वाट और वोल्टन १५ वर्ष तक साझीदार रहे। तदोपरान्त वह काम से अलग हो गये और दोनों के पुत्रों के मध्य साझेदार चलती रही। वाट के दो लड़के थे और बोल्टन का एक।

सन १८२४ तक वोल्टन और वाट ने ११६४ भाप के इंजिन बना डाले, जिनकी कि शक्ति २५९४५ घोड़ों की शक्ति के बराबर थी। आज तक बने हुये भाप के इंजिनों की शक्ति बीस करोड़ घोड़ों की शक्ति से कुछ अधिक है। यह शक्ति ४॥ अरब मनुष्यों की शक्ति के बराबर होती है।

वृद्धा अवस्था में वाट को सम्मान प्राप्त हुआ। उसके पास धन भी था और यश भी। सन १८१९ में जब उसकी मृत्यु हुई तब सारा सभ्य संसार उसके नाम से परिचित था।

उसकी स्मृति में वेस्ट मिनिस्टर अबे में एक स्मारक खड़ा किया गया। लार्ड ब्राधम ने निम्नोक्त शब्द उसकी कब्र पर लिखे। यह शब्द सदैव स्मरण किये जाते रहेंगे—"उसने अपने देश के साधनों को बढ़ाया...मनुष्य की शक्ति में वृद्धि की..."

जेम्स वाट की यह कहानी है। अध्यवसायी उन्नति-इच्छुक व्यक्ति इसे कभी नहीं भूल सकता।

१०

ऐलियास होवे

यह उस मनुष्य का जीवन वृतान्त है जिसने सीने की मशीन का आविष्कार किया। यह व्यक्ति जीवन पर्यन्त निर्धनता, मूर्खता, बीमारी और मृत्यु के विरुद्ध युद्ध करता रहा। उसने अपनी लग्न और प्रयत्न को न छोड़ा और मरने से कुछ ही समय पूर्व संसार को वह चीज दे गया जिसके लिये संसार उसका सदैव ऋणी रहेगा। ऐसे लग्न वादी पुरुष की जीवन गाथा से हमारे नवयुवकों को लाभ उठाना चाहिये।

ऐलियास होवे

यह ऐलियास होवे का जीवन वृतान्त है जिसने सीने की मशीन का आविष्कार किया। यह बहुत सम्भव है कि आप अपने बारे में यह सोच रहे हों कि हमें बड़े दुख और कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है, इसलिये भी मैं इस कहानी को कह रहा हूं ताकि आपको यह मालूम हो सके कि असली दुख क्या होते हैं।

ऐलियास होवे ने लगभग सम्पूर्ण मनुष्य जाति का परोपकार किया। जो भी मनुष्य कपड़े पहनता है उसे होवे का कृतज्ञ होना चाहिये।

अन्त में तो उसे ख्याति और धन दोनों ही प्राप्त हुये, किन्तु उसका जीवन निर्धनता, मूर्खता, बीमारी और मृत्यु के विरुद्ध लगातार युद्ध करने में ही बीता।

कुछ भी हो—यहां तक कि भूखों मारना भी—उसके जीवन के कार्य को करने से उसको न रोक सका। जैसा कि आप देखेंगे उसकी जीवन गाथा हम सभी में उत्साह पैदा करने वाली एक कहानी है। इससे प्रगट होता है कि एक दृढ़ प्रतिज्ञ मनुष्य एक नये विचार को लेकर संसार का कितना परोपकार कर सकता है।

ऐलियास होवे का जन्म अमेरिका में एक अंग्रेज कुटम्ब में सन १८१६ में हुआ। उन दिनों सीने की मशीनों का आविष्कार नहीं हुआ था। इसका विचार तक किसी के मस्तिष्क में नहीं आया था। किसी स्त्री ने ऐसी चीज के बारे में सोचा तक न था।

ऐलियास का बचपन किसी विशेष लाड प्यार में नहीं बीता। वह आठ बच्चों में से एक था। उसका बाप एक निर्धन व्यक्ति था, जो चक्की चलाने का काम करता था और जिसे कुटम्ब के दस आदमियों का भरण-पोषण करना पड़ता था।

ऐलियास दुबला पतला छोटा सा लड़का था, जितना अच्छा उसका मस्तिष्क था, उसके मुकाबले में उसका शरीर बहुत ही निर्बल था। वह लंगड़ा भी था, और कोमल स्वभाव भी। ६ वर्ष की अवस्था में ही उसे काम शुरू करना पड़ा। हर शनिवार को वह अपने बाप के मील में जाकर अपने भाइयों और बहनों की चमड़े के फीते में तार के दांते लगाने के काम में सहायता करता। शायद इसी कामने उसके मनमें सीने की मशीन का विचार पैदा किया होगा।

जब वह १६ वर्ष का हुआ तो लावल शहर को चला गया, क्योंकि उसने सुना था कि उस शहर में बड़ी आश्चर्य-जनक मीलें और बड़ी-बड़ी मशीनें लगी हुई हैं।

दो वर्ष तक वह एक कपास के मील में काम करता रहा और उसके बाद उसे एक मशीनों के कारखाने में जगह मिल गई। यह काम उसके बिल्कुल अनुकूल पड़ा, क्योंकि वह एक जन्म जात कारीगर था।

२१ वर्ष की अवस्था में उसने विवाह कर लिया। इतनी छोटी अवस्था में उसे विवाह नहीं करना चाहिये था। थोड़े

दिनों में ही वह तीन बच्चों का बाप बन गया—आमदनी कम और खाने वाले बहुत। वह एक छोटे से गन्दे मकान में रहते थे, और कंजूसी का यह हाल था कि एक रुपये से दो रुपये का काम निकालते थे।

उस का काम भी बड़ा ही सख्त था—इतना सख्त कि दिन भर काम करने के बाद थक जाने से उससे अपना रात का भोजन भी नहीं खाया जाता था। एक बार उसने अपनी पत्नी से कहा था, "मेरी इच्छा है कि मैं बिस्तर में ही पड़ा रहूं—और सदा के लिये पड़ जाऊं।"

जब वह २५ वर्ष की आयु का था तो एक दिन उसके एक साथी कारीगर ने उससे कहा—"यदि कोई मनुष्य सीने की मशीन का आविष्कार कर सके तो सचमुच यह कितनी महान बात होगी।"

संयोग-वश कही हुई इस बात ने होवे के मस्तिष्क को जाग्रत कर दिया। वह संसार के योग्यतम आविष्कारकों में से एक था, किन्तु वह स्वयं इस बात को नहीं जानता था। उसे अपनी खुद की शक्तियों का पता न था।

पहले उसने बैठ कर अपनी पत्नी को कपड़ा सीती हुई अवस्था में ध्यान-पूर्वक देखा। तब उसने एक मशीन बनाई जिसमें एक ऐसी सुई काम करती थी जिसके दोनों सिरे नुकीले थे और बीच में छेद था। वह एक ऐसी मशीन बनाने की चेष्टा कर रहा था जो उसकी पत्नी की बिलकुल नकल हो। इसमें उसे असफलता मिली।

अचानक ही एक नया विचार उसके मस्तिष्क में पैदा हुआ हाथ को सिलाई की नकल क्यों की जाय? क्यों न सीने का एक नया ढंग आविष्कृत कर लिया जाय जिससे सीने की मशीन का बनाना सम्भव हो सके।

तुरन्त ही उसके मस्तिष्क में एक के बजाय दो डोरे प्रयोग में लाने की योजना उत्पन्न हुई। उसने शटल के साथ एक मुड़ी हुई सुई जिसमें कि सिरे के पास छेद बना हुआ था, आविष्कृत कर डाली।

एक क्षण में ही सारी समस्या हल हो गई। इससे पहले किसी ने भी ऐसी चीज का विचार तक न किया था। उसने एक व्यवहारिक तथा ठीक ठीक काम देने वाली सिलाई की मशीन का अविष्कार कर डाला।

आनन्द मग्न होकर उसने अपनी नौकरी से स्तीफा दिया और अपने बाल-बच्चों को लेकर अपने महान आविष्कार को पूरा करने के लिए अपने पिता के घर पहुंच कर उसने एक छोटा सा कारखाना बना लिया और रुपया बचाना शुरू कर दिया ताकि वह कोई पुरानीलेथ मशीन खरीद सके।

तभी एक दिन उसके कारखाने में आग लग गई और सब कुछ स्वाहा हो गया। सौभाग्य से होवे अपने मूल्यवान मशीन के नमूने को बचा सका, किन्तु और सब कुछ भस्म हो गया।

ऐसे मौके पर एक कोमया—लकड़ी बेचने वाले ने होवे से कहा—"मैं तुम्हें अपने घर में कारखाना लगाने की जगह और १००० रुपये नकद दूंगा, यदि तुम अपनी मशीन के पेटेन्ट में मुझे आधा हिस्सा देना स्वीकार करो।

होवे राजी हो गया। उसने नया कारखाना लगा लिया और ६ महीने बाद एक मशीन तैयार हो गई। उस मशीन से दो ऊनी सूट सिये गये, एक कोयमा लकड़ी बेचने वाले के लिए और दूसरा खुद होवे के लिये।

उसका काम पूरा हो गया। अब उसने विचार करना शुरू कर दिया। वह इस सत्य को नहीं जानता था कि संसार में प्रत्येक नये विचार और प्रत्येक नयी चीज को अपना स्थान बनाने के

लिये उन्हीं लोगों के विरुद्ध लड़ना पड़ता है जो लोग कि उन विचारों और उन वस्तुओं द्वारा सब से अधिक लाभान्वित होते हैं।

आविष्कार के बाद विक्रय कला की आवश्यकता पड़ती है, किन्तु होवे इस कला से पूर्ण अनभिज्ञ था।

विक्रेता का भाव ग्रहण करके वह अपनी सीने वाली मशीन को लेकर बोस्टन के दर्जियों के पास गया। उन्होंने मशीन की परीक्षा ली। उन्होंने इसकी प्रशंसा की, किन्तु साथ ही उन्होंने कहा:—"हम इसे नहीं चाहते, इससे हमारा व्यापार नष्ट हो जायगा।"

वह अपनी मशीन को एक दूकान से दूसरी दुकान तक ले जाता रहा, किन्तु एक आदमी भी इसका एक पैसा भी देने को तैयार न हुआ। इससे कोयला लकड़ी बेचने वाले को बड़ी निराशा हुई और वह साझेदारी से अलग हो गया। उसने होवे से कहा कि वह अपना कारखाना उसके घर से कहीं अन्यत्र ले जाय।

होवे के पास न धन था और न कोई उसका मित्र। अपने बाल बच्चों का गुजारा करने के लिये वह एक रेलवे में इंजिन ड्राइवर बन गया।

उसके बाद वह बीमार पड़ गया। उस की पत्नी भी बीमार पड़ गई। यदि कुछेक कृपालु पड़ोसी उसकी सहायता न करते तो होवे का सारा कुटुम्ब समाप्त हो जाता और उसी के साथ

उसकी मशीन आदि भी।

जब उसका स्वास्थ्य ठीक हो गया तब वह इतना धन इकट्ठा करने में समर्थ हो सका कि जिससे जहाज का टिकट लन्दन के लिये खरीद सके। उसका विश्वास था कि इंगिलिस्तान उसके साथ अमेरिका से अधिक अच्छा बर्ताव करेगा।

यहां पर भी उसने गलती की, उसकी सहायता करनेवाला कोई न मिला। केवल एक आदमी ने उसकी पहली मशीन ४००० रुपयेमें खरीद ली और साथ ही हौवे को ५० रुपये मासिक पर नौकर रख लिया।

हौवे ने ८ महीने तक इस आदमी के यहां काम किया, किंतु उसे कड़े स्वभाव का पाया और इसलिये उसकी नौकरी छोड़ दी। उसका सब रुपया खर्च हो चुका था। कई दिन ऐसे गुजरे कि उसे और उसके बाल-बच्चों को लन्दन के विशाल नगर में भूखों रह कर काटने पड़े।

इंगिलिस्तान को उसने अपनी सीने वाली मशीन भेंट करनी चाही थी, किन्तु इंगिलिस्तान ने उसे अस्वीकार कर दिया।

पेट की ज्वाला ने उसे अमेरिका लौट जाने के लिये बाध्य किया। उसने अपनी मशीन का नमूना काफी रुपये लेकर गिरवी रख दिया और उन रुपयों से अपनी पत्नी और बच्चों को अमेरिका वापिस भेज दिया। कुछ महीनों के बाद वह खुद भी लौट गया क्योंकि उसकी पत्नी ने लिखा था कि मुझे तपेदिक हो गया है। और मैं अब चन्द दिनों की हूं मेहमान हूँ।

जब वह लौट कर न्यूयार्क पहुँचा तब उसकी जेब में कुल ५) रुपये थे। किन्तु उसकी यात्रा अब भी २५० मील बकाया थी। इसलिये उसने न्यूयार्क के एक कारखाने में जाकर कुछ दिनों नौकरी करके थोड़ा सा रुपया कमाया, ताकि उसके द्वारा टिकट खरीद कर वह अपने घर तक पहुँच सके। जब वह घर पहुँचा तब उसकी पत्नी का देहान्त हो चुका था।

इससे उसका दिल टूट गया, किन्तु फिर भी उसने धीरज बाँधे रक्खा। उसने एक नया नमूना फिर तैयार किया। विल्स नाम के एक व्यापारी ने उसे कुछ रुपया ऋण के रूप में दे दिया। उसने कुछ और मशीनें बनाईं और अन्त में उन्हें बेचने में सफल हुआ।

धीरे-धीरे मशीनों की मांग बढ़ने लगी और बारह वर्ष में वही भूखा हौवे एक करोड़पति व्यक्ति बन गया। सन् १८६७ ई० में उसे पेरिस की एक वैज्ञानिक संस्था की ओर से सोने का मेडल भेंट किया गया और एक सम्मान का पदक भी।

कठिनाइयों, भूख और हानियों को तो उसने सहन कर लिया किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि प्रसिद्धि और अमीरी उससे सहन न की जा सकीं। सम्मान पदक प्राप्त होने के कुछ सप्ताह पश्चात ही उसकी मृत्यु हो गई।

वह अपना काम पूरा कर चुका था। उसने जीवन भर भयंकर युद्ध किया और अन्त में सफलता प्राप्त की। हौवे का इस प्रकार का जीवन वृतान्त है।

११

साईरस एच० के० कर्टिस

डेढ़ आने की संपत्ति से व्यापार आरंभ करके डेढ़ करोड़ की संपत्ति के मालिक की जीवन-गाथा पढ़िये। गली-गली अखबार बेचने वाला आज दो सौ से अधिक छापेखानों का मालिक और संसार के सर्वश्रेष्ट और सर्व-मान्य आधे दर्जन समाचार पत्रों का संचालक है। इस पुरुष के जीवन-चरित्र का पठन हमारे उत्साही युवकों में जीवन का संचार करेगा।

साईरस एच० के० कर्टिस

यह एक ऐसे पुरुष की कहानी है जिसने डेढ आने के साथ अपना जीवन आरम्भ किया और जिसके पास अब लगभग डेढ करोड़ की सम्पत्ति है।

यह ऐसे मनुष्य की गाथा है जिसने अखबार नवीसी और विज्ञापन कला दोनों का ही मान दंड ऊंचा उठाने के लिए सब से अधिक कार्य किया।

इस समय उसकी अवस्था अस्सी वर्ष से भी ऊंची है। उसका नाम साईरस एच० के० कर्टिस है। वह कई दैनिक और साप्ताहिक पत्रों का मालिक है।

"उसका पत्र सटरडे इवनिंग पोस्ट," जो कि लन्दनमें लगभग आठ आने का बिकता है. वही अमेरिका में लगभग दो आने का बिकता है। यह पत्र लगभग पचीस लाखकी संख्या में प्रति सप्ताह छपता है। यह संसार के सर्वश्रेष्ट प्रकाशनों में से एक है।

उसका दूसरा पत्र "लेडीज होम जनरल" प्रतिमाह बीस लाख छपता है और इसका मूल्य लगभग पांच आने प्रति है।

केवल विज्ञापन से ही उसकी आमदनी लगभग बीस करोड़

करोड़ रुपया वार्षिक है। नहीं, यह ग़लत छपा हुआ नहीं है, बीस करोड़ रुपया वार्षिक। और सब से बड़ी बात यह है कि उसके विज्ञापनों में शराब का, गन्दी दवाइयों का अथवा और किसी प्रकार का कोई गन्दा विज्ञापन नहीं छपता। वह संसार का सबसे बड़ा सफल प्रकाशक है। उसका प्रकाशित साहित्य न अश्लील होता है और न ठगीपूर्ण। उसके विज्ञापनों में से कोई भी वाहियात नहीं होता।

उसका मान दंड किसी भी अन्य प्रकाशक से ऊंचा है और इसी प्रकार उसका मुनाफा भी ऊंचा है।

उसके पूर्वज सन् १६३१ ईस्वी में इंगिलिस्तान से आकर अमेरिका में बसे थे।

एक दिन जब कि उसकी आयु १२ वर्ष की थी पटाखे लाने के लिये उसने कुछ पैसे अपनी मां से मांगे। "यदि तुम्हें पैसे चाहिये," वह बोली, "तो जाकर अपने पिता की भांति कमा कर लाओ।"

उस समय उसकी जेब में कुल डेढ आना था। उसने बाजार में जाकर तीन अखबार खरीदे और गली के कोने पर खड़े होकर उन्हें बेच डाला। शाम को उसके पास साढे चार आने हो गये। वह एक चुस्त और ठिगना लड़का था किन्तु शरीर उसका दुबला पतला था। थोड़े दिनों में ही अखबार बेचने में वह बड़ा निपुण हो गया।

अखबार बेचते २ जब उसे एक महीना हो गया तो उसके मस्तिष्क में एक व्यापारिक-विचार आया। दौड़ कर वह एक

अखबार के मैनेजर के पास गया और उससे कहा—"यदि आप कल सुबह तक मेरा उधार मान लें तो मैं आपका अखबार अधिक संख्या में लेकर नदी पार बेचने चला जाऊंगा।"

मैनेजर सहमत हो गया। बालक साईरस अखबार लेकर सब से पहिले ही नदी पार करके अपना अखबार बेचने लगा। शीघ्र ही उसके सब अखबार बिक गये। थोड़े दिनों बाद ही इस काम से उसकी आमदनी दस रुपया प्रति सप्ताह होने लगी। उन दिनों इतना आधे आदमी का वेतन था।

अगले वर्ष जब कि उसकी अवस्था १३ वर्ष की थी, उसने छोटा-सा एक अपना अखबार निकाल डाला। यह एक चार पेजी लड़कों का अखबार था और इसका नाम था, "यंग अमेरिका"। आरम्भ से ही इसकी बिक्री सौ अखबार प्रति सप्ताह होने लगी। १२ रुपये में वह एक हैन्ड प्रेस खरीद लाया था और अपना काम वह ठीक ठीक चला रहा था कि तभी आग ने लग कर उसका मोटयामेट कर दिया। "यंग अमेरिका" भस्मी-भूत हो गई।

इसके बाद ६ वर्ष तक वह एक अत्तार की दुकान में नौकरी करता रहा। इस समयमें कोई उल्लेखनीय बात नहीं हुई। सम्भवतः उसे अपने स्वभाव और योग्यता का स्वयं ही पता न था।

तीस वर्ष की अवस्था में वह फिर छापेखाने की ओर लौटा। बोस्टन के एक मृतक अखबार में उसे विज्ञापन प्राप्त करने वाले का कार्य मिल गया। एक दिन उस पत्र के निराश मालिक ने ढाई हजार रुपये में अपना अखबार बेचने का प्रस्ताव उसके सामने रख दिया। कर्टिशने अस्वीकार कर दिया। "अच्छा तो,"

उस पत्र संचालक ने कहा, "तुम इसे मुफ्त ही ले लो।" कर्टिश ने इसे ले तो लिया किन्तु अगले पांच वर्षों में वह प्रत्येक क्षण यही कहता रहता कि अच्छा होता यदि मैं इस अखबार को न लेता। यह अखबार बिल्कुल निकम्मा सिद्ध हुआ। इसलिए २५ वर्ष की अवस्था में उसने इसको ठोकर मारी, अपनी शादी की और फिलाडेलफिया को चला गया।

विवाह ने उसको उसकी प्रथम सफलता दिलवाई। उसने 'ट्रिब्यून' नाम का एक दूसरा समाचार पत्र निकालना शुरू कर दिया था। एक दिन उसकी पत्नी ने उसका ध्यान उस पत्र के स्तम्भ "स्त्रियों का पृष्ठ" की ओर आकर्षित किया।

"यह किसने लिखा है?" उसने पूछा। "मैंने लिखा है", कर्टिशने उत्तर दिया। "यह तो बड़ा ही अस्वाभाविक है" उसकी स्त्रीने कहा।

"अच्छा" बुद्धिमान कर्टिश ने कहा, "शायद तुम ठीक कह रही हो। क्या तुम एक पृष्ट इस विषय पर स्वयं लिख दोगी?"

"जरूर लिखूंगी" उसने उत्तर दिया। पृष्ठ उसने लिखा। बहुत शीघ्र ही वह स्तम्भ उसके पत्र का सर्वश्रेष्ट स्तम्भ बन गया। थोड़े दिनों में ही इस स्तम्भ का विषय सारे पत्र का विषय बन गया और तब इस पत्र का नाम बदल कर "लेडीज होम जनरल" (महिलाओं का घरेलू पत्र) कर दिया गया। आज उस पत्र की वितरण-संख्या १०००००० है और स्त्रियों सम्बन्धी सब पत्रिकाओं में अग्रणी है।

अब कर्टिश ने अनुभव किया कि उसके मूल धन के मुकाबिले में उसका व्यापार बहुत अधिक बढ़ गया है। जितना रुपया बैंक उसे उधार देती थी उससे बहुत अधिक की आवश्यकता उसे थी।

ऐसे समय जिस आदमी ने उसकी सहायता की उसका नाम एन. डब्लू. अईयर था जो कि एक विज्ञापन प्राप्त करने वाला ऐजेन्ट था। अईयर सबसे पहला व्यक्ति था जिसने कर्टिश की योग्यता को पूरी तरह समझा। उसने न केवल ७००००० रुपये कर्टिश को उधार दे दिये, बल्कि एक कागज को मील के नाम और भी ५००००० रुपये का एक पर्चा लिख दिया। केवल १८ महीने के अन्दर अन्दर ही कर्टिश ने सारा ऋण अदा कर दिया। इस शुभ काम का परिणाम यह हुआ कि एन. डब्लयू अइयर कम्पनी आज संसार की सबसे बड़ी और धनी विज्ञापन कर्त्ती संस्था है।

कर्टिश की सफलता का एक रहस्य यह है कि जो कुछ वह प्राप्त कर लेता है उसके बारे में अधिक सोचा विचारी में वह अपना समय नष्ट नहीं करता, उसकी नीति यह है कि जो कुछ उसने अभी तक नहीं प्राप्त किया है आगे बढ़ कर उसे प्राप्त करे। वह अपनी सफलता की ओर तनिक भी ध्यान नहीं देता।

इसलिये जैसे ही "लेडीज होम जनरल" अपने पैरों पर खड़ा हुआ, उसने एक दूसरा छोटा सा साप्ताहिक पत्र "सटरडे इविनिंग पोस्ट" नाम का खरीद डाला। कर्टिश ने यह पत्र उसके संस्थापक बैंजामिन फेकलिनसे ३००० रुपये में खरीद लिया। उस

समय यह पत्र मृतकावस्थामें था,किन्तु कर्टिशका विश्वास पुनर्निर्माणमें बहुत अधिक है। ऐसे पत्रको खरीदनेके लिये जिसके पास नाम के प्रतिरिक्त और कुछ न था, प्रत्येक व्यक्ति ने उसकी खिल्ली उड़ाई। किन्तु कर्टिश के मस्तिष्क में एक नया विचार आया। सन १८६७ ईस्वी में एक अखबार वाले द्वारा लिखी हुई "कैलू मटके" के नाम की पुस्तक ने उसे बहुत आकर्षित किया। यह पुस्तक व्यापार की "प्रेम गाथा" थी। इससे उसकी आंखें खुल गई। इससे उसे पता लगा कि वाणिज्य व्यापार संसार के सब से अधिक मनोरंजक तथा महा उपयोगी कामों में से एक काम है। उसने अपनी नयी पत्रिका को व्यापार सम्बन्धी पत्रिका बना डाला।

आरम्भ में यह बिल्कुल ही ठप्प हो गई। किसी प्रकार भी आगे न बढ़ती थी। इसके ऊपर वह अपना रुपया खोता चला गया और उसका लगभग सारा धन व्यय हो गया। पत्रिका जब आगे बढ़ी, उससे पहले लगभग पचास लाख रुपये वह इसके ऊपर खर्च कर चुका था।

आज यह संसार का सब से अधिक लाभदायक प्रकाशन है। अपने ढंग का यह एक ही पत्र है। एक पृष्ट के विज्ञापन के यह पत्र लगभग पचीस हजार रुपये लेता है। यदि कोई विज्ञापन दाता आधा विज्ञापन देता है तो यह स्वीकार करने से इनकार कर देता है। केवल एक अंक में इस के अन्दर तीस तीस लाख रुपये के विज्ञापन छपे हैं। अकेले विज्ञापनों से ही इसकी वार्षिक आय दस करोड़ रुपये से भी अधिक हो जाती है।

इसके पश्चात कर्टिश ने "कन्ट्री जैन्टिलमैन" नाम का एक छोटा सा धनहीन किन्तु स्वाभिमानी पत्र खरीद डाला। पत्र तो यह बहुत पुराना था. किन्तु इसके ग्राहकों की संख्या बहुत ही कम थी। उसने अकथ प्रयत्न करके इसकी ग्राहक संख्या बढ़ानी शुरू की, यहां तक कि एक दिन इस पत्र की वितरण संख्या प्रति सप्ताह छः लाख हो गई। इसे अपने पैरों पर खड़ा करके उस ने डेली लेजर नाम के एक पत्र को खरीद डाला। यह पत्र भी बहुत पुराना और जीर्ण शीर्ण अवस्था में था।

मैं समझता हूँ कि 'लेजर के खरीदे जाने का कारण यह है कि जब वह लन्दन की यात्रा को गया था तो किसी ने उसको 'जौन डेलाने का जीवन चरित्र' पढ़ने को दिया था। संसार प्रसिद्ध 'टाईम्स' अखबार के सम्पादकों में डेलाने सब से बड़ा था। वह एक स्वतंत्र स्वाभाव का पुरुष था। वह एक 'आँधी' था।

उसके जीवन चरित्र ने कर्टिश पर बहुत प्रभाव डाला। उसने अपने यहां काम करने वाले प्रत्येक सम्पादक और संवाद दाता के पढ़ने के लिए डेलाने के जीवन चरित्रका एक एक प्रति खरीद डाली।

'लेजर' को उस ने आगे बढाना शुरु किया। आज यह पत्र अमेरिका के एक एक नगर और कस्बे में बिकता हैं। इंगिलिस्तान के बड़े २ समाचार पत्र कितने ही समाचार इसमें से लेकर उद्धरित करते रहते हैं 'लेजर' के अतिरिक्त कर्टिश बड़े २ दो सौ से अधिक छापेखानों का मालिक है। इन छापेखानों की लागत ही लगभग २ ढाई करोड़ रुपया हैं। उस के यहां प्रति दिन

चार सौ टन कागज खर्च होता है। इतना कागज एक पूरी रेल गाड़ी में आता है। केवल उसके प्रमुख कार्यालय में काम करने वाले सम्पादक, संवाददाता आदि कर्मचारियों की संख्या ही तीन हजार से ऊपर है। शारीरिक बनावट में कर्टिश छोटे कद का है। उस की आँखों में दया और ढंग से शान्ति टपकती है। उसकी दाढ़ी पुराने ढर्रे की है —— छोटी और एकसी।

वह एक ऐसा मनुष्य है जिस को किसी श्रेणी में नहीं रक्खा जा सकता। वह वृद्ध भी है और युवक भी। वह उदार भी है और अनुदार भी। वह किसी भी आर्थिक-सम्प्रदाय से जड़ित नहीं है।

जीवन को वह एक गम्भीर वस्तु समझता है, किन्तु उसे हर किस्म की दिखावट, नेगाचार और छिछोरपन से घृणा है। यदि कभी वह किसी सभा आदि में जाता है तो बिना संकोच के किसी भी पीछे की कुर्सी पर जा बैठता है। अपने पिता की भांति वह भी बड़ा ही सादा और दयावान है।

मित्रों की गोष्ठी में सभी लोग उसे प्यार करते हैं और उस के ज्ञान और अनुभव के अपार भंडार को देख कर आश्चर्य-चकित होते रहते हैं। कई वर्ष हुए कितनी ही दावतों में मुझे उसकी बगल में बैठने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा। अमेरिका की एक कल्ब में वह और मैं साथ-साथ भाषण देते रहे। मैंने उसे जीवन के आनन्द से भरपूर पाया। पत्रकार-जगत में वह आश्चर्य पूर्ण ढग से संतुलित और बुद्धिमान है। वह सचमुच ही बड़ा सज्जन पुरुष है। न वह किसी को किसी को झूठी धमकी देता है और न व्यर्थ बकवास करता है।

जहाँ तक उसकी आदतों का सम्बन्ध है, सो वह काम भी करता है, हास-परिहास भी करता है, सिगरेट भी पीता है गाता बजाता भी है, पढ़ता है, यात्रायें करता है खेलता है और गिर-

आधर में जाता है। उसे नाव चलाने और गोल्फ खेलने का शौक है। बच्चों से वह प्रेम करता है।

जब उसे कोई कठिन समस्या हल करनी होती है तो वह ताश लेकर बैठ जाता है और थियोडोर की भांति अकेले आदमी का खेल खेलता रहता है।

किसी योजना को ठीक ठीक रूप-रेखा बन जाने पर वह उस की तफसील के चक्कर में नहीं पड़ता। उस का मुख्य काम उसके ख्याल के अनुसार यही है कि वह उन्नति के मार्गों के सम्बन्ध में अपना परामर्श देता रहे।

राजनीति में वह भाग नहीं लेता किन्तु अमेरिका की भलाई के लिए किसी भी अन्य अमेरिकन के मुकाबिले में उस का प्रभाव अधिक है।

किये हुए अहसान को वह कभी भी नहीं भूलता। बहुत पहले, जब कि उस के अखबार की दशा अच्छी नहीं थी, अल्लन नाम के एक छापेखाने वाले ने उ.. की कुछ सहायता की थी और छपाई के पैसे लेने से इनकार कर दिया था। बीस वर्ष बाद कर्टिश ने सुना कि किसी दूर शहर में अल्लन बड़ी दयनीय दशा में रह रहा है। तुरन्त वह चल खड़ा हुआ और डेढ़ हजार मील के फासले पर अल्लन को एक टूटी सी बरसाती में रहते हुये पाया। कर्टिश ने उसे एक चेक दिया। उस चेक ने अल्लन के तमाम आर्थिक संकट को जीवन भर के लिये समाप्त कर दिया।

ऐसा साइरस कर्टिश रहा है—एक आदमी जिस ने पत्रकार कला और विज्ञापन कला के मान दंड को ऊँचा उठाने के लिए संसार के किसी भी अन्य मनुष्य से अधिक कार्य किया है।

१२

जार्ज एफ० जॉनसन

प्रतिभाहीन साधारण से व्यक्ति ने, २०० रुपया मासिक का एक मामूली सा फोरमैन होकर भी, किस प्रकार १५ हजार मजदूरों से चलने वाला और ५० करोड़ रुपये वार्षिक के जूते बनाने वाला कारखाना सफल बनाया—उसी का जीवन वृतान्त इन पृष्ठों में लिखा गया है। स्वतन्त्र भारत के युवक इससे अवश्य लाभ ग्रहण करेंगे।

जार्ज ऐफ़० जॉनसन

संसार के सब से बड़े और सबसे अधिक लाभदायक जूतों के कारखाने का यह वृतान्त है। व्यवसाय-कुशलता और सुन्दर व्यवस्था-शक्ति की यह एक कहानी है।

न्यूयार्क से १०० मील के फासले पर अमेरिका में एक सुन्दर घाटी है। उस घाटी में रहने वाले लोगों ने उसका नाम "न्याय की घाटी" रक्खा हुआ है।

इस घाटी में अगल-बगल में दो कस्बे हैं जिनमें एक का नाम 'जॉनसन' और दूसरे का नाम "ऐन्डी कौट" है।

घाटी में लगभग ५००० मनुष्य निवास करते हैं, जिनमें से १५००० हजार दो बड़े-बड़े जूतों के कारखानों में, जो एन्डीकौट-जॉनसन कम्पनी की सम्पत्ति हैं, काम करते हैं।

दोनों कारखानों में प्रतिदिन ८१००० जूतों के जोड़े तैयार होते हैं।

सन् १९२३-२४ में बनाये गये एक वर्ष के जूतों का मूल्य पचास करोड़ रुपये था।

इन आश्चर्यजनक आँकड़ों को देख कर आपको पता लगेगा कि इस घाटी में रहने वाले लोग काम करना जानते हैं। यदि यह आँकड़े न दिये गये होते तो आप लोग यही समझते कि वहां रहने वाले लोग सिवाय खेल-कूद के और कुछ नहीं करते।

घाटी में एक भी गन्दा मोहल्ला नहीं है। सफाई का बड़ा ध्यान रक्खा जाता है। परिणाम स्वरूप लोगों का स्वास्थ्य बहुत

ऊम्दा रहता है। कम्पनी का मकान एक भी नहीं है। अधिकाँश कुटुम्ब खुद अपने- अपने घरों के मालिक हैं। मकानात लकड़ी के बने हुये हैं और चमकदार रंगों से रंगे हुये हैं।

दोनों कस्बों के बीच में एक सुन्दर पार्क (घास का मैदान) बना हुआ है। इस पार्क के अंदर ही तैरने के लिये एक तालाब बना हुआ है, जिस में कोई भी व्यक्ति स्वतन्त्रता पूर्वक तैर सकता है। इसके पास में ही बच्चों के तैरने के लिए एक छोटा तालाब बना हुआ है।

दोनों कस्बों के निवासियों के लिये एक नांच-गृह और एक खेलने का मैदान भी है। चूंकि कारखाने साढ़े चार बजे बन्द हो जाते हैं, इस लिए प्रति शाम को दो तीन खेल बड़े मजे से खेले जा सकते हैं।

एक घुड़दौड़ का मैदान भी है, जिस में प्रति शनिवार को दोपहर के बाद घोड़े की दौड़ें होती हैं। कभी कभी इन घुड़-दौड़ों के अवसर पर एक एक लाख मनुष्य तक एकट्ठे हो जाते हैं।

एक घास के मैदान के बीच एक क्लब घर भी है। इस क्लब घर के चारों ओर फूलों के गमले लगे हुए हैं। यह एक सामाजिक स्थान है जहाँ प्रत्येक मनुष्य एक दूसरे से मिलता है। क्लबघर के अंदर एक निःशुल्क पुस्तकालय स्काउटों के लिए विशेष कमरे, ताश खेलने के कमरे तथा दावत खाने खिलाने के कमरे भी हैं। प्रति शाम को इस क्लब घर में बड़ी चहल पहल रहती है।

मनोरंजन ! सामाजिक मिलन ! शिक्षण ! खेल ! गायन और वाद्य ! "न्याय की घाटी" में चारों ओर यही चीजें मुख्य रूप

से दृष्टिगोचर होती हैं। किन्तु फिर भी यह आमोद प्रमोद करने वाले लोग प्रति दिन ८१००० जूतों के जोड़े बना कर तैयार कर देते हैं।

यहां के रहने वालों का विश्वास है कि आमोद, प्रमोद जीवन की उतनी ही आवश्यक वस्तुयें हैं जितना कि भोजन।

हास्य, प्रेम, और प्रसन्नता उन्हे उतने ही आवश्यक मालूम देते हैं जितने कि मशीन, भाप की शक्ति और व्यापार व्यवस्था।

इसी घाटी में एक मनुष्य ऐसा रहता है जो इस सम्पूर्ण सफलता का संस्थापक है। उस का नाम जॉर्ज ऐफ० जोनसन है।

पार्क के समीप एक सुन्दर घर में उसका निवास स्थान है सदैव वह बगीचे के सामने होता है। वह अपने कर्मचारियों के बीच स्वछन्द रूप से विचरण करता है। कोई भी कर्मचारी दफ्तर के अन्दर उससे भेंट कर सकता है। यदि वह अपने दफ्तर के अदर न हो तब या तो वह घुड़दौड़ के मैदान में होगा अथवा नाच घर में या फिर खेल के मैदान में।

साधारणतया वह या तो बच्चों की भीड़ के बीच में या कर्मचारियों की भीड़ में दिखलाई पड़ता है। लोग उसकी सब मामलों में सलाह लेते रहते हैं। वे कहते हैं—"जौर्ज ऐफ. हमारे कुटम्ब का पिता है।"

प्रत्येक बालक "जौर्ज ऐफ०" कह कर उसे सम्बोधन करता है। यह व्यक्ति प्रति वर्ष लगभग पचास करोड़ रुपये का व्यापार करता है और फिर भी इसे पतंग उड़ाने तथा गुड़िया बनाने का अवकाश मिल जाता है।

गत "मई दिवस" को इस घाटी के मजदूरों ने २०००० आदमियों की एक शानदार परेड की। और इसका नेतृत्व किस ने किया ? जौज ऐफ० ने। जैसी कि आशा थी वह मजदूरों के जत्थे के आगे आगे चल रहा था।

"तुम्हें मालूम होना चाहिये कि मैं इन लोगों को प्यार करता हूँ." जब यह लोग घुड़दौड़ के मैदान में पहुंच कर बैठ गये और अगली घुड़दौड़ की प्रतीक्षा करने लगे, तब इस बीच में उसने अपने एक मित्र से कहा। "और मुझे आशा है कि इन लोगों में से भी कुछ लोग मुझे प्यार करते हैं।"

जौर्ज ऐफ० कोई दानी पुरुष नहीं है न वह प्रतिभाशाली है और न उसमें कोई अन्य असाधारणता है। वह एक समझदार सुहृदय वाला पुरुष है जो व्यस्त प्रसन्नचित्त मनुष्यों के मध्य रहना पसन्द करता है।

इस घाटी में न सन्देह का वातावरण है और न कमीनेपन का। "वर्ग-विभाजन" भी वहां नहीं है, क्योंकि वहां पर वर्ग ही नहीं है। प्रत्येक मजदूर को हिस्सेदार बनाने का अवसर प्राप्त है और प्रत्येक अर्थवादी स्वयं काम करता है।

जार्ज एफ० से लेकर नीचे दरवान तक तमाम १५ हजार मनुष्यों का समूह "ऐन्डीकौट जॉनसन कर्मचारियों की संस्था' का सेवक है।

प्रत्येक काम खुले वातावरण में किया जाता है। कोई भी मनुष्य उस काम के सम्बन्ध में अपनी राय दे सकता है। वहां कोई भी हकूमत नहीं करता। सब कर्मचारियों को यही अनुभव होता है कि वहां सारी जगह ही उनकी अपनी है।

न्याय और मनोरंजन सब का भेद इसी में है। बुद्धिमान

पुरुष इसी प्रकार की प्रभाव शालीनता और सफल कर्मन्यता में विश्वास करते हैं—वह सफल कर्मन्यता जो मनुष्य को पहला स्थान देती है और उनके हृदय, मस्तिष्क और जेबों को हरा भरा करती है।

जार्ज एफ० जॉनसन तमाम जूता बनाने वालों में सबसे अधिक सफल व्यक्ति है। सन् १८८५ में वह एक छोटे से जूतों के कारखाने में फोरमैन था। उस कारखाने का दिवाला निकलने ही वाला था। उसका वेतन केवल ५४ रुपया प्रति सप्ताह था।

इस दिवालिया कारखाने का प्रमुख साहूकार, जिसका नाम एन्डीकौट था, बोस्टन में रहता था। एक दिन वह अपने कारखाने में यह देखने के लिये गया कि अब भी कुछ बन सकता है या नहीं। वह वहां के फोरमैन जार्ज एफ० जॉनसन से मिला। जॉनसन की समझदारी और सचाई ने उसे बड़ा प्रभावित किया।

"पैसा तो मेरे पास है नहीं," जॉनसन ने कहा, "किन्तु मैं इस कारखाने को सफल अवश्य बना सकता हूँ। वेतन की मुझे चिन्ता नहीं है, किन्तु इस कारखाने की आधी हिस्सेदारी आप मुझे ५ लाख रुपये में बेच दें और इस रुपयेका मैं आपको कागज लिखे देता हूँ।"

यह एक आश्चर्यजनक प्रस्ताव था। एक प्रकार से यह वाहियात और जोखम से भरा हुआ भी था, किन्तु ऐन्डीकौट एक बुद्धिमान पुरुष था इसलिये वह रजामन्द हो गया। उसने जॉनसन के ऊपर ५ लाख रुपये का एक तरह से दांव लगा दिया। वह छोटा सा कारखाना आगे बढ़ना शुरू हुआ। इसने यहां तक उन्नति की कि एक दिन जॉनसन १५ हजार आदमियों के कुटम्ब का पिता बन गया।

उसके कारखाने के कर्मचारी लोग अब अपने ही बनाये हुये दो कस्बों में रहते हैं, जिनके नाम ऐन्डीकौट और जॉनसन है।

इन कर्मचारियों को हम केवल नौकर नहीं कह सकते। वे साझीदार हैं। ठीक जिस तरह ऐन्डीकौट ने जॉनसन को उससे पैसा लिये बिना ही अपना हिस्सेदार बना लिया था, ठीक उसी भांति जॉनसन ने अपने कर्मचारियों को अपना हिस्सेदार बना लिया है।

एक साल कारखाने में नौकरी कर लेने के बाद प्रत्येक कर्मचारी को मुनाफे में हिस्सा प्राप्त करने का अधिकार हो जाता है। प्रति वर्ष 'विशेष हिस्सों पर ७ प्रतिशत और 'साधारण' हिस्सों पर १० प्रतिशत का लाभ बांटा जाता है। इसके बाद लाभ का जो हिस्सा बचता है वह बराबर कर्मचारियों और मालिकान के बीच में बांट दिया जाता है।

प्रति वर्ष कम्पनी यह निर्णय करती है कि इस मुनाफे को वह नकद देगी अथवा साधारण हिस्सों के रूप में देगी। साधारणतया लाभ का रकम एक कर्मचारी को उतनी मिल जाती है जितनी कि वह ६ महीने में कमाता है।

जार्ज ऐफ०. इन दो कस्बों का पिता, बहुधा वहां के निवासियों के सामने भाषण भी देता रहता है—सीधे-सादे और स्पष्ट भाषण जो बड़े प्रभावशाली होते हैं। उदाहरण के रूप में उसके कुछेक वाक्य यहां उद्धरत किये जाते हैं:—

"संसार की अन्य किसी भी बड़ी से बड़ी वस्तु के मुकाबिले में मैं आप लोगों का विश्वास प्राप्त करना अधिक मूल्यवान समझता हूं।"

इस कम्पनी में यदि तुम अधिक अच्छा काम करोगे तो उसका लाभ भी तुम्हीं को पहुँचेगा। उस लाभ को तुमसे छीनने वाला कोई भी नहीं है।"

"इस संसार में हम में से प्रत्येक व्यक्ति ऐसे मनुष्य की खोज में रहता है जो हमारा सर्वश्रेष्ठ उपयोग कर सके।"

"यह काम मेरे ऊपर मत छोड़ो कि सुस्त और काहिल आदमी को मैं छांट कर बाहर निकालूं। तुम्हें यह काम स्वतः ही करना चाहिये।"

"बिना अपने वेतनों को घटाये हम लोग अपने उत्पादन की लागत घटा सकते हैं, यदि हम अनुत्पादक लोगों को छांट-छांट कर अलग करने में पूर्ण सहयोग से काम लें।"

"मैं कोई भी काम अपने लिये करने को तुमसे नहीं कह रहा। मैं केवल इतना ही कह रहा हूँ कि अपनी खुद की खातिर जितना अच्छे से अच्छा तुमसे किया जा सके, करो और जितना बढ़िया तुम आज कर सकते हो, कल उससे भी बढ़िया करोगे।"

"इस प्रजातन्त्री व्यापार में हममें से प्रत्येक अपने आप से पूछे—हमारे यहां किराये के टट्टू कितने मजदूर हैं, जिनके बिना हमारा काम चल सकता है, कितने आदमी ऐसे हैं जो भार रूप और व्यर्थ का खर्चा बने हुये हैं ?"

"बोझा मत बनो! कोई भी रुकावट मत पैदा होने दो। अपनी पतवार उठाकर व्यापार-रूपी नाव को खेने में सहायक बनो। पानी को पीछे की ओर मत जाने दो। अपने आपको योग्य सिद्ध करो। अपनी शक्ति भर कार्य करो। पुराने व्यापार को फलने फूलने का अवसर प्रदान करो।"

१३

किंग सी० गिलट

बोतलों के कार्क बेचने वाला एक साधारण मनुष्य किस प्रकार उच्चकोटि का एक आविष्कारकर्ता, निर्माता तथा सफल व्यापारी बन गया ?—यही इस गाथा का सारांश है। इसे पढ़ कर युवक अवश्य ही प्रोत्साहन का अनुभव करेंगे।

किंग सी० गिलट

"तुम्हारे ख्याल में सर्वश्रेष्ठ विक्रेता कौन है ?" बरमिंघम के एक मित्र ने मुझ से पूछा।

इस प्रश्न का उत्तर देना आसान नहीं था, किन्तु एक क्षण विचार करने के बाद मैंने उत्तर दिया—'गिलट' पतले ब्लेड वाले उस्तरे का आविष्कारकर्ता।'

मेरी राय में वही सर्वश्रेष्ठ था, क्योंकि वह एक विक्रेता भी है, एक आविष्कारक भी, एक आदर्शवादी भी, एक निर्माता और साहूकार भी।

"इसमें कोई सन्देह नहीं कि रुपया उसने खूब कमाया। उसने ५ भिन्न भिन्न व्यापारों में सफलता प्राप्त की—ऐसा दूसरा कौन है ?"

गिलट के असाधारण जीवन वृतान्त को बहुत ही कम लोग जानते हैं। वह सन १८०४ में लन्दन में रहता था और बोतलों के कौर्क बेचता फिरता था। उस समय उसका उस्तरा बिल्कुल

असफल और पूर्ण अज्ञात था।

उसका चित्र संसार के प्रत्येक नगर में मौजूद है—बल्कि संसार की प्रत्येक गली में—क्योंकि प्रत्येक उस्तरे के ब्लेड पर खुदा हुआ है।

इस समय उसकी कम्पनी का मूल्य लगभग १० करोड़ रुपया है। उसकी वार्षिक आय करीब २॥ करोड़ रुपया है।

उसके ३ बड़े बड़े कारखाने । एक इंगिलिस्तान में, एक कनाड़ा और तीसरा अमेरिका में। उसने एक बिल्कुल नये प्रकार के उस्तरे का आविष्कार किया और अच्छी कीमत लेकर करोड़ों आदमियों ने इसे बेचा।

गिलट का पूरा नाम किंग केम्प गिलट है। दिसविशाकौनसिन के जंगल के एक छोटे से कस्बे में उसका जन्म हुआ। उसका पिता एक गिरता—पड़ता व्यापारी था, जो कभी ऊपर हो जाता था और कभी नीचे।

जब गिलटकी अवस्था सत्रह वर्ष की हुई, तो आग लग जाने के कारण उसके बाप का सब कुछ स्वाहा हो गया। विवश हो कर गिलट को अपनी जीविका स्वयं ही उपार्जन करनी पड़ी।

२१ वर्ष की अवस्था में वह एक विक्रेता बन गया। वह जाग्रत स्वप्न देखने वाला एक मनुष्य था और उसके मस्तिष्क में नये नये विचार आते रहते थे।

मेरा परिचय उसके साथ सन १९६४ ई० में हुआ। एक स्थान पर मैंने कुछेक भाषण दिये थे, उनमें वह नियमित रूप

से आता रहा। बाद में उसने अपनी लिखी हुई पुस्तक की एक प्रति भी मेरे पास भेजी।

उसने यह पुस्तक अपने आविष्कृत एक नये प्रकार के मकान बनाने के सम्बन्ध में लिखी थी—एक इतनी बड़ी बिल्डिंग जो कई मंजिल की हो और जिसमें कई कुटम्ब बस सके।

उन दिनों वह और मैं दोनों ही गन्दे मोहल्लों को उठा देने का मार्ग तलाश कर रहे थे। हमारा विश्वास था कि निर्धनता को रोका जा सकता है। हमारी यह भी धारणा थी कि संसार का सबसे बड़ा पाप यह है कि वह बच्चों को कूड़े और गन्दगी में पैदा होने दे।

गिलट का बाप भी अपने ढंग का एक आविष्कारक था। अवकाश के घण्टों में सदैव कुछ न कुछ खोज बीन करता रहता। वह विचार सदैव उसके मस्तिष्क में चक्कर लगाता रहता कि एक दिन वह कोई ऐसी चीज आविष्कृत करेगा जो आश्चर्य-जनक होगी और उसके भाग्य का निर्माण करने वाली होगी।

३६ वर्ष की अवस्था में उसका परिचय विलियम पेन्टर नाम के एक धनी आविष्कारक से हुआ। विलियम ने 'क्राउन सील' नाम के धातु के कार्कों जोकि बीयर तथा सोडावाटरों आदि की बोतलों में लगाये जाते हैं, का आविष्कारक किया था।

एक दिन विलियम पेन्टरने गिलट से कहा—'ऐसी किसी चीज का आविष्कार क्यों नहीं करते जिसे कि कोई मनुष्य जीवन भर उसे खरीदता रहे? एक आदमी को केवल एक चीज बेचने से

क्या फायदा । उसको ऐसी कोई चीज बेचो जिस का वह इस्तै-माल कर के फेंक दें ।

यह सुझाव ही गिलट के उस्तरे के आविष्कृत होने का मूल कारण था। हफ्तों तक गिलट सोचता रहा— किस प्रकार "नष्ट होने वाली आवश्यकता की वस्तु" का अविष्कार हो।

एक दिन प्रातकाल के समय गिलट अपनी हजामत बना रहा था। उसका उस्तरा भौथरा था। उसकी डाढ़ी सख्त थी। कष्ट के साथ वह चेहरे को छील रहा था। उसी समय अचानक उसके मस्तिष्क में यह विचार आया—क्यों न कोई बढ़िया किस्म का उस्तरा आविष्कृत किया जाय ?

क्यों न ऐसा उस्तरा निकाल दिया जाय जिस की धार को निकाल कर बदला जा सके ?

उसने अपना उस्तरा नीचे रख दिया और मुंह पर पुते हुए साबुन के भागों को पोछे बिना ही नये प्रकार के उस्तरे का ढांचा बनाना शुरु किया—ऐसा ढाँचा जिस में कि एक ब्लेड होता और एक उस ब्लेड के पकड़ने वाला।

आध घंटे में ही उस की योजना तैयार होगई। तब अपनी डाढ़ी बनाना समाप्त कर के वह दौड़ा दौड़ा एक लुहार के पास गया, और उससे कुछ इस्पात का फीता और एक रेती खरीद लाया। उसने अपना प्रथम उस्तरा स्वतः ही तैयार किया और पेटेन्ट करा लिया। यह सन् १८९५ ईस्वी की बात है। उसकी

महान सफलता का आरम्भ होने से पहले ही उसकी अवस्था ४० वर्ष की हो चुकी थी।

शुरु-शुरु में उस के उस्तरे को सफलता न मिली। नौ वर्ष तक इसकी खिल्ली उड़ाई जाती रही। उस के मित्र, जिन की संख्या कि बहुत काफी थी निर्दयता पूर्वक उस के अद्भुत उस्तरे की मजाक उड़ाते रहे।

गिलट और उसके भूखे उस्तरे को हंसी ६ वर्ष तक उड़ाई जाती रही—यह एक याद रखने वाली बात है। उन दिनों गिलट को जो भी साहूकार मिला, उनमें से प्रत्येक केवल चन्द चांदी के टुकड़ों के बदले में ही गिलट का हिस्सेदार बन सकता था।

सन् १८२१ ई० में गिलट को निकलसन नाम का एक उस्ताद कारीगर मिल गया। वह एक असाधारण चतुर पुरुष था। उसने गिलट के उस्तरे को बढ़िया रूप दे दिया और एक कम्पनी की स्थापना हो गई।

किन्तु सन् १९०२ तक एक भी उस्तरा न बिका। कोई इसे खरीदता ही न था। निराश होकर गिलट ने मुफ्त ही उस्तरे बांटने आरम्भ कर दिये।

एक उस्तरा उसने जॉन जौयस नाम के व्यापारी को भी दिया। जौयस ने इससे अपनी हजामत बनाई। यह उसे पसन्द आ गया। वह ३ लाख रुपये के हिस्से खरीदने को तैयार हो गया।

वह छोटी सी उस्तरे बनाने वाली कम्पनी अब थोड़े-थोड़े उस्तरे तो बेच सकी, किन्तु गिलट को अपना और अपने बाल-

बच्चों का भरण-पोषण इंगिलिस्तान और अमेरिका में कॉर्क बेच कर ही करना पड़ा।

सन् १६०४ ई० में ठीक प्रकार का विज्ञापन करने वाला मनुष्य इस कम्पनी में आ जुटा। वह कौन था, यह तो मैं नहीं जानता, किन्तु वह सफलता की जंजीर में आखरी कुन्डा था।

उस्तरे बिकने शुरू हो गये। हजारों की संख्या में गिलट के पास धन की वर्षा होने लगी। उसके पुराने मालिक जो धातु के काँकों का व्यापार करता था, ने डेढ़ लाख रुपये के हिस्से खरीद डाले। इस खरीदारी की प्रसन्नता उसे तब से अब तक बराबर रही है।

गिलट ने यह बड़ी बुद्धिमानी का काम किया कि अपने लिये काफी संख्या में हिस्से बचा छोड़े। इस प्रकार ४६ वर्ष की अवस्था में गिलट अपने स्वप्न को सत्य करने में सफल हुआ।

उसने एक "नष्ट होनेवाली आवश्यकता की वस्तु" का आविष्कार कर डाला था। उसने एक ऐसी चीज आविष्कृत कर दी थी जो खरीदारों को उसका स्थायी ग्राहक बनाने पर मजबूर करती थी।

आप कृपया देखिये कि आरम्भ से अन्त तक गिलट की सफलता "विचारों का एक तांता मात्र है।" पहले उसके मस्तिष्क में एक विचार आया और इसके पीछे उसने अपनी इच्छा शक्ति लगा दी।

आप यह कहोगे कि ४६ वर्ष की अवस्था तक वह असफल रहा, किन्तु उसके बाद कितने ही वर्षों से वह धन और यश दोनों को भोगता रहा है।

किंग सी. गिलट विचारों को सर्वप्रथम स्थान देता है और उसके विचार सदैव ही विशाल विचार होते हैं। उसके मस्तिष्क में एक नया विचार आया। उसने इस विचार को व्यवहारिक रूप दिया, और तदोपरान्त उसने यह 'व्यवहारिक रूप' सभ्य संसार के मनुष्यों को बेचा।

यही कारण है कि मेरे ख्याल में संसार का सबसे बड़ा विक्रेता किंग सी० गिलट है।

१४

ऐडवर्ड बौक

स्त्री-पत्रिका का सर्व प्रथम और श्रेष्ठ संपादक ऐडवर्ड बौक २) रु० प्रति सप्ताह कमाने वाला तथा एक अचार की दुकान की खिड़कियाँ साफ करने वाला अत्यन्त साधारण नौकर था। रोटी का गुजारा भी मुश्किल से ही होता था। किस प्रकार वह इतना महान् संपादक बन गया, यही बात हमें बौक का जीवन-चरित्र पढ़ने से पता लगता है। हमारे नवयुवक, विशेष कर साहित्यिक रुचि रखने वाले हमारे नवयुवक, ऐडवर्ड बौक की जीवनी से उत्साह तथा प्रोत्साहन प्राप्त करेंगे।

ऐडवर्ड बौक

चूंकि स्त्रियां दुकानों और बाजारों से संसार भर में प्रमुख खरीदार हैं, इसलिये यह बहुत आवश्यक है कि हमें मालूम रहे कि स्त्रियां क्या पसन्द करती हैं और क्या उनके विचारने का ढंग है।

इसीलिए हम एडवर्ड बौक की कहानी लिख रहे हैं—उस अमेरिका-वासी डच-नागरिकको जिसने स्त्रियोंकी मासिक पत्रिकाओं में सब से बड़ी मासिक-पत्रिका का निर्माण किया। इस पत्रिका का नाम "लेडीज होम जनरल" है। ३० वर्ष तक बौक इस विख्यात पत्रिका का सम्पादक रहा। जिस समय उसका सम्बन्ध इस पत्रिका से हुआ था इसकी प्रचार-संख्या केवल ४॥ लाख थी। सन् १९१९ में जब वह इस पत्रिका से अलग हुआ तो इसकी प्रचार संख्या २० लाख थी।

प्रति मास इस पत्रिका की मासिक आय ३० लाख रुपये थी, जो किसी भी प्रथम श्रेणी की मासिक पत्रिका की वार्षिक आय से भी अधिक है।

इसका मूल्य ५ आने प्रति था; इस प्रकार "लेडीज होम जनरल" की मासिक आय लगभग ३७ लाख रुपया थी।

रुपये पैसे की चर्चा मैंने इसलिए की है ताकि यदि कोई कूट नितिज्ञ और धन को ही सर्वोपरि समझने वाला व्यवसायी संयोग वश इस गाथा को पढ़ने का अवसर प्राप्त करे तो कम से कम कुछ मसाला उसे विचार करने के लिए मिल जाय।

यह मनुष्य बौक, जिसने अपना सम्पूर्ण जीवन स्त्री जाति का दृष्टिकोण समझने में लगा दिया था, एक सप्ताह में इतना धन कमा लेता था जितना कि न-सिखाये-जा-सकने-योग्य सख्त मिजाज व्यवसायी एक वर्ष में भी न कमा पाये।

एडवर्ड बौक के जीवन और उसकी शैली की पूरी कहानी किसी को भी मालूम न थी। व्यापार से अवकाश ग्रहण करने के पश्चात् बौक ने अभी हाल ही में जो अपनी आत्मकथा लिखी है, उसमे हमें उसका जीवन वृतान्त मालूम हुआ है।

एडवर्ड बौक का जन्म हालैंडमें हुआ था। व्यापार में घाटा हो जाने के कारण उसका पिता सन् १८७० ईस्वी में अमेरिका में जाकर बसा। उस समय एडवर्ड की अवस्था केवल सात वर्ष की थी। तब ऐडवर्ड अमेरिका की राष्ट्र भाषा अंग्रेजी का एक शब्द भी नहीं बोल सकता था। दूसरे लड़के 'डचो' कह कर उसे पुकारा करते और चिढ़ाया करते। यह चिढ़ाना तब तक चलता रहा जब तक कि ऐडवर्ड ने चार पांच लड़कों की मरम्मत कर दी यह प्रत्यक्ष था कि संसार के आगे बढ़ने के उसके पास कुछ भी साधन न थे। न उस का भाग्य साथ देता था। न उसके पास पैसा था न उस के मित्र थे। यहां तक कि वह यहां की भाषा तक न जानता था।

चूंकि उसके माता पिता निर्धन थे अतएव दस वर्ष की

अवस्था में ही उसे कमाना आरम्भ करना पड़ा । प्रति शाम को वह एक अत्तार की दुकान की खिड़कियां साफ करता और २ रुपया प्रतिसप्ताह पाता ।

इस के बाद वह अखबार बेचने का कार्य करने लगा और प्रति सप्ता लगभग १० रुपया कमाने लगा । शनिवारों को वह ट्राम गाड़ियों में सोडा-लेमनेड बेचता और लगभग १० रुपया ही और कमा लेता ।

अभी वह तेरह वर्ष का ही था कि उस के पिता का देहान्त होगया । उस ने पढ़ना छोड़ कर तार बांटने की नौकरी कर ली, जहां से उसे प्रति सप्ताह २५ रुपया मिलते । यह सब रुपये वह अपनी मां को लाकर दे देता ।

यद्यपि अभी वह केवल १३ वर्षीय एक छोकरा ही था, किन्तु फिर भी आत्म--शिक्षण की भावना उस के अंदर बड़ी प्रबलता से कार्य करती रहती थी । वह सुबह शाम इधर उधर के काम करके कुछ और कमा लेता, दोपहर का भोजन कम कर के कुछ वहां से बचा लेता, इधर उधर जाने का ट्राम और बस का किराया बचा लेता – पैदल चला आता । इस प्रकार पाई-पाई इकट्ठा कर के उस ने एक विश्व-कोष पुस्तक खरीद कर डाली ।

यह पुस्तक ही उस की शिक्षा थी । ज्ञान के प्रति तीव्र क्षुधा होने के कारण वह इस पुस्तक के एक २ पृष्ठ को कई-कई बार पढ़

गया। हर रात को, बहुत रात गये, उस की मां जबरदस्ती उस का पढ़ना बन्द करा के उसे सुलाती।

उसकी सब से अच्छी बात यह है कि वह प्रसिद्ध व्यक्तियों की जीवन गाथा बड़े प्रेम से पढ़ता। एक दिन उसके मस्तिष्क में एक अद्भुत साहसिक विचार आया—क्यों न मैं इन महा पुरुषों को पत्र लिखूं और देखूं कि यह लोग कुछ उत्तर भी देते हैं या नहीं।

उन महा पुरुषों ने उत्तर दिये। उस को टैनीसिन, लौंग-फैलो, विटियर तथा प्रेसीडेन्ट गारफील्ड के पत्र मिले। इन पत्रों से उसे बड़ा प्रोत्साहन मिला! इस से उसे यह अनुभूति हुई कि हालांकि मैं एक छोटा सा डच लड़का ही हूँ, किन्तु फिर भी मैं संसार के महान पुरुषों के सम्पर्क में हूं।

१८ वर्ष की अवस्था में उसके मस्तिष्क में फिर एक साहस-पूर्ण विचार आया – यह कि मैं इन लोगों के पास जाकर उन के व्यक्तिगत दर्शन करूं। अमेरिका के प्रेसीडेन्टसे मिलने के लिए वह गया और उसे यह देख कर बड़ा ही आश्चर्य हुआ कि प्रेसीडेन्ट महोदय एक सीधे-सादे दयालु वृद्ध सज्जन हैं। २५० मील की यात्रा कर के वह एमर्सन, लौंगफैलो, होम्स और फिलिप्स ब्रुकस से मिलने गया। उसने इन महा-पुरुषों के बारे में अपने 'विश्वकोष' में पढ़ा था, और वह अपने सामने बैठ कर उन को देखना चाहता था।

१६ वर्ष की अवस्था में वह जयगोल्ड नामक के एक धनी

सट्टेबाज का सेक्रेटरी बन गया, किन्तु केवल धन कमाने की ओर ही वह कभी भी विशेष उत्सुक न हुआ। जयगोल्ड ने उस को वचन दिया कि मैं तुम को मालदार बना दूंगा, किन्तु अडबर्ड त्यागपत्र देकर उससे अलग होगया और एक पत्र कार बन गया।

उस का मुख्य काम अब यही था कि वह दैनिक समाचार पत्रों के लिये बड़े-बड़े आदमियों से लेख प्राप्त करे। एक वर्ष तक यह कार्य करने के बाद उसे एक बात दिखाई दी – यह कि बहुत ही कम स्त्रियां अखबार पढ़ने का शौक रखती हैं।

उस के मन में प्रश्न पैदा हुआ, 'क्यों'? और इस 'क्यों' ने उसको ख्याति और धन दोनों से सराबोर कर दिया।

अब उसने इस बात का अध्ययन करना आरम्भ कर दिया कि स्त्रियां क्या क्या पसन्द करती हैं। उसे पता लगा कि स्त्री और पुरुष पसन्दगी के मामले में इतने ही भिन्न-भिन्न हैं जितने कि कुत्ता और बिल्ली उसे यह भी पता लगा कि एक साधारण पुरुष को स्त्री की ठीक पसन्दगी अथवा ना पसन्दगी के बारे में शायद ही कुछ पता हो।

उसने कितने ही समाचार पत्रों के संचालकों को अपने पत्र में "स्त्रियों का पृष्ठ" चालू करने को प्रेरित किया। यह सन् १८८३ ई० की बात है। यह एक बिल्कुल ही नया विचार था। इससे पहले ऐसा कभी नहीं हुआ था।

सन् १८८६ में उसकी भेंट साइरस कीर्टिस से हो गई।

कीर्टस ने उससे अपने पत्र "लेडीज होम जनरल" का सम्पादक बन जाने को कहा। अपने मित्रों के परामर्श के विरुद्ध भी उसने इस बात को स्वीकार कर लिया।

सम्पादक के रूप में उसने पहला काम यह किया कि अपने पाठकों से पत्र की उन्नति के लिये सुझाव मांगे और सर्वश्रेष्ठ सुझावों को पुरस्कार देने की घोषणा की। उसने "सीख कर सिखाने" के सिद्धान्त पर अमल किया। शायद वह सब से पहला सम्पादक था जो 'मैं सब कुछ जानता हूँ' सिद्धांत का मानने वाला नहीं था।

उसका उद्देश्य यह था—"जनता जैसा मांगती है उससे बढ़िया के प्राप्त करने की आशा करती है।

शीघ्र ही उसे पता लग गया कि स्त्री की मुख्य दिलचस्पी अपना 'घर' है। उसे यह भी पता लगा कि जिन स्त्रियों का व्यवहार पुरुषों की भांति होता है, वह केवल दिखाऊ है—यथार्थ में स्त्रियाँ पुरुषों के मुकाबिले में अधिक अपनत्व लिये हुये, अधिक सामाजिक भाव लिये हुये और अधिक आत्मनिहित होती हैं।

उसे मालूम हुआ कि एक स्त्री के दिलचस्पी के विषय क्या हुआ करते हैं खुद—उसका बनाव-सिंगार—समाज में उसका स्थान—उसके बच्चे—उसका पति—घर की देख भाल—कपड़े लत्ते और अन्य घरेलू सामान। ज्ञान आदि सम्बन्धी अभौतिक विषय, जिन में पुरुषों को दिलचस्पी हुआ करती है, उसको उपेक्षा की चीजें हैं। अपने आप को केन्द्र में स्थापित कर के स्त्री अपने छोटे से दायरे में सीमित रहना चाहती है।

सही हो या गलत, बौक की यही धारणा थी, और इसी धारणा ने उसे २० लाख स्त्रियों का नेता बना दिया। जीवित

पुरुषों में स्त्रियों के मध्य इतनी ख्याति प्राप्त करने वाला और कोई पुरुष नहीं हुआ। परिणाम को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि उसकी धारणायें ठीक थीं।

उसने अपनी पत्रिका में "हार्दिक वार्तालाप" शीर्षक के अन्तर्गत भावुकतामय विषयों पर कुछेक सीधे-सादे और स्पष्ट लेख प्रकाशित किये। युवती माताओं को परामर्श देने के लिए उसने योग्य से योग्य डाक्टरों से लेख लिखा कर प्रकाशित किये। 'लेडीज होम जनरल" की व्यक्तिगत सहायता और परामर्श द्वारा ६० हजार से अधिक बच्चों का पालन-पोषण हुआ।

उसने अपनी पत्रिका में एक 'प्रश्नोत्तरी' का स्तम्भ खोल डाला। देश के विभिन्न स्थानों पर उसने ३५ सम्पादक नौकर रक्खे, जो डाक द्वारा उसके प्रश्नों का उत्तर भेजा करते थे। और वर्ष भर में केवल इन्हीं सम्पादकों के पत्रों की संख्या दस लाख तक पहुंच जाती थी।

वह अपना विज्ञापन भी करता था। अपने विज्ञापन वह स्वयं ही बनाता था। विज्ञापन पर उसका व्यय १० लाख रुपये प्रति वर्ष का था।

उसने बढ़िया घर बनाने का ढंग भी लोगों को बताया। सुन्दर घरों के नक्शे भी बना-बना कर २०) रु० फी नक्शे के हिसाब से बेचने उसने शुरू कर दिये थे। तदोपरान्त उसने घर सजाने का तरीका भी बताना शुरू किया। उसने अपनी पत्रिका में प्रकाशित लेखों द्वारा "रुचि" का तात्पर्य अपनी पाठिकाओं को समझाया।

इससे भी अधिक यह कि उसने अपनी २० लाख पाठिकाओं को 'कला' से प्रेम करना सिखा दिया। उसने चुन चुन कर संसार के सर्वश्रेष्ठ ४० चित्रों का पुनर्प्रकाशन किया और ७

करोड़ चित्र अपनी पाठिकाओं में वितरित कर दिये।

यह बात नहीं है कि उसे सदैव सफलता ही मिली हो। एक बार उसने पैरिस-फैशन के प्रभुत्व को समाप्त करने की चेष्टा की, किन्तु वह बुरी तरह असफल हुआ। उसने 'बगुला के पंखों की बंडी' न पहनने के लिये स्त्रियों को प्रेरित किया, किन्तु उस की बात किसी ने भी स्वीकार न की। काफी नुकसान उठा कर उसने यह सबक सीखा कि "दिखावट" किसी न किसी रूप में संसार में अवश्य रहेगी।

संसार व्यापी प्रथम महायुद्ध में बौक ने अपनी २० लाख स्त्रियों को "मित्र राष्ट्रों" के पक्ष का बना दिया था उसके अन्दर उच्च रक्त होते हुए भी वह कभी भी निष्पक्ष नहीं हुआ। उसने अपनी सब स्त्रियों को काम पर लगा दिया—रुपया इकट्ठा करना तथा सैनिकों के आमोद-प्रमोद की वस्तुएं निर्मित करना। सन १९१७ ई० में वह स्वयं भी मोर्चे पर गया।

सन १९१९ ई० में उसने अवकाश ग्रहण कर लिया। उसका अटल-विश्वास है कि प्रत्येक मनुष्य को अपना जीवन तीन भागों में बाँट लेना चाहिये:—

(१) शिक्षा। (२) कर्म। (३) सेवा।

यही कारण है कि उसने ५६ वर्ष की अवस्था में ही अवकाश ग्रहण कर लिया। वह अपना शेष जीवन अवैतनिक कार्य का बिताना चाहता है। शेष जीवन काल में मनुष्य जाति के कष्टों को दूर करने में वह सहायक होना चाहता है।

उसका कहना है कि किसी भी मनुष्य को यह अधिक नहीं है कि अपनी मृत्यु के समय भी वह संसार को उतनी ही बुरी अवस्था में छोड़ जाय जितनी बुरी अवस्था कि उसने इस संसार की अपने जन्म के समय देखी थी।

समाप्त